दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

DIRECTORATE OF DISTANCE EDUCATION

जम्मू विश्वविद्यालय

UNIVERSITY OF JAMMU

जम्मू

JAMMU

पाठ्य सामग्री

STUDY MATERIAL

कला स्नातक–सत्र–IV

B.A. SEMESTER-IV

SESSION – 2022 ONWARDS

पाठ्यक्रम संख्या 401	इकाई संख्या–एक से पाँच
COURSE CODE: HI-401	**UNIT 1-V**
सत्र : चतुर्थ	आलेख संख्या : 1 से 14 तक
SEMESTER-IV	**LESSON NO: 1-14**

Dr. Hina S. Abrol

COURSE CO-ORDINATOR

इस पाठ्य सामग्री का रचना स्वत्व/प्रकाशनाधिकार

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू–180006 के पास सुरक्षित है।

http:/www.distanceeducation.in

Printed and published on behalf of the Directorate of Distance Education, University of Jammu, Jammu by the Director, DDE, University of Jammu, Jammu

'युगे–युगे क्रांति' नाटक के महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या।

1.0 रूपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 'युगे–युगे क्रांति' नाटक के महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या।

1.3 कठिन शब्द

1.4 संदर्भ–ग्रंथ/पुस्तकें

1.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप 'युगे–युगे क्रांति' नाटक के महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या से अवगत हो पाएँगे–

1.2 'युगे–युगे क्रांति' नाटक के महत्त्वपूर्ण गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या।

प्र॰1. सप्रसंग व्याख्या

1) **छी–छी, कैसी बातें करते हो! यह सब हुआ था तभी तो तुम्हारे घर आई हूँ। रही प्यार की बात, सो वह भी क्या जताने की चीज है? प्यार जताने का काम तो कोठे वालियां किया करती हैं। इसीलिए मर्द उनका मुँह देखते हैं, अपनी घरवाली का नहीं।**

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश युगे–युगे क्रांति नाटक से लिया गया है। इस नाटक के रचनाकार 'विष्णु प्रभाकर' जी हैं। इसमें नाटककार ने युग अनुसार परिवर्तनशील रीतियों और परिवर्तनकारी क्रांतिकारियों के क्रिया कलापों का वर्णन किया है। प्रस्तुत दृश्य 1875 ई॰ के आस पास, पति पत्नी कल्याण सिंह और रामकली के बीच का है। कल्याणसिंह अपनी पत्नी का मुँह देखना चाहता है, परन्तु वह मना करती है। कल्याणसिंह उससे कहता है कि वह उससे विवाह करके लाया। क्या, उसका इतना भी हक नहीं और वह उसे ताना मारता है कि वह उसे प्यार नहीं करती। इसी का चित्रण इस गद्यांश में किया गया है।

व्याख्या– लेखक कहता है कि कल्याण सिंह की बात सुनकर रामकली कहती है कि कैसी बातें करते हो। शादी की है, तभी तो तुम्हें अपने पास आने दे रही हूँ। रही बात प्यार की, प्यार मैं, तो मैं बहुत करती हूँ, पर मैं जतलाती नहीं। क्योंकि प्यार जतलाने का काम तो कोठेवालियों का होता है, घरवाली का नहीं। वो ही झूठा प्यार दिखा कर मर्दों को रिझाती हैं और मर्द उनका मुँह देखते हैं। इस लिए यह काम कोठेवालियों का होता है, घरवाली का नहीं।

2) **ना–ना, ऐसी बात मत कहो, मुझे डर लगता है। मैं हाथ जोड़ती हूँ, उस साधू के पास मत जाया करो। भला कोई बात है कि मुझे छूने से तुम जान जाते हो कि मैं खूबसूरत हूँ। क्या उस योगी ने तुम्हें कोई मन्तर सिखा दिया?**

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश नाटककार विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित नाटक युगे–युगे क्रांति से लिया गया है। इस में पति–पत्नी के रात्रि मिलन का चित्रण करके सन् 1875 में पर्दा प्रथा के स्वरूप का वर्णन किया गया है। स्थिति यह है कि पति, दिन के उजाले में तो क्या रात को दिए की रोशनी में भी पत्नी का मुँह नहीं देख सकता था। परन्तु पति कल्याण सिंह इस पर्दा प्रथा को तोड़ना चाहता है। इसलिए वह अपनी पत्नी को मुँह दिखाने के लिए उकसाता है।

व्याख्या– लेखक कहता है कि रामकली कुल रीति के कारण कल्याण सिंह को उजाले में अपना मुँह दिखाने से मना करती है। वह पति की बातें सुनकर घबरा जाती है और उससे कहती है कि मैं तुमसे विनती करती हूँ, ऐसी बातें मत किया करो। मुझे बहुत डर लगता है। रामकली, कल्याण सिंह से कहती है कि उस साधु (स्वामी दयानन्द) के पास मत जाया करो। उसने ही तुम्हें कोई जादू–मन्तर सिखा दिया है। वरना छूने से कोई कैसे जान सकता है उसकी पत्नी इतनी सुन्दर है।

3) **आप मेरे हाथ–पांव तोड़ सकते हैं लेकिन मेरी प्रतिज्ञा नहीं तोड़ सकते। मेरी जान ले सकते हैं लेकिन मुझे उससे विवाह करने से नहीं रोक सकते। मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके ही रहूँगा।**

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश 'युगे–युगे क्रांति' नाटक में से लिया गया है। इस नाटक में विष्णु प्रभाकर ने यह सिद्धान्त प्रतिपादित किया है कि प्रत्येक युग में कुछ ऐसे लोग होते हैं समाज में फैली कुरीतियों को मिटाने के लिए परिवार और समाज से विद्रोह करते हैं। जब प्यारे लाल कलावती (विधवा) से विवाह करने का संकल्प कर लेता है। कल्याण सिंह उसे मना करते हैं लेकिन वह नहीं सुनता। वह गुस्से में प्यारे लाल को कहते हैं कि तुम्हारे ऐसा करने पर मैं तुम्हारे हाथ–पैर तोड़ दूंगा। इस पर प्यारे लाल कहता है–

व्याख्या– प्यारे लाल कल्याण सिंह से कहता है कि आप मेरे हाथ–पैर तोड़ सकते हैं लेकिन मैंने जो विधवा से विवाह का प्रण लिया है उसे आप नहीं तोड़ सकते। आप मेरी जान तक ले सकते हैं, लेकिन मुझे कलावती से विवाह करने से नहीं रोक सकते। चाहे जो हो मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके ही रहूँगा।

4) **इस युग में नारी को भी पुरुष के कंधे से कंधा भिड़ाकर भाग लेने का अधिकार है। किसी समय राजपूत लोग लड़ने के लिए युद्ध में जाते थे और उनकी नारियां उनके हार जाने पर सती होकर जल जाती थीं। आखिर वे भी मरती ही तो थीं। मैं कहती हूँ कि घर के अन्दर बैठकर मरने से यह बेहतर है कि हम भी पुरुषों की तरह कष्टों का सामना करें और तब यदि मौत आए तो हँसते–हँसते उसे गले से लगा लें।**

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश विष्णु प्रभाकर जी द्वारा रचित नाटक 'युगे–युगे क्रांति' से लिया गया है। इस नाटक में नाटककार प्रभाकर जी ने यह स्पष्ट किया है जैसे–जैसे युग बदलता है तो हर युग के साथ–साथ समस्या भी बदल जाती है। इसमें प्रभाकर जी ने गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के समय का चित्रण किया है। प्यारे लाल की बेटी शारदा गांधी जी के इस आंदोलन में भाग लेती है। वह नारी को जागृत करती हुई कहती है कि हमें भी घर की चार दीवारी से बाहर निकलना है। रूढ़ियों को तोड़ना है।

व्याख्या– शारदा नारी को जागरूक करती हुई कहती हैं कि गांधी जी ने जो असहयोग आन्दोलन छेड़ा है। हमें उसमें भाग लेना है। हमें पुरुष के कंधे से कंधा मिला कर अपने अधिकारों के लिए लड़ना है। वो समय अब बीत गया, जब नारियां पति के युद्ध में हारने पर सती हो जाती थी। मरती तो वह भी थी, लेकिन हमें घर में बैठकर नहीं अपितु पुरुषों के समान अर्थात् उससे बराबरी करते हुए कष्टों का सामना करना है। चाहें इससे हमें मौत ही क्यूँ न मिले हमें उसे भी हंसते–हंसते गले लगाना है। अर्थात् स्वतंत्रता के संघर्ष में पुरुषों के मिलकर चलना है।

5) **जो नारी जेल में रह चुकी होती हैं, तुम्हारी दकियानूसी समाज उसे दुराचारिणी समझता है। लेकिन मैं उस दुराचारिणी को अपने दिल में स्थान दूँगा।**

प्रसंग– प्रस्तुत गद्यांश 'युगे–युगे क्रांति' नाटक से लिया गया है। इसके लेखक विष्णु प्रभाकर जी हैं। इसमें गांधी जी द्वारा चलाये गए आन्दोलन के पश्चात् जब लोगों को जेलों में डाला गया। तब शारदा को भी जेल जाना पड़ता है। तो उसके पिता उससे नाराज़ हैं। वह उसे घर वापिस आने के लिए कहते हैं तो वह मना कर देती है। उसका मित्र विमल उसके जेल जाने के साहस की प्रशंसा करता है।

व्याख्या– विमल, शारदा को कहता है कि हमारा समाज बहुत दकियानुसी है। वह स्त्री और पुरुष में भेदभाव करता है। वह जेल में रही हुई नारी को दुराचारिणी समझता है विमल कहता है कि चाहे समाज तुम्हें जो कुछ भी कहें लेकिन मैं तुम जैसी दुराचिरणी से विवाह करूंगा, तुम्हें अपने ह्रदय में जगह दूंगा। अर्थात् अपना बनाऊंगा।

6) **वही तो मैं कहता हूँ। जैनेट को यदि शुद्ध करके जाहवी नाम दे दिया जाएगा तो क्या इसका कुछ बदल जाएगा? नाम बदल जाने से गुण और दोष नहीं बदल जाते। बदल सकते तो आज हर बुरी चीज के अच्छे नाम रख दिए जाते। नहीं माता जी, मैं इस ढोंग में विश्वास नहीं करता। इस या उस धर्म में जाने से किसी का स्वभाव नहीं बदल जाता। मेरा निश्चय है, जैनेट धर्म परिवर्तन नहीं करेगी।**

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित नाटक युगे–युगे क्रांति से लिया गया है। इसमें प्रदीप और जैनेट कोर्ट में जाकर विवाह कर लेते हैं और समाज में नव क्रांति लाते हैं। प्रदीप के पिता विमल चाहते हैं कि जैनेट धर्म परिवर्तन कर अपना नाम बदल ले। परन्तु प्रदीप इसका विरोध करता है। वह अपनी माँ से कहता है!

व्याख्या– प्रदीप शारदा से कहता है कि माँ अगर जैनेट का नाम बदलकर जाह्नवी कर देने से उसका क्या बदल जाएगा। उसके गुण और दोष तो वैसे ही रहेंगे। शुद्धिकरण से कुछ भी नहीं बदलता। अगर नाम बदलने से कुछ होता है हर बुरी चीज़ का अच्छा नाम रख दिया जाता। माँ में इस ढोंग में विश्वास नहीं करता। मैंने यह निश्चय किया है कि जैनेट अपना नाम नहीं बदलेगी। न ही अपना धर्म परिवर्तन करेगी।

7) **जिसे तुम भलाई कहती हो, वही तुम्हारा स्वार्थ है। तुम सब कुछ अपनी ही दृष्टि से देखना, सुनना और करना चाहती हो। तुम चाहती हो कि वही मूल्य समाज में मान्य हों जिनको तुमने जिया है।**

प्रसंग– प्रस्तुत अवतरण विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित नाटक युगे–युगे क्रांति से लिया गया है। इसमें जब प्रदीप और जैनेट को यह पता चलता है कि उनकी बेटी अन्विता किसी स्वीड चित्रकार से शादी कर रही है तो वह आश्चर्यचकित हो जाते हैं क्योंकि अन्विता पहले दीपक नाम के लड़के से प्रेम करती थी। वे दोनों उसकी इस हरकत को गैर जिम्मेदार और मूल्यहीन समझते हैं। वे इस बात का जिक्र अपने बेटे अनिरूद्ध से करते हैं तो वह इस बात को बुरा नहीं मानता। उसका मानना है जिस व्यक्ति से वह प्यार करती है उससे विवाह करने में क्या बुराई है। वह दीपक न होकर स्वीड चित्रकार है। जैनेट उसे समझाती है। इस पर अनिरूद्ध कहता है!

व्याख्या– अनिरूद्ध जैनेट से कहता है कि माँ जिसे आप भलाई कह रही हैं, उसमें आपका अपना स्वार्थ छिपा हुआ दिखाई देता है। आपकी पीढ़ी सब कुछ अपने अनुसार देखना चाहती है। अपनी मान्यताओं और मूल्यों को आधुनिक पीढ़ी पर थोपना चाहती है। वह कहता है कि माँ तुम उन्हीं मूल्यों को, मान्यताओं मानती हो, जो तुमने स्वयं जिया है।

2.3 कठिन शब्द

1.परिवर्तनशील

2.रिझाती

3.उकसाता

4.प्रतिज्ञा

5.जागृत

6.दकियानुसी

7.दुराचारिणी

8.शुद्धिकरण

2.4 संदर्भ–ग्रंथ/पुस्तकें

1. युगे–युगे क्रांति – विष्णु प्रभाकर

2. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक : समस्याएँ और समाधान – दिनेशचन्द्र वर्मा

3. हिंदी नाटक – डॉ. बच्चन सिंह

4. हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष – गिरीश रस्तोगी

डॉ॰ अनुपमा शर्मा
सह आचार्य, राजकीय महिला
महाविद्यालय परेड़, जम्मू

विष्णु प्रभाकर का सामान्य परिचय

2.0 रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 विष्णु प्रभाकर का सामान्य परिचय

2.3 सारांश

2.4 कठिन शब्द

2.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

2.6 संदर्भ–ग्रंथ/पुस्तकें

2.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप विष्णु प्रभाकर के जीवन तथा साहित्य से अवगत हो पाएँगे–

2.2 नाटककार विष्णु प्रभाकर का सामान्य परिचय

हिन्दी लेखक व साहित्यकार विष्णु प्रभाकर जी का जन्म 21 जून, सन् 1912 को उत्तरप्रदेश के मुजफ्फर नगर जिले में मीरनपुरग्राम में हुआ था। यह हिन्दी भाषा व साहित्य के प्रमुख कथाकार व उपन्यासकार माने जाते हैं। इन्हें इनके एक अन्य नाम 'विष्णु दयाल' से भी जाना जाता है। इनके पिता का नाम दुर्गा प्रसाद था; जो धार्मिक विचार धारा वाले व्यक्तित्व के धनी थे। प्रभाकर जी की माता का नाम महादेवी था। वह पढ़ी–लिखी महिला थी, जिन्होंने अपने समय में पर्दा प्रथा का घोर विरोध किया था। प्रभाकर जी की पत्नी का नाम सुशीला था। इनका देहांत 11 अप्रैल 2009 को हुआ।

शिक्षा– इनकी आरंभिक शिक्षा मीरपुर में हुई थी। सन् 1929 में चंदूलाल एंग्लो–वैदिक हाई स्कूल, हिसार से मैट्रिक की परीक्षा पास की। इसके उपरांत नौकरी करते हुए पंजाब विश्वविद्यालय से 'भूषण', 'प्राज्ञ' 'विशारद' और 'प्रभाकर' आदि की हिन्दी–संस्कृत परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण की। प्रभाकर जी ने पंजाब विश्वविद्यालय से ही बी॰ए॰ की डिग्री भी प्राप्त की।

व्यवसाय– प्रभाकर जी के घर की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। यही कारण था कि इन्हें कई कठिनाईयों और समस्याओं का सामना करना पड़ा। घर की परेशानियों और जिम्मेदारियों का बोझ उठाते हुए यह मजबूत व्यक्तित्व के मालिक बन गए। इन्हीं जिम्मेदारियों के कारण इन्होंने चतुर्थ श्रेणी में एक

सरकारी नौकरी की, जिसका इन्हें मात्र 18 रूपये प्रतिमाह वेतन मिलता था। यह नौकरी के साथ–साथ लेखन कार्य भी करते रहे। इन्होंने कुछ समय तक आकाशवाणी में भी उच्च पद पर कार्य किया। अपने प्रयासों और हिम्मत के कारण ही इन्होंने उच्च–शिक्षा प्राप्त की तथा घर–परिवार की जिम्मेदारियों को निभाय।

विवाह– 26 वर्ष की आयु में हरिद्वार की सुशीला के साथ इनका विवाह हुआ। इनकी चार संतानें थी। अनीता, अतुल, अमित, अर्चना।

व्यक्तित्व– यह गाँधीवादी व आदर्शवादी स्वभाव के थे। यह 'मानवतावादी' आदर्श के बिना जीवित नहीं रह सकते थे। 'प्रभाकर' जी स्वयं कहते हैं– कि मनुष्य में जो कुछ दिखाई देता है केवल वही नहीं है, इसके अतिरिक्त वह कुछ और ही है, बल्कि वह और कुछ से अधिक है।

वह कहते थे– आर्दश और यर्थाथ का संबंध है। समन्वय मुझे प्रिय है। 'मानवता' मेरा लक्ष्य है। वह सदैव खादी के वस्त्र पहनते थे। वे साहित्यकार कम और नेता ज्यादा लगते थे।

स्वभाव– विष्णु प्रभाकर जी स्वभाव से अत्यन्त सज्जन और शांत हैं। गंभीरता उनके स्वभाव का एक गुण है। 'एकांत' इन्हें अधिक प्रिय है।

रचना संसार– प्रभाकर जी को साहित्य के प्रति बचपन से ही अनुराग रहा है। सन् 1926 में बालसखा में पत्र लिखें। सन् 1934 से निरन्तर लेखन कार्य रहा। यह पढ़ने में रुचि रखते थे। इसलिए उन्होंने 'चन्द्रकांता', 'चन्द्रकांता संतति' से लेकर प्रेमचन्द, प्रसाद, रविंद्रनाथ, शरत चंद्र, बंकिम चंद्र चटर्जी को पढ़ा। 'शरतचन्द्र' ने इन्हें अधिक प्रभावित किया।

रचनाएँ– इन्होंने अनेक रचनाएँ लिखी। परन्तु उपन्यास, नाटक व अन्य विद्याओं में उन्होंने श्रेष्ठ कार्य किया।

उपन्यास– ढलती रात, स्वप्नमयी, अर्धनारीश्वर, निशिकांत, तट के बंधन, दर्पण का व्यक्ति आदि।

कहानी संग्रह– इनकी कहानियों के संकलन को सुविधा के लिए आठ खंडों में विभाजित किया गया है। हर खण्ड का नाम इनकी एक कहानी के नाम पर रखा गया है।

पहला खण्ड – मुख्बी

दूसरा खण्ड – आश्रिता

तीसरा खण्ड – अभाव

चौथा खण्ड – मेरा वतन

पाँचवाँ खण्ड – एक और कुंती

छठा खण्ड – धरती अब भी घूम रही है।

सातवाँ खण्ड – पुल टूटने से पहले

आठवाँ खण्ड – जिंदगी एक रिहर्सल

एकांकी– विष्णु प्रभाकर फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित थे। सन् 1939 में यह एकांकी लिखने लगे। इनके अधिकतर एकांकी सामाजिक हैं। मैं भी मानव हूँ, अशोक, पाप, बंधन मुक्त, रक्त चंदन, देवताओं की घाटी, वीर पूजा, नया समाज, प्रतिशोध।

नाटक– विष्णु प्रभाकर जी हिन्दी साहित्य में नाटककार के रूप में प्रसिद्ध रहे थे। सन् 1951 से नाटक की रचना कर रहे हैं। इनके प्रसिद्ध नाटक हैं– डॉक्टर, बिंदी, अब और नहीं, सत्ता के आर–पार, गांधार की भिक्षुणी, नव प्रभात, केरल का क्रांतिकारी, टूटते परिवेश, युगे–युगे क्रांति, श्वेत कमल कुहासा और किरण।

आत्मकथा– पंखहीन (प्रथम खण्ड)

मुक्त गगन में (द्वितीय खएड)

पंछी उड़ गया (तृतीय खण्ड)

यात्रा–वृत्त– ज्योति पुंज हिमालय, हँसते निर्झर दहकती भट्ठी, हमसफर मिलते रहे।

निबंध संग्रह– जन, समाज और संस्कृति

जीवनी– विष्णु प्रभाकर जी ने शरत चन्द्र पर 'आवारा मसीहा' नामक जीवनी लिखी। जो 1974 में . प्रकाशित हुई। इसे लिखने में 14 वर्ष लगे। इसके तीन भाग हैं– दिशांत, दिशा की खोज, दिशा हारा। यह इनकी ऐसी रचना है जिसके लिए इन्हें भारतीय साहित्य में हमेशा याद किया जाएगा।

पुरस्कार–उपाधि– भारत सरकार ने इन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया। इनके उपन्यास 'अर्धनारीश्वर' के लिए भारतीय ज्ञान पीठ का 'मूर्तिदेवी' सम्मान, 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार', 'पाब्लो नेरूदा सम्मान' और शलाका सम्मान प्रदान किए गये।

भाषा शैली– विष्णु जी की भाषा सरल व सहज खड़ी बोली है। भाषा गतिशील तथा प्रभावशाली है। इनकी रचनाओं में हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू और अंग्रेज़ी के शब्द भी मिलते हैं। शैली सरल और रोचकतापूर्ण है। इनकी भाषा में ओजगुण है तथा प्रभावशाली है।

2.3 सारांश

अन्ततः हम कह सकते हैं कि विष्णु प्रभाकर जी ने अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। यह साहित्य में भारतीय वाग्मिता और अस्मिता को व्यंजित करने के लिए प्रसिद्ध रहे हैं। इन्होंने

साहित्य की सभी विधाओं में अपना योगदान दिया। विष्णु जी जीवन पर्यन्त साहित्य साधना में लीन रहे। यह एक बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार थे।

2.4 कठिन शब्द

1.आदर्शवादी 2.मानवतावादी 3.एकांत 4. अर्धनारीश्वर 5. रोचकता 6. ओजगुण 7. वाग्मिता 8. बहुमुखी प्रतिभा।

2.5 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न 1. नाटककार विष्णु प्रभाकर का सामान्य परिचय दीजिए।

उतर ——————————————————————

————————————————————————

————————————————————————

————————————————————————

2.6 संदर्भ–ग्रंथ/पुस्तकें

2. युगे–युगे क्रांति — विष्णु प्रभाकर

2. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक : समस्याएँ और समाधान — दिनेशचन्द्र वर्मा

3. हिंदी नाटक — डॉ. बच्चन सिंह

4. हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष — गिरीश रस्तोगी

डॉ॰ अनुपमा शर्मा
सह आचार्य, राजकीय महिला
महाविद्यालय परेड़, जम्मू

B.A. HINDI	UNIT-I	Lesson No. 3
COURSE CODE: HI-401		B.A. Sem-IV

युगे–युगे क्रांति नाटक की तात्विक आलोचना

3.0 रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 युगे–युगे क्रांति नाटक की तात्विक आलोचना

3.3 नाटक में चित्रित समस्याएँ

3.4 सारांश

3.5 कठिन शब्द

3.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

3.7 संदर्भ–ग्रंथ/पुस्तकें

3.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप तत्व के आधार पर 'युगे–युगे क्रांति' नाटक की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

3.2 युगे–युगे क्रांति नाटक की तात्विक आलोचना कीजिए।

'युगे–युगे क्रांति' के रचनाकार श्री विष्णु प्रभाकर जी है। इस नाटक में लेखक में युगीन परिस्थितियों का चित्रण किया है। इस नाटक में विष्णु जी ने यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि प्रत्येक युग में रूढ़ियों और कुरीतियों के विरूद्ध कुछ जागरूक लोग विद्रोह करते हैं। प्रत्येक युग में परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ–साथ मूल्यों और रीति रिवाजों में परिवर्तन होता रहता है। बुजुर्ग पीढ़ी मूल्यों को स्थिर रखने की जिद्ध करती है, जबकि युवा पीढ़ी विद्रोही होती है और मूल्यों के बदलने के लिए संघर्ष करती है, जिसे बुर्जुग पीढ़ी के लोगों के संस्कारों, आचरण के मूल्यों, रीति रिवाजों के विद्रोही होते हैं और उन्हें दक्यिानूसी, रूढ़िवादी, प्रगति विरोधी समझते हैं। जबकि पुरानी पीढ़ी, नयी पीढ़ी को प्रतिक्रियावादी, मर्यादाहीन, सामाजिक नियमों का उल्लंघन करने वाली मानती है। इसी का चित्रण इस नाटक में हुआ है। नाटकीय तत्वों के आधारा पर प्रस्तुत नाटक की आलोचना निम्नांकित रूप में की जा सकती है–

1) **कथावस्तु अथवा कथानक–** कथावस्तु नाटक का मूल आधार है। यह नाटक का प्राण तत्व भी माना जाता है। कथावस्तु में कार्य, समय और स्थान की एकता का होना भी आवश्यक माना गया है। प्रस्तुत नाटक में लेखक ने युगीन सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण किया है। इसमें नाटककार ने 1875 ई०, 1920–21 ई०, 1942 ई० और अति आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करने वाले पाँच युगों के माध्यम से क्रांति की खोज करने का प्रयत्न किया है।

पहली क्रांति सन् 1875 के आस–पास की है। उस समय पति द्वारा पत्नी का मुख देखना पाप माना जाता था। कल्याण सिंह स्वामी दयानन्द जी से प्रभावित हैं। वह अपनी पत्नी रामकली का मुख देखना चाहता है परन्तु उसकी पत्नी उसे कुल की मर्यादा का उल्लंघन मानती है और उसे अपना मुँह दिखाने से मना कर देती है। वह अपनी पत्नी रामकली का मुख देखना पाप नहीं मानता। वह घर परिवार में स्त्रियों के पर्दे के रिवाज़ के विरूद्ध क्रांति करता है और अपनी पत्नी से पर्दा उठवा लेता है। जिसके कारण कल्याण सिंह को अपने पिता के हाथों पिटना पड़ा।

दूसरी क्रांति सन् 1901 में हुई दिखाई गई है। जिसमें कल्याण सिंह का पुत्र प्यारे लाल अनमेल विवाह और बाल विवाह का विरोध करता है। वह विधवा विवाह का समर्थन करता है और विधवा के पुनर्विवाह के पक्ष में है और अपने पिता का विरोध करके विधवा से आर्य समाज मन्दिर में विवाह कर लेता है।

तीसरी क्रांति 1920–21 में प्यारे लाल की पुत्री शारदा करती है। वह गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन से प्रभावित है। वह स्त्रियों को बराबरी का हक दिलाने के पक्ष में। वह प्यारे लाल का विरोध करके अपनी इच्छा से विमल से विवाह कर लेती है।

चौथी क्रांति 1942 ई० में विमल और शारदा का पुत्र प्रदीप करता है। वह जैनेट से कोर्ट में जाकर अन्तधार्मिक विवाह कर लेता है। प्रदीप के माता–पिता जैनेट को धर्म–परिवर्तन करने के लिए कहते हैं तो वह इसका विरोध करता है। दूसरी तरफ प्रदीप की बहन सुरेखा भी इन्हीं विचारों की पक्षधर है। वह भी इन रूढिवादी विचारों, मूल्यों आदि का विरोध करती है और मानवता को महत्त्व देता है।

पाँचवीं क्रांति आधुनिक युग में प्रदीप और जैनेट की संतानें करती हैं। वे विवाह को बंधन मानते हैं और प्रेम को मुक्ति। अन्ततः हम कह सकते हैं कि नाटक का आरम्भ पति–पत्नी में भी पर्दे की स्थिति से होता है और अन्त विवाह हीन मौन सम्बन्धों की स्वीकृति पर।

2) **पात्र और चरित्र–चित्रण–** नाटक में कुल 22 पात्र हैं। सभी पात्र मध्यवर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। संस्कारों से भी यह पात्र मध्यवर्गीय लगते हैं। लेखक ने इस नाटक के माध्यम से बताने का प्रयत्न किया है कि युवास्था में जो पात्र क्रांति लाने का प्रयत्न करते हैं, परिवार से विद्रोह करते हैं, वही वृद्धावस्था में समझौतावादी और परम्परावादी बन कर अपनी संतान की क्रांति को नहीं स्वीकार करते हैं। उनके मार्ग में अवरोध पैदा करते हैं दिखाई देते हैं। चाहे वह कल्याण सिंह

है, चाहे प्यारे लाल, चाहे शारदा, विमल, प्रदीप या जैनेट सभी पात्र समय के साथ परम्परावादी बन जाते हैं।

3) **कथोपकथन/संवाद योजना–** पात्रों की परस्पर बातचीत संवाद या कथोपकथन कहलाती है। नाटक की संवाद योजना सरल, सरस होनी चाहिए। संवाद छोटे, तीखे और शृंखलाबद्ध और पात्रानुकूल होने चाहिए। युगे–युगे क्रांति नाटक के संवाद कहीं तो बहुत छोटे हैं, कहीं भाव, विषय और विचार की गति के अनुसार लम्बें भी हो गए हैं। नाटक के संवाद पात्रों की मनः स्थिति और उनके चरित्र को भी उजागर करते हैं, उनकी समस्या को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं। संवादों में कहीं–कहीं व्यंग्य और हास्य का पुट भी दिखाई देता है तो वही गुस्सा और आक्रोश भी है। नाटक की संवाद योजना सराहनीय है।

उदारणार्थ–

जैनेट : जरा रूको, इतने उतावले मत बनो।

शारदा : (प्रार्थना के स्वर में) जैनेट बेटी, तुम्हीं इसे समझाओ। तुम तो इस बात को समझती हो।

जैनेट : मैं सब समझती हूँ माताजी! लेकिन यदि आप जैसी मैं हूँ वैसी ही को स्वीकार नहीं करती तो मैं भी इनको यहाँ रहने के लिए कैसे कह सकती हूँ।

प्रदीप : चलो, जैनेट, अब चलें। नमस्ते।

4) **देशकाल और वातावरण–** देशकाल और वातावरण भी नाटक का महत्त्वपूर्ण तत्व होता है। नाटक में समय और स्थान ही वेशभूषा, परिस्थितियाँ, आचार–व्यवहार आदि का चित्रण करना चाहिए। विष्णु जी ने नाटक में देशकाल की समस्याओं के अनुसार ही वातावरण का निर्माण किया। इसी के फलस्वरूप ही वह सामाजिक समस्याओं को प्रस्तुत करने में सफल हो सके। जैसे– पर्दा प्रथा, विधवा विवाह, अन्तधार्मिक विवाह, स्त्रियों की बराबरी दिलाना आदि।

5) **भाषा–शैली–** नाटक की भाषा ऐसी होनी चाहिए जो सामान्य दर्शक आसानी से समझ सके। नाटक की भाषा पात्रानुकूल होनी चाहिए। प्रस्तुत नाटक की भाषा शैली युगीन घटनाओं, पात्रों की मानसिक स्थिति और अवस्था अनुसार परिवर्तनशील रही है। इसमें लेखक ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। नाटक की भाषा सरल, सरस, सहज और बोधगम्य है। इसमें लेखक ने मुहावरों का तदभव तत्सम शब्दावली का भी प्रयोग किया है।

6) **उद्देश्य–** प्रत्येक रचना का कोई–न–कोई उद्देश्य अवश्य होता है। नाटक दर्शकों के साथ सीधे सम्पर्क तथा संवाद स्थापित करता है। इसीलिए यह सर्वाधिक लोकप्रिय तथा प्रभावशाली विद्या है। नाटककार समाज की समस्याओं और कुरीतियों पर व्यंग्य करके समाज में सुधार का प्रयत्न

करता है। विष्णु जी ने भी इस नाटक के माध्यम से समाज में क्रांति की खोज करती हुई कई पीढ़ियों का वर्णन किया है और उनके जीवन मूल्यों पर प्रकाश डाला है।

7) **अभिनेयता और संकलनत्रय–** सम्पूर्ण नाटक 1875, 1901, 1920–21, 1942 और अति आधुनिक पाँच खण्डों में विभक्त है। ऐसी स्थिति में कार्य की एकता, समय की एकता और स्थान की एकता को बनाए रखना आसान नहीं परन्तु विष्णु प्रभाकर जी ने इस एकता अर्थात् संकलनत्रय को बनाए रखा। उन्होंने मंच पर हर एक युग के नर–नारी को प्रस्तुत करते हुए उनकी ईद–गिर्द की घटनाओं, वातावरण आदि को दर्शाया है।

3.4 सारांश

नाटक अभिनेयता की दृष्टि से भी सफल है, सार्थक है। इसे मंच पर प्रस्तुत करने में अधिक साज सज्जा की आवश्यकता नहीं। मंच सज्जा भी सुगम है। अतः इस दृष्टि से भी नाटक सफल है। अन्ततः हम यह कह सकते हैं कि विष्णु प्रभाकर जी द्वारा रचित नाटक युगे–युगे क्रांति तत्त्वों के आधार पर एक सफल रचना है।

3.5 कठिन शब्द

1.रूढ़िवादी

2. प्रतिक्रियावादी

3. मर्यादाहीन

4.आक्रोश

5. बोधगम्य

6. संकलनत्रय

7. सुगम।

3.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्रश्न1 तत्वों के आधार पर युगे–युगे क्रांति नाटक की आलोचना कीजिए।

उतर ————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

3.7 संदर्भ–ग्रंथ/पुस्तकें

1.युगे–युगे क्रांति – विष्णु प्रभाकर

2. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक : समस्याएँ और समाधान – दिनेशचन्द्र वर्मा

3. हिंदी नाटक – डॉ. बच्चन सिंह

4. हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष – गिरीश रस्तोगी

डॉ॰ अनुपमा शर्मा
सह आचार्य, राजकीय महिला
महाविद्यालय परेड़, जम्मू

'युगे–युगे क्रांति' नाटक में चित्रित समस्याएँ

रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 नाटक में सामाजिक क्रांति का अर्थ एवं स्वरूप

4.4 नाटक में चित्रित समस्याएँ

4.4.1 पर्दा प्रथा

4.4.2 विधवा विवाह

4.4.3 अंतर्जातीय/अंतर्धर्मीय विवाह

4.4.4 मूल्य परिवर्तन की समस्या

4.4.5 दहेज की समस्या

4.5 सारांश

4.6 कठिन शब्द

4.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

4.8 संदर्भ–ग्रंथ/पुस्तकें

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप निम्न बातों को समझ पाएँगे–

- सामाजिक क्रांति की निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया को जान सकेंगे
- पुरानी पीढ़ी और नयी पीढ़ी के संघर्ष को जान सकेंगे
- मूल्यों में होते बदवाव को समझ सकेंगे
- नाटक में चित्रित समस्याओं को समझ सकेंगे

- वैवाहिक संबंधों में पीढ़ियों के बदलाव को देख पाएँगे

4.2 प्रस्तावना

सन् 1969 में लिखित 'युगे–युगे क्रांति' श्री विष्णु प्रभाकर का एक चर्चित नाटक है। इसमें आधुनिक जीवन के तनाव एवं सामाजिक चेतना का स्वर गूँज उठा है। प्रस्तुत नाटक द्वारा विष्णु प्रभाकर ने भारतीय समाज के वैवाहिक संबंधों में पीढ़ियों के बदलाव के अनुरूप होने वाले परिवर्तन की ओर इशारा किया है। यह साबित करने में वे सफल हुए हैं कि काल की गति के कारण एक युग के क्रांतिकारी दूसरे युग में प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं। युगे–युगे क्रांति में पाँच पीढ़ियों का चित्रण है। पहली पीढ़ी कल्याण सिंह और रामकली की पीढ़ी है, जिसमें सन् 1875 के समय का चित्रण है। 25 वर्ष बाद 1901 में कल्याण सिंह के पुत्र प्यारेलाल एवं कलावती की पीढ़ी आती है। आगे प्यारेलाल की बेटी शारदा और विमल की पीढ़ी है, जिसका समय सन् 1921 है। 1942 में विमल का बेटा प्रदीप और जेनेट की पीढ़ी आती है। पाँचवी पीढ़ी में अनिरुद्ध–रीता और अन्विता–नेल्सन आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

प्रस्तुत नाटक में विष्णु प्रभाकर ने क्रांति के निरंतर गतिशील रूप को प्रस्तुत किया है। आदिकाल से लेकर आज तक क्रांति निरंतर चलती आ रही है। वह चलती रहेगी। समाज की किसी रूढ़ि परंपरा को उस युग की विद्रोही शक्ति तोड़ती है तो वह समझने लगती है कि उसने क्रांति की लेकिन वह एक परंपरा को तोड़कर दूसरी परंपरा को स्थापित करती है। यही परंपरा आगामी पीढ़ी के लिए घातक बनती है और यह पीढ़ी उसे तोड़कर अपनी नई परंपरा स्थापित करती है। यह क्रम निरंतर चलता रहता है सूत्रधार के शब्दों में यह चक्र कभी नहीं रुकता। जो आज क्रांति करने का दावा करते हैं कल वही प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं। इतिहास बार–बार अपने को दोहराता है। युगे–युगे क्रांति में विष्णु प्रभाकर ने वैवाहिक संबंधों के संदर्भ में पीढ़ी दर पीढ़ी के संघर्ष को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

4.3 नाटक में सामाजिक क्रांति का अर्थ एवं स्वरूप

प्रत्येक पीढ़ी पारिवारिक व सामाजिक बंधनों, नियमों उपनियमों को नांघकर नया नियम बनाती है परंतु जब आगामी पीढ़ी अपनी पुरानी पीढ़ी द्वारा बनाए गए नियम को तोड़कर नए की स्थापना करना चाहती है तो पुरानी पीढ़ी नई पीढ़ी का विद्रोह करती है उसकी प्रतिक्रिया करती है हालांकि उसने भी अपने समय में परिवर्तन के लिए क्रांति की हुई होती है। परिणाम दोनों पीढ़ियों में संघर्ष होता है। सूत्रधार कहता है। हर बुजुर्ग अनुभवी होता है लेकिन मुसीबत यह है कि अनुभव और क्रांति की सदा अनबन रहती है। दोनों एक दूसरे को फूटी आंख नहीं सुहाती। अनुभव स्थापित शक्तियों की रक्षा करता है लेकिन क्रांति नए साथियों की खोज करती है।

4.4 नाटक में चित्रित समस्याएँ

युगे–युगे क्रांति नाटक में आधुनिक जीवन के तनाव एवं सामाजिक चेतना का स्वर दिखलाई पड़ता है। प्रस्तुत नाटक द्वारा विष्णु प्रभाकर ने भारतीय समाज के वैवाहिक संबंधों में पीढ़ियों के बदलाव के अनुरूप होने वाले परिवर्तनों की ओर इशारा किया है। नाटक में कई समस्याएँ उठायी गयी हैं, जिनपर नीचे बिंदुवार चर्चा की गयी है–

4.4.1 पर्दा प्रथा

युगे–युगे क्रांति में विष्णु प्रभाकर ने सन् 1875 से आज तक के युग को पाँच पीढ़ियों में समेटा है तथा प्रत्येक पीढ़ी की अपने युग में वैवाहिक संबंध के संदर्भ में की गई क्रांति को चित्रित किया है। सन् 1875 के आस–पास सामाजिक व पारंपरिक व्यवस्था के अनुसार पति अपनी पत्नी से केवल रात में मिल सकता था और प्रकाश के लिए दीया की व्यवस्था होती थी । कल्याण सिंह अपनी पत्नी का चेहरा देखना चाहता था। रोशनी की व्यवस्था अच्छी न होने के कारण वह अपनी पत्नी से कहता है कि तेज रोशनी वाला दीया जलाया करो। कल्याण सिंह परदे का विरोधी था। वह अपनी पत्नी से कहता है कि बाहर वालों से परदा करो तो समझ में आता है लेकिन घरवालों से कैसा परदा। कल्याण सिंह ने इस कुरीति को तोड़कर अपनी पत्नी का मुंह देखने की योजना बनाई वह मुंह देखने का साहस भी किया और उसे अपने पिता के हाथों पिटना भी पड़ा। इस घटना के 25 वर्षों के पश्चात् कल्याण सिंह द्वारा उठाया गया यह क्रांतिकारी कदम उसके पुत्र प्यारेलाल की पीढ़ी के लिए दकियानूसी कदम बन जाता है। इस नाटक में पर्दा प्रथा का विरोध सशक्त रूप में हुआ है। नंगे साधु की राय का समर्थन करते हुए कल्याण सिंह कहता है–"किसी हद तक मैं उसकी यह बात भी मानता हूँ कि पर्दा करना पाप है। भला कोई बात है, औरत है कि गुड़िया। बाहर जाते समय पर्दा करे तो कुछ समझ में भी आता है। घर में रहकर घरवाली घरवाले से पर्दा करे, यह मैं कभी नहीं मान सकता।"

4.4.2 विधवा विवाह

'युगे–युगे क्रांति' नाटक में विधवा विवाह की समस्या को भी बखूबी उठाया गया है तथा नाटककार ने विधवा विवाह का समर्थन किया है। प्यारेलाल विधवा विवाह का पक्षधर है वह विधवा से विवाह करने की प्रतिज्ञा भी करता है। कल्याण सिंह धर्म की दुहाई देता है वह विधवा विवाह को पुण्य न मानकर पाप मानता है तथा प्यारेलाल को घर से निकाल देता है। अपने माता–पिता के विरुद्ध होकर विधवा से विवाह करने वाले प्यारेलाल की यह उक्ति इसका उदाहरण है–"मैं कहता हूँ मां, पुरुष को जब एक–से अधिक शादी करने का अधिकार है तो नारी ने ही कौन–सा अपराध किया है। पुरुष एक स्त्री के जीते जी दूसरी स्त्री ला सकता है, लेकिन नारी भरी जवानी में ही क्यों बचपन में ही पति के मर जाने पर दूसरी शादी नहीं कर सकती।... हमारी नारियाँ घर छोड़कर भाग जाने को मजबूर की जाती हैं। लेकिन अब हम यह अत्याचार नहीं होने देंगे।" नाटककार ने प्यारेलाल द्वारा लाला सुगनचंद की

विधवा बेटी कलावती से विवाह कराकर नाटककार ने विधवा–विवाह का समर्थन किया है। पिता तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा विरोध करने पर भी वह अटल रहता है। यहाँ नाटककार के सुधारवादी दृष्टिकोण की झलक मिलती है। नाटककार की राय में जब भी सुधार और क्रांति का स्वर आता है, पाखंडी लोग इसी तरह बाधा देते हैं। शोर मचानेवाले कायर होते हैं। उनमें क्रांति का साहस नहीं होता। कायर कभी सदाचारी नहीं हो सकता।

4.4.3 अंतर्जातीय/अंतर्धर्मीय विवाह

नाटक में अंतर्जातीय एवं अंतर्धर्मीय विवाह के माध्यम से नवीन क्रांति का समर्थन किया गया है। विमल द्वारा प्यारेलाल की पुत्री शारदा से अंतर्जीतीय विवाह करना तथा शारदा की क्रांतिकारी एवं समानता भी भावना को भी नाटक में दर्शाया गया है। शारदा घर की चारदीवारी को नांघकर सिर से पल्ला उतारकर असहयोग आंदोलन में बढ़–चढ़कर भाग लेती है। परंपरा से चले आ रहे रीति–रिवाजों को तोड़ना चाहती है वह स्त्री–पुरुष को सामान मानती है नारी को शक्ति स्वरूपिणी का दर्जा देती है। उसके अनुसार वीर नारी शक्ति है और शक्ति के मार्ग में घर की चारदीवारी तो क्या हिमालय जैसे नागाधिराज भी बाधा नहीं दे सकते। शारदा व विमल एक–दूसरे से विवाह करना चाहते हैं। शारदा का पिता इस विवाह के विरुद्ध हैं। स्वयं अपने समय में विधवा से विवाह करने वाला प्यारेलाल शारदा को विमल से विवाह करने पर मार देने की धमकी देता है। उधर विमल जातीयता और प्रांतीयता की दीवारें तोड़कर स्वतंत्रता के लिए घर से बाहर आने वाली शारदा से आगे बढ़कर विवाह कर लेता है।

इसी क्रम में अंतर्धर्मीय विवाह को भी दर्शाया गया है। शारदा–विमल का क्रांतिकारी युगल अपने पुत्र प्रदीप का एक ईसाई कन्या से विवाह की इच्छा प्रकट करने पर विरोध करता है। वह परिवार तथा समाज की स्थिति की दुहाई देकर उस कन्या को शुद्ध करवाने की बात करता है। प्रदीप इस बात को स्वीकार न कर धर्म की सीमा को नांघकर जेनेट से शादी करता है। शारदा और विमल दोनों अपना सारा जीवन गांधी जी के आदेशानुसार देश को समर्पित करते हैं। लेकिन एक समय ऐसा आता है, जब वे भी अपने अनुभव का उपयोग स्थापित शक्तियों की रक्षा करने में करते हैं। वे क्रांति के विरुद्ध संघर्ष करने को तैयार होते हैं। नारी स्वतंत्रता के पक्षधर विमल को सूचना मिलती है कि उसके बेटे प्रदीप ने जेनेट नामक एक विधर्मी निर्धन लड़की से विवाह कर लिया है, तो वह सह नहीं पाता। जिसने जातीयता एवं प्रांतीयता की दीवारें तोड़कर स्वतंत्रता के लिए घर से बाहर आने वाली लड़की शारदा से आगे बढ़कर विवाह किया था, वह आज परेशान होकर पत्नी से कहता है–"मैंने धर्म और जाति की चिंता न की। मैं उनमें विश्वास ही नहीं करता। मैं देश को सबसे ऊपर मानता हूँ। जैनेट इस देश की लड़की है। बस मैंने उससे केवल इतना ही कहा था कि अपने परिवार और समाज की जो स्थिति है, उसको देखते हुए अच्छा होगा कि जेनेट को शुद्ध करके जाह्नवी बना लिया जाए। मुझे ये बातें अच्छी नहीं लगती। परंतु जिस समाज में हम रहते हैं, उनका भी तो ध्यान रखना होता है। उसे धीरे–धीरे हृदय परिवर्तन के द्वारा ही तो बदलना होगा" वह एक दिन जेनेट के धर्म परिवर्तन के संबंध में बेटे प्रदीप से कहता भी है–"अगर वह धर्म परिवर्तन नहीं करती, तो इस घर में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है। कहाँ

यह एक छोटी जाति की स्त्री और कहां हम खत्रियों में भी शीर्षस्थ।" विमल की बहन सुरेखा तो आधुनिक विचारों वाली युवती है। वह मां से कहती है—"बिना सहे क्या कुछ होता है, माताजी? और सहने के लिए जरूरत होती है साहस की। तभी क्रांति का जन्म होता है। क्रांति के बिना समाज का परिवर्तन नहीं हो सकता। आपको तो खुश होना चाहिए कि आपके बेटे ने साहस किया। आप लोगों ने भी तो एक दिन ऐसा ही साहस किया था।" सुरेखा के अनुसार काल की गति के अनुरूप मनुष्य को बदलना है। नई पीढ़ी की आकांक्षाओं को अपनी सुविधा के अनुसार नहीं मोड़ा जा सकता। उसकी राय में विमल ने मानवता को बाँटने वाली एक और दीवार को ढहा दिया है। वह मानवता के महत्व पर जोर देकर कहती है—"मनुष्य मनुष्य है। धर्म, मत और जाति बदल जाने से वह नहीं बदल जाता। कुछ जाति और समाज के भय से शुद्धि का ढोंग करना मनुष्य और मनुष्यता का घोरतम अपमान है।" उसको मालूम है कि माँ और पिताजी सब कुछ समझते हैं। लेकिन परिवार में रहने का भय और अपने अंतर का अहं उन्हें गुमराह किए हुए है। वह पूछती है—"आदमी अपने अहं से कब मुक्ति पाएगा।" समय चक्र बड़ी तेजी से घूम रहा है।

4.4.4 मूल्य परिवर्तन की समस्या

प्रदीप की संतान अन्विता व अनिरुद्ध अत्याधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करते हैं। विष्णु प्रभाकर ने इनके माध्यम से आज के युग में प्रेम तथा विवाह के बदलते मूल्यों पर प्रकाश डाला है। अन्विता पहले दीपक से प्रेम करती है परंतु शादी नेल्सन यानी किसी अन्य पुरुष से करने का निश्चय करती है। जेनेट जब प्रेम के मूल्य की बात करती है तो अनिरुद्ध स्पष्ट शब्दों में कहता है तुम चाहती हो कि वही मूल्य समाज में मान्य हो जिनको तुमने जिया है। अनिरुद्ध स्वयं भी नित्य नई संगिनी बनाता है। सुमेधा नामक लड़की से वह विवाह भी कर चुका है लेकिन विवाह निभ नहीं सका। वह अनंत काल से चली आ रही विवाह संस्था पर प्रश्नचिह्न लगाता हुआ कहता है—विवाह हमारे समाज में मात्र परंपरा का पालन है। उसके पीछे अब जीवन की कोई अनुभूति नहीं रह गई है। स्त्री के लिए पति अनिवार्य नहीं है पूर्व शनिवार है। विवाह स्त्री की गुलामी का पट्टा है इसलिए बंधन है। अनिरुद्ध की नई संगिनी रीता भी स्त्री होने के बावजूद इन्हीं विचारों की है। पुरानी तथा नई पीढ़ी में संघर्ष निरंतर तथा अटल है क्योंकि प्रत्येक क्रांतिकारी आगामी पीढ़ी के लिए प्रतिक्रियावादी व विरोधी बन जाता है। चुकी इस नाटक में विष्णु प्रभाकर ने समाज में वैवाहिक संबंधों में चिर काल से चली आ रही परिवर्तन संक्रांति का निरूपण किया है इसलिए इस नाटक के पात्र युग युग के पात्र हैं कथ्य को स्पष्ट करने में शीर्षक सफल रहा है।

4.4.5 दहेज की समस्या

नाटक के अंतिम भाग में नाटककार ने देवीप्रसाद नामक पिता की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है। जो दहेज की समस्या की वजह से अपनी पढ़ी—लिखी बेटी का उचित विवाह करने में असमर्थ हैं। नाटककार भी विवाह को व्यापार समझते हुए देवी प्रसाद सिंह के माध्यम से कहलवाते हैं—"नहीं,

नहीं, यह सब छल है। छलावा है। ऐसा नहीं होता। जैसा कि मैंने कहा था मेरे तो एक लड़की है, ज्योत्सना। मैंने उसे ऊँची से ऊँची शिक्षा दी। लेकिन मैं उसके लिए योग्य वर की तलाश नहीं कर सका। जो हैं, वे कीमत माँगते हैं। सब कुछ व्यापार है।" नाटक के खत्म होते–होते देवीप्रसाद जान लेता है कि उसकी बेटी ने अपने ही कॉलेज के एक युवक के साथ कोर्ट में विवाह किया है, तो पिता चौन की साँस लेता है।

4.5 सारांश

संक्षेप में कह सकते हैं कि 'युगे–युगे क्रांति' में कल्याण सिंह–रामकली, प्यारेलाल–कलावती, शारदा–विमल, प्रदीप–जैनेट, अनिरुद्ध–रीता एवं अन्विता–नेल्सन दंपतियों द्वारा नाटककार यह साबित करते हैं कि अनुभव स्थापित शक्तियों की रक्षा करता है, लेकिन क्रांति नए साथियों की खोज करती है। अतः एक युग का क्रांतिकारी दूसरे युग का प्रतिक्रियावादी बन जाता है। लेकिन क्रांति तो हर युग में मनुष्य के मन में उपजती है। हर पीढ़ी के प्रतिनिधि अपने को क्रांतिकारी मानते हैं। पर अपने पूर्वजों की दृष्टि में यह संस्कृति और सभ्यता के शत्रु हैं। उनकी संतान उन्हें प्रतिक्रियावादी, दकियानूसी, पुरातनपंथी और चुके हुए व्यक्ति समझती है। विष्णु प्रभाकर ने सूत्रधार और अन्य पात्रों के माध्यम से यह बताया है कि क्रांति रूढ़ि बन जाती है क्योंकि जो आज क्रांति करने का दावा करते हैं, कल वे ही प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं। साहस के बिना क्रांति नहीं और क्रांति के बिना समाज का परिवर्तन संभव नहीं है। इस प्रकार नाटक का नाम 'युगे–युगे क्रांति' अत्यंत सार्थक बन पड़ा है।

4.6 कठिन शब्द

1. प्रतिक्रियावादी	2. दकियानूसी	3. पुरातनपंथी	4. दुहाई
5. संगिनी	6. संक्रांति	7. सूत्रधार	8. दमघोटू

4.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. युगे–युगे क्रांति नाटक में निहित सामाजिक चेतना पर निबंध लिखिए।

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

2. नाटक के आधार पर विवाह के संबंध में नयी और पुरानी पीढ़ी के विचारों का विवेचन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

3. नाटक में चित्रित किसी एक समस्या का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

....

....

....

....

....

....

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'युगे–युगे क्रांति' नाटक के नाम की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

....

....

2. दूसरी पीढ़ी की कहानी क्या है?

....

....

....

....

....

....

3. आधुनिक युग का प्रतिनिधित्व करने वाली पीढ़ी की कहानी लिखिए।

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

…………………………………………………………………………….

4. नाटक के आधार पर प्रेम तथा विवाह के बदलते मूल्यों पर प्रकाश डालिए।

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

…………………………………………………………………………….

5. 'युगे–युगे क्रांति' नाटक में 'सूत्रधार' का क्या कार्य है?

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

……………………………………………………………………………

…………………………………………………………………………….

4.8 संदर्भ–ग्रंथ / पुस्तकें

3. युगे–युगे क्रांति — विष्णु प्रभाकर

2. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक : समस्याएँ और समाधान — दिनेशचन्द्र वर्मा

3. हिंदी नाटक — डॉ. बच्चन सिंह

4. हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष — गिरीश रस्तोगी

डॉ॰ जितेन्द्र कुमार सिंह
सह आचार्य, हिन्दी विभाग,
राज्यस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर

'युगे–युगे क्रांति' नाटक का प्रतिपाद्य एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण

5.0 रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 नाटक का प्रतिपाद्य

5.4 नाटक के पात्र

5.4.1 प्रमुख पुरुष पात्रों का चरित्र–चित्रण

5.4.1.1 कल्याण सिंह

5.4.1.2 प्यारेलाल

5.4.1.3 अनिरुद्ध

5.4.2 प्रमुख स्त्री पात्रों का चरित्र–चित्रण

5.4.2.1 शारदा

5.4.2.2 अन्विता

5.5 सारांश

5.6 कठिन शब्द

5.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

5.8 संदर्भ–ग्रंथ / पुस्तकें

5.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत आप निम्न बातों को समझ पाएँगे–

- नाटक के उद्देश्य को जान सकेंगे

- नाटक के प्रमुख पात्रों का परिचय प्राप्त कर सकेंगे
- पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को जान सकेंगे
- तत्कालीन समाज व्यवस्था को समझ सकेंगे
- नाटक के मूल संदेश को समझ सकेंगे

5.2 प्रस्तावना

'युगे–युगे क्रांति' नाटक में सन् 1875 से लेकर अत्याधुनिक युग तक को समेटा गया है। विष्णु प्रभाकर ने संस्कृत नाट्य परंपरा के अनुसार इस नाटक में सूत्रधार की योजना की है । यह सूत्रधार ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को जोड़ने में समर्थ हुआ है। विष्णु प्रभाकर ने स्थान स्थान पर रंग संकेत भी दिए हैं जिनमें प्रकाश व्यवस्था व पात्रों के परिधान की चर्चा है। इस नाटक में लेखक ने अंक व दृश्य का विभाजन नहीं किया है। विष्णु प्रभाकर स्वतंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के एक प्रमुख हस्ताक्षर हैं। गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित उनके साहित्य के मूल में मानवतावादी स्वर है। कोई भी नाटककार अपने प्रतिपाद्य का संप्रेषण अपने पाठकों/दर्शकों तक करना चाहता है, उसे ही उद्देश्य या संदेश कहते हैं। रचनाकार के मन में अपने युग और समाज से संबंधित अनेकों समस्याएँ सन्निहित रहती हैं जो उन्हें अभिव्यक्त करने के लिए प्रेरित करती रहती हैं। जब नाटककार इन्हें अपनी रचना के माध्यम से प्रस्तुत करता है तब यही लेखकीय दृष्टिकोण कहलाता है । इस संदर्भ में संस्कृत में एक उक्ति प्रचलित है–'प्रयोजनमनुद्देश्य मन्डोऽपि न प्रवर्तते' अर्थात् कोई मूर्ख व्यक्ति भी बिना प्रयोजन के किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता।

5.3 नाटक का प्रतिपाद्य

युगे–युगे क्रांति नाटक निरंतर चलती आयी क्रांति, परिवर्तन और संघर्ष पर लिखा गया है। इसमें नाटककार ने प्रतिपादित किया है कि प्रत्येक पीढ़ी प्रचलित समाज व्यवस्था, नियम, उपनियम को नांघकर कोई नया कदम उठाना चाहती है। नाटक में एक पीढ़ी से लेकर पाँचवीं पीढ़ी तक प्रचलित विधान में युवक एक नय़ा कदम उठा लेता है लेकिन अपनी प्रौढ़ावस्था तक आते–आते वह यह अनुभव करता है कि जो कदम उसने उठाया था उसकी क्रांतिकारिता बदले हुए संदर्भ में (नए समाज में) पुरानी पड़ गयी है। हर पीढ़ी के युवकों ने अपने युग में क्रांति की थी लेकिन जब वे बाप बन जाते हैं तो अपने बेटा–बेटी की क्रांति को गलत समझते हैं । इसमें उन लोगों को खुद का अपमान लगता है। इस नाटक की कथावस्तु सन् 1875 से लेकर आज तक के काल से होकर गुजरती है–

- पहली पीढ़ी–सन् 1875 के आस–पास– रामकली व कल्याणसिंह – कल्याणसिंह द्वारा पर्दा प्रथा का विरोध।
- दूसरी पीढ़ी–सन् 1901 के आस–पास – कल्याण सिंह व रामकली के बेटे प्यारेलाल का एक विधवा से विवाह करने के लिए क्रांति।

- तीसरी पीढ़ी–सन् 1920–21 के आस–पास – प्यारेलाल की बेटी शारदा का असहयोग आन्दोलन में भाग लेना व विमल से अंतर्जातीय प्रेम विवाह करना।
- चौथी पीढ़ी–सन् 1942 के आस–पास – शारदा व विमल के बेटे प्रदीप का जैनेट से अंतर्धर्मीय विवाह करना।
- पाँचवी पीढ़ी–अति आधुनिक काल – प्रदीप और जैनेट की बेटी अन्विता का दीपक से प्रेम करना परन्तु नेल्सन से शादी करना। वहीं प्रदीप और जैनेट के बेटे अनिरुद्ध का विवाह के बंधन को न समझना तथा संगिनी बदलना।

'युगे–युगे क्रांति' नाटक में नाटककार विष्णु प्रभाकर ने अपने विशिष्ट उद्देश्य के संदर्भ में सर्वप्रथम कल्याणसिंह के माता–पिता को परंपरावादी पुरानी पीढ़ी के बुजुर्ग, प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया है और उनके विरुद्ध नवविचारवादी नयी युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में कल्याणसिंह और रामकली को स्वीकार किया है। तत्पश्चात् नाटककार ने बुजुर्ग कल्याणसिंह और रामकली को परंपरावादी विचारों की पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया है और उनके विरुद्ध इन दोनों की युवा संतान प्यारेलाल को नये विचारों, नयी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया है। इसी क्रम में नाटककार ने अगले परंपरावादी विचारों की पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में बुजुर्ग प्यारेलाल और उसकी पत्नी कलावती को स्वीकार किया है और उनके विरुद्ध इनकी युवा बेटी शारदा को नव विचारवादी नयी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया है। इसके बाद परंपरावादी विचारों की पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में बुजुर्ग शारदा और उसके पति विमल को स्वीकार किया है और उनके विरुद्ध इनकी युवा संतान प्रदीप को नव विचारवादी नयी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया है। तदुपरांत परंपरावादी विचारों की पुरानी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में बुजुर्ग प्रदीप और उसकी पत्नी जैनेट को स्वीकार किया है और उनके विरुद्ध उनकी युवा संतान अनिरुद्ध और अन्विता को आज के नव विचारवादी नयी पीढ़ी के प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया है।

इस प्रकार नाटककार ने परंपरावादी विचारों की पुरानी पीढ़ी और नव विचारवादी नयी पीढ़ी के बीच में चलनेवाले संघर्ष के माध्यम से सामाजिक क्रांति की निरंतर चल रही प्रक्रिया को दिखाया है। गांधीजी के असहयोग आंदोलन का सच्चा चित्र खींचा है। विदेशी कपड़ों के बहिष्कार की प्रेरणा, पुरुषों के साथ मिलकर अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ने हेतु नारी का आह्वान आदि इस बात की पुष्टि करते हैं। यही नहीं, पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करने वाले एवं आत्मा को न मानने वाले अत्याधुनिक भारतीय पढ़े–लिखे युवक–युवतियों का चित्रण अंतिम पीढ़ी में करते हुए नाटककार ने नाटक को अत्यंत प्रासंगिक बनाया है।

5.4 नाटक के पात्र

नाटक का श्रीगणेश सूत्रधार और देवीप्रसाद के वार्तालाप से होता है जो उस समय अपनी बेटी ज्योत्सना को ढूँढते आता है । सूत्रधार देवीप्रसाद को पाँच पीढ़ियों की कथा रंगमंच के माध्यम से सुनाता है। इस प्रकार पाँच पीढ़ियों में आये पुरुष और स्त्री पात्र निम्नवत् हैं–

सूत्रधार

देवीप्रसाद

कल्याणसिंह – रामकली (पति–पत्नी)

प्यारेलाल – कलावती (पति–पत्नी)

विमल – शारदा (पति–पत्नी)

चन्द्रकिशोर – विमल के पिता हैं ।

प्रदीप – जैनेट (पति–पत्नी)

अन्विता – नेल्सन (पति–पत्नी)

सुरेखा – विमल और शारदा की पुत्री

अनिरुद्ध – प्रदीप और जैनेट का पुत्र

रीता – अनिरुद्ध की संगिनी

दीपक – एक पात्र अन्विता इससे पहले प्रेम करती थी ।

इसके अतिरिक्त पुरुषों और स्त्रियों की भीड़।

5.4.1 प्रमुख पुरुष पात्रों का चरित्र–चित्रण

5.4.1.1 कल्याणसिंह

नाटक के पहले कालखंड 1875 का प्रतिनिधित्व कल्याणसिंह करता है उसकी चारित्रिक विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है–

(क) क्रांतिकारी

सन् 1875 के आस–पास सामाजिक व पारंपरिक व्यवस्था के अनुसार पति अपनी पत्नी से केवल रात में मिल सकता था और प्रकाश के लिए दीया की व्यवस्था होती थी । वह अपनी पत्नी का चेहरा दिन में नहीं देख सकता था लेकिन कल्याणसिंह क्रांति कर दिन में पत्नी रामकली का चेहरा देखता है।

(ख) माता–पिता एवं समाज के खिलाफ

कल्याणसिंह अपने माता–पिता और समाज में चली आ रही पुरानी मान्यताओं की खिलाफत करता है। वह समाज में बदलाव लाना चाहता है। स्त्री–पुरुष की समानता की बात सोचता है। वह अपनी पत्नी का चेहरा दिन में देखकर उस समय के समाज और माता–पिता की बातों की अवहेलना करता है। नंगे साधु की राय का समर्थन करते हुए कल्याण सिंह कहता है–"किसी हद तक मैं उसकी यह बात भी मानता हूँ कि पर्दा करना पाप है। भला कोई बात है, औरत है कि गुड़िया । बाहर जाते समय पर्दा करे तो कुछ समझ में भी आता है। घर में रहकर घरवाली घरवाले से पर्दा करे, यह मैं कभी नहीं मान सकता।"

(ग) कुरीतियों का विरोधी

कल्याणसिंह समाज में चली आ रही रूढ़ियों एवं कुरीतियों का विरोध करता है। वह परदे का विरोधी था। कल्याण सिंह ने इस कुरीति को तोड़कर अपनी पत्नी का मुंह देखने की योजना बनाई वह मुंह देखने का साहस भी किया और उसे अपने पिता के हाथों पिटना भी पड़ा।

(घ) परिवर्तनशील चरित्र

कल्याणसिंह का चरित्र परिवर्तनशील है क्योंकि अपने समय में पर्दा प्रथा का विरोध करने वाले कल्याणसिंह जब उनका पुत्र आर्यसमाज से प्रभावित होकर रामपुरवाले सुगनचंद की विधवा बेटी कलावती से विवाह करता है। तो वे उसे डाँटते हैं और घर से निकाल देते हैं । सूत्रधार के अनुसार कल्याणसिंह ने जो अपने युग के रीति–रिवाज के खिलाफ साहस कर अपनी पत्नी का चेहरा दिन में देखा और वही साहस जब उसके बेटे ने किया और विधवा से विवाह किया तो उसी ने उसका विरोध किया और उसे पाप कहा । यह चक्र चलता ही रहता है। जो आज क्रांति करने का दावा करते हैं, कल वे ही प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं। इस नाटक के सूत्रधार की उक्ति इस संदर्भ में उल्लेखनीय है–"इतिहास बार–बार अपने को दोहराता है। वह समझते हैं उन्होंने समय को पकड़ लिया है, लेकिन जादूगर का हाल उन्हें फाँकी देकर न जाने कब आगे बढ़ जाता है और उसके मंच पर आ जाती है एक नई पीढ़ी, जो उसके लिए अजनबी होती है।"

5.4.1.2 प्यारेलाल

प्यारेलाल कल्याणसिंह और रामकली का पुत्र है वह सन् 1901 के आसपास के समय का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है–

(क) क्रांतिकारी व्यक्तित्व

प्यारेलाल भी परंपरा से चली आ रही रूढ़ियों और अंधविश्वासों, जाति–धर्म के बंधनों का विरोध करता है। वह आर्यसमाज से प्रभावित है। वह समाज में समानता एवं नारी–सुधार हेतु क्रांतिकारी कदम उठाता है । हर पीढ़ी के प्रतिनिधि अपने को क्रांतिकारी मानते हैं। पर अपने पूर्वजों की दृष्टि में यह संस्कृति और सभ्यता के शत्रु हैं। उनकी संतान उन्हें प्रतिक्रियावादी, दकियानूसी, पुरातनपंथी और चुके हुए व्यक्ति समझती है। क्रांति का अर्थ समझाकर प्यारेलाल का कहना भी उल्लेखनीय है, "क्रांति मैंने भी की है। लेकिन क्रांति का अर्थ यह नहीं कि कुल, समाज और धर्म की लाज को घोलकर पी लिया जाए।"

(ख) विधवा विवाह का समर्थक

प्यारेलाल विधवा विवाह का समर्थक है। वह विधवा से विवाह करने की प्रतिज्ञा भी लेता है। वह अपने माता–पिता का विरोध करते हुए कहता है–"मैं कहता हूँ मां, पुरुष को जब एक–से अधिक शादी करने का अधिकार है तो नारी ने ही कौन–सा अपराध किया है। पुरुष एक स्त्री के जीते जी दूसरी स्त्री ला सकता है, लेकिन नारी भरी जवानी में ही क्यों बचपन में ही पति के मर जाने पर दूसरी शादी नहीं कर सकती।" वह कहता है अब यह अत्याचार मैं नहीं होने दूँगा और सुगनचन्द्र की विधवा बेटी कलावती से विवाह कर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करता है।

(ग) माता–पिता के विरुद्ध

कल्याणसिंह प्यारेलाल को समझाने की बहुत कोशिश करते हैं परंतु प्यारेलाल उनकी बात नहीं मानता। कल्याण सिंह बेटे की शादी रोकने के लिए उसे मारते–पीटते हैं तथा उसे घर से निकल जाने के लिए कहते हैं। प्यारेलाल घर छोड़कर चला जाता है वह अपने साथियों की उपस्थिति में कलावती से विवाह करता है कुछ लोग मंदिर के बाहर खड़े होकर इसका विरोध करते हैं। पंडित जी कहते हैं कि जब–जब भी सुधार और क्रांति का स्वरूप आता है तो पाखंडी लोग इसी तरह बाधा उत्पन्न करते हैं । यह हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। इस तरह से प्यारेलाल की शादी हो जाती है। इसके लिए उसे अपने परिवार वालों व समाज से क्रांति करनी पड़ती है।

(घ) परिवर्तनशील चरित्र

प्यारेलाल का चरित्र भी परिवर्तनशील है क्योंकि अपने समय में विधवा विवाह का समर्थन करता है तथा आर्यसमाज से प्रभावित होकर रामपुरवाले सुगनचंद की विधवा बेटी कलावती से विवाह करता है। वही आगे चलकर अपनी पुत्री शारदा द्वारा विमल के साथ अंतर्जातीय प्रेम विवाह का कड़ा विरोध करता है और शारदा को मारने की धमकी देता है, घर में आने से मना कर देता है।

5.4.1.3 अनिरुद्ध

अत्याधुनिक विचारों से प्रभावित अनिरुद्ध प्रदीप और जैनट के पुत्र तथा अन्विता का भाई है। इसकी चारित्रिक विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है–

(क) अत्याधुनिक

अनिरुद्ध विवाह बंधन को मानता ही नहीं उसे बंधन में प्यार नहीं लगता। कह कहता है–"स्त्री को पति नहीं पुरुष अनिवार्य है और स्त्री–पुरुष को संबंध रखने के लिए किसी सर्टिफिकेट की जरूरत नहीं है।" अनिरुद्ध ने एक अन्य स्थान पर विवाह संबंधी अपनी मान्यता को प्रकट किया है–"विवाह के मंत्र या मजिस्ट्रेट के सर्टिफिकेट से स्त्री–पुरुष संबंधों में कोई अंतर नहीं पड़ता और यदि यह आवश्यक भी हो तो यह काम बुढ़ापे में हो सकता है, क्योंकि तब साथी बदलना संभव नहीं है। लेकिन जब तक हम युवा हैं, हमें प्रेम चाहिए। प्रेम के लिए सर्टिफिकेट की आवश्यकता नहीं होती। प्रेम मुक्ति में है, बंधन में नहीं। विवाह स्त्री की गुलामी का पट्टा है, इसलिए बंधन है।"

(ख) पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित

अनिरुद्ध पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। वह रीता नामक प्रतिभा शालिनी चित्रकार से प्रेम करता है, जिसके पिता बंगाली ब्राह्मण और माँ डच है। अनिरुद्ध ने दो वर्ष में सुमेधा, सविता, नंदिता जैसे तीन संगिनीयाँ बदली हैं। वह पिता से कहता है–"मुझे आश्चर्य इसी बात का है कि आपको मेरी इस बात से आश्चर्य हुआ। देखो ना डैडी, आप पहले गणतंत्र दल में थे, फिर जनतंत्र में आए, उसके बाद जनक्रांति में गए। अब फिर दक्षिणपंथी गणतंत्र में जा मिले। पिताजी सिद्धांत के नाम पर दल बदलते हैं। बेटा प्रेम के नाम पर संगिनी बदलता है।" वह पिता की राजनीति और अपनी प्रेमनीति को एक ही तराजू में तौलता है।

(ग) परंपरा विरोधी

नई पीढ़ी विवाह संस्था को बंधन मानती है। विवाह संस्था का विरोध करते हुए अनिरुद्ध पिता से कहता है–"मैं विवाह में विश्वास नहीं करता। विवाह हमारे समाज में मात्र एक परंपरा का पालन है। उसके पीछे अब जीवन की कोई अनुभूति नहीं रह गई है और आप जानते हैं कि अनुभूति के अभाव में परंपराएं सड़ जाती हैं। इस सड़ी–गली परंपराओं से चिपके रहने से समाज रोगी हो सकता है।" नई

पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाली रीता की राय में जब तक वे एक दूसरे से प्रेम कर सकेंगे, रहेंगे। नहीं कर सकेंगे तो अलग हो जाएंगे। वह चाहे जब कभी साथी बदल सकते हैं। यह पीढ़ी आत्मा को मानती नहीं।

5.4.2 प्रमुख स्त्री पात्रों का चरित्र–चित्रण

5.4.2.1 शारदा

शारदा विधवा विवाह के लिए माता–पिता से विद्रोह करने वाले प्यारेलाल की पुत्री है। उसकी चारित्रिक विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है–

(क) साहसी और क्रांतिकारी

शारदा साहसी और क्रांतिकारी है। वह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए असहयोग आंदोलन में भाग लेकर जेल भी जाती है। तब पिता उसका विरोध करके कहता है–"उसने सिर से पल्ला क्या उतारा, कुल की लाज ही उतार दी। मैंने उसे कितना धमकाया, पीटा, पर वह नहीं मानी।" प्यारेलाल आजादी चाहता है, लेकिन आजादी के लिए स्त्रियों का लड़ना पसंद नहीं करता। उसके मत में स्त्रियाँ जेल गईं तो अधर्म हो जाता है। घर की चारदीवारी लांघकर शारदा समाज में खुले मुँह घूमती है। वह केवल पुरुषों की तरह भाषण ही नहीं देती, रणचंडी की तरह आग भी उगलती है। विमल जैसे लोग तो शारदा की प्रशंसा करते हैं। उसकी राय में शारदा जैसी नारियों पर ही इस देश की स्वतंत्रता निर्भर करती है। वह कहता है–"जो नारी जेल में रह चुकी होती है, तुम्हारा दकियानूसी समाज उसे दुराचारी समझता है। लेकिन मैं उस दुराचारी को अपने दिल में स्थान दूँगा।" शारदा से शादी करने के लिए अनुमति देते हुए विमल के पिता कहते हैं–"वह तो वीरांगना है। अर्थात् साक्षात् लक्ष्मीबाई। अब देश निश्चय ही स्वतंत्र हो जाएगा। काश ! मेरी भी ऐसी ही पुत्री होती।"

(ख) नारी सशक्तिकरण और समानता की समर्थक

शारदा नारी के सशक्त रूप का प्रतिनिधित्व करती है। वह कहती है–"स्त्रियां घरों में रहने के लिए नहीं होतीं। वे दिन अब लद गए। क्या तुम नहीं जानते कि आदिशक्ति, महाचंडी, महामाया, महाकाली ये सभी स्त्रियां थीं। इन्होंने ही अनाचारी दानवों को मारकर सृष्टि की रक्षा की थी।" जहाँ नाटककार ने साहसी नारी का चित्रण किया है, उनके अंतर्मन के विद्रोह को भी चित्रित किया है। वास्तव में शारदा स्त्री पुरुषों में समानता देखने वाले समाज में वापस जाना नहीं चाहती। इसलिए वह जेल जाने का निश्चय करके कहती है–"और मैं उस व्यवहार की कल्पना करके शक्ति पाती हूँ। यह सारी स्त्री जाति के लिए चुनौती है। मैं निश्चय ही जेल जाऊँगी। इसमें सफलता नहीं मिली तो आत्महत्या कर लूँगी। लेकिन उस दमघोटू वातावरण में फिर नहीं लौटूँगी।"

(ग) माता–पिता एवं समाज के खिलाफ

शारदा अपने माता–पिता को पुरातनपंथी, दकियानूसी कहती है तथा समाज की पुरातन परंपराओं का विरोध करती है। वह स्वतंत्रता चाहती है। वह माता–पिता का विरोध कर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर असहयोग आंदोलन में भाग लेती है और जेल भी जाती है।

(घ) परिवर्तनशील चरित्र

युवावस्था में शारदा माता–पिता एवं समाज के नियमों के खिलाफ अंतर्जातीय विवाह करती है। जाति और धर्म की संकीर्णताओं से परे समानता और स्वतंत्रता चाहती है। समय के बदलाव के साथ जब वह पुरानी पीढ़ी में पहुँचती है तो उसके चरित्र में परिवर्तन आ जाता है। वह अपने पुत्र प्रदीप द्वारा क्रिश्चियन लड़की जैनेट के साथ विवाह के विरुद्ध हो जाती है। प्रदीप अपने माता–पिता के खिलाफ जाकर जैनेट से शादी कर लेता है। शारदा और विमल चाहते हैं कि जैनेट का नाम व धर्म परिवर्तन करा देने से सारे दोष समाप्त हो जायेंगे। वह जैनेट का नाम बदलकर जाह्नवी रखना चाहते हैं किंतु प्रदीप और जैनेट इसके लिए तैयार नहीं होते। विमल भी अपने बेटे को घर से निकल जाने के लिए कहते हैं। उसको जायदाद से बेदखल करने के लिए कहते हैं। प्रदीप कहता है मुझे भी यह सब नहीं चाहिए। उस समय वहां सुरेखा आ जाती है। अपने माता–पिता को समझाने की कोशिश करती है। प्रदीप घर छोड़कर चला जाता है। समय बीतने के साथ–साथ विमल का क्रोध शांत हो जाता है और प्रदीप घर वापस लौट कर आ जाता है।

5.4.2.2 अन्विता

अन्विता अतिआधुनिक काल का प्रतिनिधित्व करनेवाली प्रदीप और जैनेट की संतान हैं। अन्विता की चारित्रिक विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है–

(क) अत्याधुनिक नारी

अन्विता अत्याधुनिक नारी है। वह दीपक नाम के एक लड़के से प्रेम करती है और शादी नेल्सन से करती है। वह कहती है कि वह दीपक से प्रेम करती थी परंतु अब वह नेल्सन से शादी करेगी क्योंकि अब नेल्सन उसे अच्छा लगता है। अन्विता की राय में काल की गति के अनुसार हमें चलना है–"दुनिया बहुत तेजी से आगे बढ़ रही है। हम अगर समय के साथ नहीं चलेंगे तो पिछड़ जाएंगे। बीता हुआ हर क्षण मर जाता है और जो उसके पीछे भागते रहते हैं वह भी फासिल बनकर रह जाते हैं।"

(ख) क्रांतिकारी

अन्विता अपने माता–पिता के विचारों के खिलाफ जाकर नेल्सन से शादी कर क्रांति करती है। अन्विता के अनुसार चुनौती बुढ़ापा नहीं, जवानी देती है। बुढ़ापा समझौता करता है या हठ करता है। उनकी राय में जवानी भी हठ करती है। वह आगे कहती है–"पर समझौते के लिए नहीं, स्थिर मूल्यों की रक्षा के लिए भी नहीं। खोज के लिए, नए मूल्यों की स्थापना के लिए। जिस क्षण जवानी मूल्यों की खोज में गुरेज करेगी, उस क्षण क्रांति रुक जाएगी।"

(ग) माता–पिता एवं समाज के खिलाफ

अन्विता अपने माता–पिता प्रदीप और जैनेट के खिलाफ आधुनिक विचारों से परिपुष्ट है। वह जाति–धर्म से परे जाकर पूर्ण रूप से पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है।

(घ) परंपराओं के खिलाफ

अन्विता की नजर में परंपरा का कोई मूल्य नहीं है। वह तो परंपराओं का तोड़ने को ही क्रांति समझती है। परंपरा पालन को आज की युवा पीढ़ी बंधन मानती है।

(ङ) पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित

अन्विता पाश्चात्य आचारों से प्रभावित है। वह एक के साथ प्रेम करती है और दूसरे के साथ शादी। किंतु ऐसे बर्ताव पर उसे कोई शर्म नहीं आती । इतना ही नहीं शादी का कार्ड खुद अपने माता–पिता को देती है। अन्विता प्रेम दीपक से करती है, लेकिन शादी नेल्सन से करती है। पाश्चात्य तथा अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव के कारण बच्चे अपने माँ–बाप को नमस्कार के अलावा हैलो–हाय पुकारने लगे हैं।

5.5 सारांश

'युगे–युगे क्रांति' नाटक विवाह संस्था में होते आए बदलाव पर आधारित है। यह नाटक सामाजिक, राष्ट्रीय समस्याओं की तरफ ध्यान आकर्षित करता है साथ ही यह भी संदेश देता है कि मूल्यों को तोड़ने के स्थान पर थोड़ा बदल दिया जाए तो संबंधों में मधुरता बनी रहती है। समय की माँग के अनुसार बदलना आवश्यक है। अनुभवों से सीख लेना चाहिए। नाटककार ने क्रांति संबंधी अपनी मान्यताओं को अनेक स्थानों पर प्रकट किया है। उनके अनुसार बिना परंपरा से मुक्ति पाए क्रांति का सही अर्थ नहीं समझा जा सकता। हमने इतिहास को नया मोड़ दिया, क्योंकि इतिहास को लीक से निकाले बिना क्रांति अर्थहीन है। नाटककार संस्कृति का शत्रु नहीं, अपितु उसे नया रूप देना चाहता है। क्रांति कोई जींस नहीं, जो छिपाकर रखी जा सके। जैसे– युद्ध मनुष्य के मन में पैदा होते हैं, वैसे ही क्रांति भी मनुष्य के अंदर उपजती है।

5.6 कठिन शब्द

1. संस्कार 2. पिकेटिंग 3. बेगैरत 4. फिरंगी

5. बदनामी 6. पुनर्विवाह 7. सशक्तिकरण 8. मुक्ति

5.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. युगे–युगे क्रांति नाटक के प्रतिपाद्य का निरूपण कीजिए।

....

....

....

....

कल्याणसिंह की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

....

....

....

....

2. शारदा का चरित्र–चित्रण कीजिए।

....

....

....

....

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. प्यारेलाल किस प्रकार क्रांति करते हैं?

....

....

....

....

2. विवाह के संबंध में अनिरुद्ध के क्या विचार हैं?

....

....

....

....

3. नाटक में किसको शुद्ध करना चाहते हैं और क्यों?

....

....

....

....

....

4. अन्विता का चारित्रिक विशेषता लिखिए।

....

....

....

....

....

5. युगे–युगे क्रांति का मूल संदेश क्या है?

....

....

....

....

5.8 संदर्भ–ग्रंथ / पुस्तकें

1. युगे–युगे क्रांति – विष्णु प्रभाकर
2. आधुनिक हिंदी नाट्यकारों के नाट्य सिद्धांत – डॉ. निर्मला हेमंत
3. हिंदी नाटक – डॉ. बच्चन सिंह
4. हिंदी नाटक का आत्मसंघर्ष – गिरीश रस्तोगी

डॉ॰ जितेन्द्र कुमार सिंह
सह आचार्य, हिन्दी विभाग,
राज्यस्थान विश्वविद्यालय,जयपुर

एकांकी 'महाभारत की एक साँझ' तथा 'बसंत' की प्रसिद्ध व्याख्याएँ

6.0 रूपरेखा

6.1 पाठ का उद्देश्य

6.2 एकांकी 'महाभारत की एक साँझ' : प्रसिद्ध व्याख्याएँ

6.3 एकांकी 'बसंत' : प्रसिद्ध व्याख्याएं

6.4 अभ्यार्थ प्रश्न

6.5 संदर्भित पुस्तकें

6.1 पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत

– विद्यार्थी उक्त एकांकियों के महत्वपूर्ण प्रसंगों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

– इन व्याख्यायों के अध्ययन से उन्हें 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी के कई सत्यों का परिचय मिल सकेगें।

– 'बसंत' एकांकी के मूल बिदूओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

– दोनों एकांकियों के सदर्भित स्थल उनके ज्ञान को विकसित कर पाएगें।

6.2 एकांकी 'महाभारत की एक साँझ' : प्रसिद्ध व्याख्याएँ

1. "विफलता के इस मरूस्थल में अब एक बूंद आवेगी भी तो सूखकर खो जाएगी! यदि तुम्हें इसमें संतोष हो कि तुम्हारी महत्वाकांक्षा मेरी मृत देह पर ही अपना जय स्तंभ उठाए तो फिर यही सही।"

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा संपादित 'नये एकांकी' पाठय पुस्तक के अंतर्गत 'महाभारत की एक साँझ' से उद्धृत किया गया है। इसके लेखक भारत भूषण अग्रवाल हैं। इस एकांकी में रचनाकार ने एक विवादित प्रसंग को उठाया है और पाठकों के सम्मुख इस बात को रखा है कि दुर्योधन द्वारा किए जाने वाले कर्म में कोई अधर्म नहीं था।

प्रसंग : उपरोक्त पंक्तियां दुर्योधन द्वारा युधिष्ठिर को संबोधित करके कही गई हैं। महाभारत के युद्ध में जब दुर्योधन जान बचाने हेतु वन में छुप जाता है तो भीम उसे युद्ध के लिए ललकारता है युधिष्ठिर ने उसे कहा कि वो निहत्थे पर वार नहीं करेंगे अतः वह अपना मनचाहा शस्त्र चुन कर किस योद्धा के साथ युद्ध करेगा इसका चयन भी कर सकता है। दुर्योधन युधिष्ठर के प्रस्ताव के उत्तर में कहता है :

व्याख्या : युधिष्ठिर के कथन को अब दुर्योधन समझ चुका है कि युधिष्ठिर के अनुसार उसके जीवित रहने की कुछ उम्मीद है पर उसे इस बात का ज्ञान भी है कि महाभारत के युद्ध में उसका सब कुछ नष्ट हो चुका है। सारे योद्धा मारे जा चुके हैं। जब हर तरफ़ से पराजय (हार) ही नज़र आई हैं और असफलता के इस विशाल मरूस्थल में यदि उसके जीवित रहने की उम्मीद रूपी बूंद कहीं से आती भी है तो वह भी विलीन हो जाएगी अर्थात् अब उसका बचना संभव नहीं है। फिर युद्ध का तो तब तक निर्णय नहीं होगा जब तक दुर्योधन का अंत नहीं होता इसलिए वह युधिष्ठिर से कहता है मुझे मारकर ही अगर आप विजय की घोषणा करना चाहते हो तो तुम मेरा अंत कर लो मुझे स्वीकार है।

विशेष : उक्त पंक्तियों के माध्यम से दुर्योधन की जिजीविषा का पता चलता है कि पूरा कौरव वंश समाप्त होने के बाद भी कहीं उसके मन में जीने की चाहत है पर उसे यह भी ज्ञान है कि उसकी मृत्यु के बिना पांडवों की विजय संभव नहीं अतः उसे अपना अंत समीप नज़र आ रहा हैं।

2."जीवन भर मुझसे द्वेष रखा, मृत्यु पर तो मुझे चैन प्रदान होने देते, क्या देखने आए हो मेरी विवशता, या अब भी तुम्हारी छलपूर्ण विजय में कोई त्रुटि रह गई ?"

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा संपादित 'नये एकांकी' पाठ्य पुस्तक से उद्‌धृत किया गया है। इसके लेखक भारत भूषण अग्रवाल हैं। इस एकांकी में रचनाकार ने एक विवादित प्रसंग को लेकर पाठकों के सम्मुख इस बात को रखा है कि दुर्योधन द्वारा किए जाने वाले कर्म में कोई अधर्म नहीं था।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियां दुर्योधन के द्वारा युधिष्ठिर को संबोधित करके कही गई हैं। जब मृत्युशैरया पर पड़े दुर्योधन से युधिष्ठिर जब मिलने आता है। दुर्योधन युधिष्ठिर के पक्ष के वो सब छल अथवा अधर्मी कृत्यों को गिनवाता है और एक–एक कर उन पर अपनी टिप्पणी भी देता है वह कहता है कि अर्जुन को बड़ा धुनर्धर बनाने हेतु द्रोणाचार्य ने एकलण्य के साथ छल किया उसका अंगूठा मांग लिया, मुझे हराने के लिए भीम ने कृष्ण का सहारा लिया अपने ही भाई कर्ण को आपने धोखे से मारा और भी कितने धोखे किए। इसी संदर्भ में वह आगे कहता है :

व्याख्या : उपरोक्त अवतरण में जब दुर्योधन युधिष्ठिर से कहता है जीवन भर तो आपने हम कौरवों द्वेष भाव बनाए रखा और अब इस समय मुझे लगता था कि मृत्यु के समय तो मुझे चैन लेने देते जहां तक कि आपने हमें छलपूर्वक हराया है मुझे मारने के लिए भी आपने धोखे का सहारा लिया मेरी माँ (गंधारी) मेरा पूरा शरीर बज्र का बना देती पर कृष्ण ने मेरी मति फेर दी और मेरी जंघाओं का भाग वज्र नहीं बन सका। फिर कृष्ण का सहारा लेकर भीम ने मेरी जंघाओं पर प्रहार करके इस अवस्था तक पहुँचाया है। हे युधिष्ठिर अब तुम मेरी विवशता देखने आए हो या अभी भी कहीं यह तो नहीं सोच रहे कि तुम्हारी इस छलपूर्वक विजय में कोई कमी तो नहीं रह गई। कोई और कपट मन में बाकी है उसे भी पूरा कर सकते हों।

विशेष : प्रस्तुत कथनों के माध्यम से दुर्योधन के चरित्र पर प्रकाश पड़ता है। दुर्योधन की मां गंधारी शिव की परम भक्त थी उसे शिव से यह वरदान प्राप्त था कि वह जिस किसी को भी अपने नेत्रों की पट्टी खोलकर नग्नावस्था में देखेगी उसका शरीर वज्र का हो जाएगा। महाभारत के युद्ध में जब दुर्योधन शेष रह गया तो गंधारी ने उसे नग्न अपने सम्मुख बुलाया मार्ग में श्रीकृष्ण ने उसे लोकलाज का आचरण समझाया तो दुर्योधन ने अपनी जंघा पर पत्ते लपेट लिए जिसके कारण गंधारी की दृष्टि वहां नहीं जा सकी और दुर्योधन की जंघाए वज्र नहीं हो सकी।

3."यही तो मुझे दुःख है युधिष्ठिर कि तथ्य तक पहुँचने की किसी ने भी चेष्टा नहीं की। एक अन्याय की प्रतिष्ठा के लिए इतना ध्वंस किया, और सब अंधों की भांति उसे स्वीकार करते गये।"

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा संपादित 'नये एकांकी' पाठय पुस्तक के अंतर्गत 'महाभारत की एक साँझ' से उद्धृत किया गया है। इसके लेखक भारत भूषण अग्रवाल हैं। इस एकांकी में रचनाकार ने एक विवादित प्रसंग को उठाया है और पाठकों के सम्मुख इस बात को रखा है कि दुर्योधन द्वारा किए जाने वाले कर्म में कोई अधर्म नहीं था।

प्रसंग : उपरोक्त पंक्तियां दुर्योधन द्वारा युधिष्ठिर को संबोधित करके कही गई हैं। दुर्योधन यह कहना चाहता था कि अन्याय तो उसके पिता के साथ हुआ था क्योंकि अपने पिता की मृत्यु के बाद मेरे पिता ही वास्तव में राज्य के सच्चे अधिकारी थे। उक्त संवाद इसी राज नियम को लेकर चल रहा है इसी संदर्भ में दुर्योधन का उक्त कथन है :

व्याख्या : दुर्योधन युधिष्ठिर से कहता है कि तुम्हारे पिता पाण्डु की मृत्यु के बाद राज्य पर मूल अधिकार तो उनके पिता धृतराष्ट्र का ही था क्योंकि वे बड़े थे फिर जिसे वह चाहे सत्ता सौंप सकते थे। इस पर युधिष्ठिर दुर्योधन से कहता है कि कभी किसी ने भी जैसे कि महाराज धृतराष्ट्र, भीष्म पितामह, विदुर, कृपाचार्य आदि बड़े गणमान्य महापुरुषों ने इस संदर्भ में कोई बात नहीं की । तब दुर्योधन का कहना था कि इसी बात को लेकर तो खेद है कि उस एक अन्याय के लिए जो हमारे साथ हुआ उसके मान के लिए यह कुरूक्षेत्र का युद्ध हुआ जिसमें इतना नर संहार हुआ जिसमें इस राज्य के सभी बड़े–बड़े अधिकारी और बिना देखे–सुने उसी को मानते चले गये जिसका परिणाम महाभारत के इस भीषण युद्ध के रूप में हमारी आंखों के सामने है। पर युधिष्ठिर दुर्योधन के इस तर्क को स्वीकार नहीं करता और वह कहता है कि राज्य पर वास्तव में उन्हीं का अधिकार था जिसे मानने के लिए तुम कभी तैयार नहीं हुए और उसी कारण झगड़े बढ़ते गये और अतंतः यह महाभारत का युद्ध हुआ।

विशेष : उक्त गद्यांश में दुर्योधन युधिष्ठिर को राज्य न्याय के इस तथ्य से परिचित करवाना चाहता है जो केवल उसी के अनुसार उचित है। इसमें दुर्योधन की तार्किक और कुटिल बुद्धि का भी पता चलता है।

4."मैं तुम्हारी आत्मप्रशंसा नहीं सुन सकता, इसे तुम अपने भक्तों के लिए ही रहने दो तुम विजय की डींग मार सकते हो, पर न्याय–धर्म की दुहाई तुम मत दो। स्वार्थ को न्याय का रूप देकर धर्मराज की

उपाधि धारण करने से तुम्हें संतोष मिलता है तो मिले, मेरे लिए वह आत्मप्रवंचना है, मैं उससे घृणा करता हूँ।"

संदर्भ : प्रस्तुत अवतरण हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा संपादित 'नये एकांकी' पाठय पुस्तक के अंतर्गत 'महाभारत की एक साँझ' से उद्धृत किया गया है। इसके लेखक भारत भूषण अग्रवाल हैं। इस एकांकी में रचनाकार ने एक विवादित प्रसंग को उठाया है और पाठकों के सम्मुख इस बात को रखा है कि दुर्योधन द्वारा किए जाने वाले कर्म में कोई अधर्म नहीं था।

प्रसंग – उक्त गद्यांश में दुर्योधन और युधिष्ठिर का संवाद है दुर्योधन युधिष्ठिर के उन गुणों की अवहेलना कर रहा है जिसके कारण उसे न्याय प्रिय और सत्यवक्ता कहा जाता है क्योंकि वह युधिष्ठिर से ईर्ष्या करता है।उसे लगता है कि न्याय और धर्म के मार्ग की कसौटी पर वह खरा नहीं उतरता। अतः वह युधिष्ठिर से कहता हैः

व्याख्या :– जब युधिष्ठिर दुर्योधन से कहता है कि उसने सदा न्याय ही किया है और न्याय हेतु उसने बड़े–बड़े दुख उठाए है जहाँ तक उसने अपने सगे–सम्बन्धियों को अपने नेत्रों के सम्मुख तड़पते हुए प्राण त्यागते देखने पर भी न्याय को बदला नहीं है। लोगों के चीखों–पुकार के ह्रदयविदारक दृश्यों ने भी उसकी धर्म और न्याय के प्रति आस्था को गिरने नहीं दिया है तब क्रोधित होकर दुर्योधन कहता है कि वह अपनी प्रशंसा स्वयं कर रहा है और मैं उसे सुनना नहीं चाहता। अपनी इस जीत की डीगें तथा न्याय और धर्म की बातें केवल अपने प्रशंसकों के लिए छोड़ दो। तुमने अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए जो माने ढंग से न्याय किया उसी से तुम्हें धर्मराज की उपाधि मिली तुम्हें तो शायद इससे संतोष मिलता होगा पर मुझे तो इसमें भी तुम्हारा छल, धोखा देने को भाव ही नज़र आता है और मैं इस सब से घृणा करता हूँ।

विशेष :– वास्तव में दुर्योधन युधिष्ठिर के धर्म और न्यायप्रिय स्वभाव को छल या धोखा बता रहा है जो कि उसका अपना स्वभाव है वास्तव में वह युधिष्ठिर के गुणों को और उसके विशाल व्यक्तित्व से घृणा करता है इसलिए वह उसकी भलाई को सहन नहीं कर सकता।

6.3 एकांकी 'बसंत' : प्रसिद्ध व्याख्याएँ

1."मैं वह हूँ जो मलय–समीर के हर झोंके में आकर तुम्हारी अलकों को सहला जाता हूँ। सरसों के फूलों में मेरा ही रंग खिलता है, आम्रमंजरी में मेरा ही आह्लाद उमगता है।"

संदर्भ :– प्रस्तुत अवतरण हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा संपादित एकांकी संग्रह 'नये एकांकी' में से 'बसंत' एकांकी से लिया गया है इसके रचनाकार भी अज्ञेय हैं। इस एकांकी में एकांकीकार ने बसंत के आगमन और उसके मानव शरीर व मानव मन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

प्रसंग :– उक्त पंक्तियां बसंत–1 द्वारा नायिका मालती को कही गई है इन वाक्यों में बसंत प्रकृति के कण–कण पर अपने आगमन का प्रभाव बड़ी सरलता और सहजता से कर रहा है। बसंत का कथन है :

व्याख्या :– युवा बसंत अपना परिचय देते हुए कहता है कि वह प्रकृति में इस प्रकार समाहित है कि उसके आगमन पर प्रकृति की प्रत्येक क्रिया–प्रतिक्रिया में उसका प्रभाव दृष्टिगत होता और वह मानवों को भी प्रभावित करता है। अतः वह मालती से कहता है कि मलय पर्वत से आने वाली चंदन मिश्रित हवा का प्रत्येक झोंका जब उसे प्रसंन करता है तो उसमें मैं ही रहता हूँ। मैं अपनी मंद सुगन्धित वायु से तुम्हारी अलकें सहला जाता हूँ। सरसों के फूलों में जो पीलापन है वह भी मेरा ही रंग है अर्थात् वसंत के मौसम में सरसों फूल जाती है खेतों में लहराती हुई सरसों बसंत के आने का एहसास दे जाती है। इसी मौसम में आमों में फल लगना शुरु हो जाता है और आम आम्रमंजरियों से भर जाते हैं। बसंत स्त्री से कहता है कि आम्रमंजरियों को देखकर जो प्रसन्नता और खुशी होती है उसका कारण भी मैं ही हूँ।

विशेष :– इन पंक्तियों के माध्यम से रचनाकार यह बताना चाहता है कि बसंत के आने पर ही प्रकृति जब नव श्रृंगार करती है सजती–संवरती है और वही व्यक्ति के मन को प्रसन्न करने का कारण भी है। इसमें बसंत–1 मालती के पुत्र का प्रतीक भी है।

2.''मैं भी तुम्हारे जीवन का स्वप्न हूँ। मैं तुम्हारा अतीत हूँ और अतीत का अनुभव! क्या आने वाले कल की आशा ही स्वप्न होती है, क्या जो आशाएं बीत गई वे स्वप्न नहीं हैं।''

संदर्भ :– प्रस्तुत अवतरण हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा संपादित एकांकी संग्रह 'नये एकांकी' में से 'बसंत' एकांकी से लिया गया है इसके रचनाकार भी अज्ञेय हैं। इस एकांकी में एकांकीकार ने बसंत के आगमन और उसके मानव शरीर व मानव मन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

प्रसंग :– उक्त अवतरण में बसंत–2 और मालती का संवाद है। एकांकीकार ने बसंत 2 को उसके पति का प्रतीक बताया है जिसके साथ उसके जीवन की दीर्घ अवधि कटी है। बसंत 2 अर्थात जो जीवन में पहले रहा है जिसके साथ अभी भी जीवन गतिमान है। बसंत 2 स्त्री को उसके सुनहरी स्वप्नों के सत्य के विषय में बता रहा है।

व्याख्या :– बसंत 2 स्त्री से कहता है कि कभी तुमने मेरा भी स्वप्न लिया था और जब तुम्हारा वह स्वप्न पूरा हो गया तो मैं तुम्हारा अतीत बन गया पर अतीत से अनुभव लेकर ही व्यक्ति आगे बढ़ता है। दूसरा जब भूतकाल में आशाएं पूरी हो जाती हैं तो क्या उन्हें स्वप्न नहीं कहा जाता वह भी मनुष्य जीवन का स्वप्न ही होता है जिनकों पाने के बाद वह जीवन रूपी सीढ़ी पर अगला कदम रखता है। अतः बसंत दो कहता है कि क्या आने वाले कल की आशा की पूर्ति लिए स्वप्न लेना ही स्वप्न नहीं है बल्कि अतीत की आशाओं की पूर्ति भी तो कभी स्वप्न रही होगी।

विशेषः— प्रस्तुत गद्यांश के माध्यम से रचनाकार यह स्पष्ट करना चाहता है कि व्यक्ति मन सदैव आशाओं और उम्मीदों के स्वप्न बुनता रहता है और उनकी पूर्ति में लगा रहता है। पर आशा की पूर्ति का अर्थ यह नहीं कि वह कभी स्वप्न नहीं था अतः केवल भविष्य की आशा ही स्वप्न नहीं होती। हर समय जो बीत रहा है और जो आने वाला है व्यक्ति के स्वप्नों का परिणाम है।

3."थकते तो मर्द है, स्त्री कभी नहीं थकती है? काम और विश्राम यह मर्दो की ईजाद है। स्त्रियां विश्राम नहीं करती, क्योंकि वे शायद काम भी नहीं करती। वे कुछ करती ही नहीं—वे शायद सिर्फ होती ही हैं। बालिका से किशोरी, कुमारी से पत्नी, बेटी से माँ, एक निस्संग आत्मा से परिगृहीत कुनबा— वे निरन्तर कुछ न कुछ होती ही चलती हैं।"

संदर्भ :— प्रस्तुत अवतरण हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा संपादित एकांकी संग्रह 'नये एकांकी' में से 'बसंत' एकांकी से लिया गया है इसके रचनाकार भी अज्ञेय हैं। इस एकांकी में एकांकीकार ने बसंत के आगमन और उसके मानव शरीर व मानव मन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

प्रसंग :— उपरोक्त पक्तियां एकांकी 'बसंत' की नायिका मालती द्वारा अपने पति को संबोधित करके कही गई हैं। जब नायिका के पति को उसकी खीझ, सूनेपन व थकावट का एहसास होता है तो वह उसे सांत्वना देते हुए कहता है कि चाहे उसकी नौकरी से समय नहीं मिलता है फिर भी वह उसे घूमाने ले जाएंगा। क्योंकि वह मालती के वास्तविक उलझन को समझ जाता है। तब उसी का उत्तर देते हुए मालती कहती है :

व्याख्या :— मालती का कहना है स्त्रियां घर—परिवार चलाती हैं और उसे चलाते हुए वे कभी थकती नहीं है क्योंकि घर का काम उनके किसी काम में नहीं आता पर पुरुष जो काम करते हैं वही काम है उसी का मूल्य है इसलिए थकना और विश्राम दोनों भी मर्दों ने ही बनाया है। पुरुष वर्ग की यह सोच है कि गृहिणियां कुछ नहीं करती इसलिए न तो उन्हें विश्राम की आवश्यकता है और न किसी अन्य मन बहलाव की क्योंकि वो तो पुरुषों के इस समाज में अस्तित्व ही नहीं रखती पर पैदा होते ही उसके सम्बन्ध तीव्र गति से एक से अनेक बनते जाते हैं जिसके कारण परिवार और समाज में उसकी भूमिकाएं बदलती चली जाती है। एक स्त्री पैदा होते ही बेटी है फिर युवा होते किशोरी बन जाती है फिर पत्नी, फिर मां और मां से पूरा परिवार, परिवार से कुल की मार्यादाएं सब उसी से होती चली जाती हैं वह जन्म से ही उसके संबंध बनते चले जाते हैं और वह परिवार के लिए अपना सब कुछ समर्पित करती चलती जाती है।

विशेष :— प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा लेखक ने स्त्री जीवन की विडम्बना पर प्रकाश डाला है और यह बताने का प्रयास किया है कि जिस कुल के लिए वह अपना पूरा जीवन समर्पित करती हुई चली जाती है उसी परिवार में जब उसके परिश्रम का कोई मूल्य नहीं पड़ता और यही स्त्री जीवन का सत्य है। सृष्टि उसी से चलती है पर उसके लिए किसी को चिंता नहीं।

4.''यह तो उन दोनों ने कहा था .... वह कहता था, मैं आशा हूँ, बसंत मैं हूँ। यह कहता था, मैं अनुभव हूँ, बसंत मैं हूँ। मुझे तो किसी ने नहीं कहा कि बसंत तुम हो–फुलों का खिलना भी और पतझड़ भी..... समीर भी और धूल का झक्कड़ भी.....''

संदर्भ :– प्रस्तुत अवतरण हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा संपादित एकांकी संग्रह 'नये एकांकी' में से 'बसंत' एकांकी से लिया गया है इसके रचनाकार भी अज्ञेय हैं। इस एकांकी में एकांकीकार ने बसंत के आगमन और उसके मानव शरीर व मानव मन पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया है।

प्रसंग :– उपरोक्त पंक्तियां मालती द्वारा स्वयं को ही संबोधित करके कही गई हैं। बसंत एक व दो से बात करने के पश्चात उसे यह ज्ञान होता है कि यदि बसंत का उसके जीवन में महत्व है तो बसंत के लिए वह भी उतनी ही महत्वपूर्ण है यदि वह नहीं है तो बसंत का प्रभाव किस पर होगा इसी के संदर्भ में वह स्वगत कथन करती हुई कहती है :

व्याख्या :– स्त्री सोचती है कि बसंत एक ने कहा था कि बसंत वह है क्योंकि वह उसके जीवन में खुशियां लाया है जिससे उसके जीवन में उल्लास का वातावरण बना है जबकि बसंत दो कहता था कि बसंत वह है क्योंकि उसको उसके साथ जीवन जिया है बहुमूल्य अनुभव अर्जित किए है क्योंकि एक पहले से उसके जीवन में प्रवेश पा चुका था और दूसरा जीवन की नई खुशियां लेकर आया है। तभी मालती सोचती है कि इन दोनों के बीच क्या उसका कोई स्थान नहीं है। उसे किसी ने कहा हम ऋतुओं की सार्थकता तो उसके साथ है क्योंकि फूलों का खिलना भी उसी के कारण सार्थकता पाता है और पतझड़ भी क्योंकि पतझड़ के बाद ही बसंत लहलहाता है। वह जीवन की शीतल मंद सुगन्धित हवा का झोका है और उसी के साथ धूल का झंझावत तूफान है अर्थात् प्रकृति की क्रिया प्रतिक्रिया में उसे उसकी भी महत्वपूर्ण भूमिका है जिसे कोई ठुकरा नहीं सकता। कहो या न कहो मेरे बिना बसंत की पूर्णता नहीं है। अर्थात् यदि बसंत एक उसके पुत्र का प्रतीक है और बसंत दो पति का पर यह संबंधता केवल उसी से संभव हो पाए हैं।

विशेष :– इन पंक्तियों के द्वारा एकांकीकार ने स्त्री जीवन के सत्य का उद्घाटन किया है कि परिवार की पूर्णता केवल उसी है जिस प्रकार की बसंत से पहले पतझड़ ही प्रकृति को पुनः खिलने फूलने के लिए तैयार करता है।

6.4 अभ्यार्थ प्रश्न

निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या लिखिए।

1. वह कहता था, ''मैं मलय समीर में रहता हूँ और कोयल के स्वर से पुकारता हूँ। कहता था, वह सरसों के फूल के रंग में है। नहीं, वह कहता था मैं पतझड़ हूँ और धूल का झक्कड़ और निराशा।''

....

....

....

....

2. ''मैं सोचती हूँ, यह 'याद' भी मर्दों की ही ईजाद है। उनके लिए भूलना इतना सहज सत्य जो है।''

....

....

....

....

3. ''सच है कायर और पराजित ही अंत में धर्म का स्मरण करते हैं।''

....

....

....

....

4. ''मेरे मन में कोई पश्चाताप नही है मैंने कोई भूल नहीं की मैंने भय से तुम्हारी शरज नहीं मांगी।''

....

....

....

....

6.5 संदर्भित पुस्तकें

1. नए एकांकी, संपादक हीरानंद सच्चिदानंद वात्स्स्यायम अज्ञेय,

डॉ॰ सुनीता शर्मा,
सह आचार्य, हिन्दी विभाग,
गुरूनानक देव, विश्वविद्यालय,अमृतसर

एकांकी अर्थ एवं स्वरूप

7.0 रूपरेखा

7.1 पाठ का उद्देश्य

7.2 एकांकी : अर्थ

7.2.1 एकांकी : परिभाषा

7.2.2 नाटक एवं एकांकी : साम्य वैषम्य

7.2.3 एकांकी : तत्व

7.2.4 एकांकी : वर्गीकरण

7.3 अभ्यासार्थ प्रश्न

7.4 संदर्भित पुस्तकें

7.1 पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत

1 विद्यार्थी एकांकी विधा का परिचय प्राप्त कर सकेंगे।

2 एकांकी के तत्वों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।

3 एकांकी के विभिन्न प्रकारों से परिचित होंगे।

4 नाटक तथा एकांकी के अंतर को जान सकेंगे।

आधुनिक हिन्दी साहित्य की जिन गद्यात्मक विधाओं का विकास विगत एक शताब्दी में हुआ है, उनमें एकांकी का भी महत्वपूर्ण विधा है। परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से हिन्दी साहित्य में इसका उद्भव उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम चरण से माना जाता है। एकांकी का आरम्भ भारतेन्दु द्वारा माना जाता है। आधुनिक समय में मानव के पास इतना समय नहीं है कि वह बड़े–बड़े नाटकों, उपन्यासों, महाकाव्यों आदि को सम्पूर्णतः पढ़ सके। इसलिए गीत, कहानी, एकांकी आदि साहित्य के लघुरूपों की रचना हुई है और इन्हें सैद्धांतिक दृष्टि से अपनाया जा रहा है। एकांकी का क्या स्वरूप है आगे इस पर प्रकाश डाला जा रहा है :

7.2 एकांकी : अर्थ :– (एक + अंक + की) अर्थात् जिन्दगी की कोई एक कथा। एकांकी एक अंक का दृश्यकाव्य है जिसमें एक कथा तथा एक उद्देश्य को कुछ पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है।

एकांकी दृश्य काव्य का भेद है। एकांकी ऐसी नाट्य विधा है जो एक अंक में रचित होती है। एकांकी में कई दृश्य हो सकते हैं किन्तु उसमें एक ही अंक, एक ही कार्य व एक ही समस्या होती है। एकांकी न तो नाट्य का संक्षिप्त रूप है न ही नाटक का एक अंक है। यह स्वयं में पूर्ण एवं स्वतंत्र विधा है। इसमें पात्रों की संख्या सिमित होती है। किन्तु इसमें एक प्रधान पात्र होता है। अन्य गौण पात्र रहते हैं। एकांकी नाटक दर्शकों पर एक प्रभाव छोड़ता है जो पूर्ण व गहन होता है। भिन्न भिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने एकांकी को अपने विचारानुसार पारिभाषित किया है जिन पर आगे प्रकाश डाला जा रहा हैः

7.2.1 एकांकी : परिभाषा :—

1. **हिन्दी साहित्य कोशः** "एकांकी नाटक साहित्य का वह नाट्य–प्रधान रूप है, जिसके माध्यम से मानव जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक कार्य, एक पार्श्व, एक भाव की ऐसी कलात्मक व्यजंना की जाती है कि ये एक अविकल भाव अनेक की सहानुभूति और आत्मीयता प्राप्त कर लेता है।''
2. **रामकुमार वर्मा के अनुसार,** ''एकांकी नाटकों में एक घटना होती है। वह घटना नाटकीय कौशल से कौतुहल का संचय करते हुए चरम सीमा तक पहुंचती है। उसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। एक एक वाक्य और एक–एक शब्द प्राण की तरह आवश्यक होते हैं।''
3. **उपेन्द्रनाथ अश्क के अनुसार** – ''बड़े नाटक की तुलना में एकांकी जीवन के एक अंक का पृथक, विच्छिन्न चित्र उपस्थित करता है। जीवन की एक झांकी मात्र देता है। विभिन्नता के बदले एकीकरण, फैलाव के बदले सिमटाव, विस्तार के बदले संक्षिप्तता इसके गुण हैं। एकांकी लेखक किसी मूलभूत विचार को उसकी समस्त संभावनाओं के साथ व्यक्त नहीं करता, उसका संकेत मात्र करता है।''
4. **डॉ. नगेन्द्र के अनुसार** '' एकांकी में हमें जीवन का क्रमबद्ध विवेचन न मिलकर उसके एक पहलू, एक महत्वपूर्ण घटना, एक विशेष परिस्थिति अथवा उद्दीप्त क्षण का चित्र मिलेगा। उसके लिए एकता व एकाग्रता अनिवार्य है।''
5. **गोविन्द त्रिगुणायत के मतानुसर** "एकांकी वह लघु नाटय रूप है जिससे एक परिस्थिति एक घटना या एक भावना जनित संवेदना की अभिव्यक्ति किसी संघर्ष के सहारे चाहे वह बाह्य हो या अभ्यान्तर अभिनयात्मक शैली में इस प्रकार की जाती है कि उसमें प्रभाव ऐक्य का उद्बोध हो और उस उद्बोध से दर्शक और पाठक दोनों की रागात्मक वृत्ति तिलमिलाकर तड़प उठती है।''
6. **सिडनी बोकस के अनुसार** 'एकांकी ऐसी विधा नहीं है जिसमें चरित्रांकन के लिए अधिक अवसर हों। उद्देश्य की कठोर एकता पर ही इतना सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित होने के कारण यह विधा एकांकीकार पर कठोर अनुशासन लागू करती है। इसका लक्ष्य एक प्रभाव उत्पन्न करना, एक

स्थिति रचित करना और एक चरित्र या एक छोटे से चरित्र समूह पर ही अपना सम्पूर्ण ध्यान केन्द्रित करना होता है।''

7. **पिकर्ड ईटनः–** अपनी प्रकृति के अनुरूप तथा शिल्प सम्बन्धी कठोर नियन्त्रण के परिणामस्वरूप एकांकी को किसी एक ही घटना या स्थिति तक स्वयं को सीमित रखना अनिवार्य होता है। यही स्थिति स्वयं अपने अन्दर से अपना विकास और प्रकार प्राप्त करती है।

इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है, कि एक अंक की इस विधा में जीवन का एक पहलू एक महत्वपूर्ण घटना, एक विशेष परिस्थिति अथवा एक क्षण, एकता, एकाग्रता और आकस्मिकता की अनिवार्यता, संकलनत्रय का साधारण परिपालन होता है, इसमें एकांकीकार जीवन के किसी एक प्रसंग को अपना विषय बनाकर सघनता और अन्विति से दर्षकों को दस मिनट से लेकर पैंतालीस अथवा साठ मिनट की अभिनय अवधि में ही अपेक्षित प्रभाव डालता है।

7.2.2 नाटक और एकांकी : साम्य वैषम्य

नाटक और एकांकी दोनों स्वतन्त्र नाट्य विधाएं हैं। साम्य की दृष्टि से दोनों नाट्य विधाओं का आकर्षणपूर्ण और रोचकतापूर्ण होना आवश्यक है , अन्यथा न तो कथा ही रोचकता के साथ दर्शक के सम्मुख आएगी और न कुशल अभिनय के द्वारा विस्मय की सर्जना ही हो सकेगी। उनमें अर्न्तदृष्टि उपस्थित करते समय भी एकांकीकार और नाटककार को ऐसी पटुता की आवश्यता होती है कि पाठ्क या दर्शक दोनों स्वयं विचारों के द्वन्द में पड़ जाए। एकांकी में कलाकार का कौशल इस बात में रहता है कि मार्मिक स्थल सब कथोपकथन में आ जाए। यही उसकी सफलता का मूल कारण है।

वैषम्य की दृष्टि से एकांकी में एक अंक होता है ,जबकि नाटक अनेक अंकों पर आधारित नाट्य विद्या है। एकांकी में घटना की एकता अनिवार्य है, जबकि नाटक में एक से अधिक कथा, उपकथा, घटना आदि हो सकती हैं। एकांकी में चरित्रों के क्रमिक तथ धीमे विकास की सुविधा नहीं होती। तेज गति से चरित्र के वांछित पक्ष के निदर्शन के बाद कार्य को परिणति की ओर अग्रसर करना लक्ष्य होता है। इसके विपरीत नाटकों में चरित्रों के जीवन के विविध पक्षों को जीवनानुभव के घात – प्रतिघात को क्रमशः विकसित किया जाता है। एकांकी आरम्भ से ही अपनी परिणति की ओर तेज गति से बढ़ता है, जबकि नाटक में विकास क्रिया धीमी होती है। एकांकी के कथानक में घनत्व और केन्द्रीयता का तत्व विद्यमान रहता है। समस्त जीवन के एक घण्टे के संघर्ष में और वर्षो की घटनाएं एक आंसू यां एक मुस्कान में उभर आती हैं, वे चाहे सुखान्त हो या दुःखान्त / नाटक में इस दृष्टि का अधिक विस्तार होता है। द्वन्द की दृष्टि से भी एकांकी बहुत गतिशील विधा है। इसके कथोपकथन नाटक की अपेक्षा अधिक चुस्त होते हैं। नाटकों में घटना–प्रवाह और चरित्रिक विकास में काफी उतार– चढाव और विविधता पाई जाती है जबकि एकांकी में ये दोनों तत्व तेज दौड़ की तरह अपने गंतव्य की ओर उन्मुख होते हैं।

7.2.3 एकांकी : तत्व :–

1. **कथावस्तु :–** एकांकी के कथानक में एकीकरण की अन्तः प्रेरणा ही प्रमुख है। एकांकीकार अपने स्वभाव, रूचि–अरूचि और जीवन दर्शन के अनुसार किसी भी क्षेत्र से कथानक के विषय चुनने में स्वतन्त्र है। किन्तु एकांकी के कथानक का विस्तार अनेक अंकों वाले नाटक के समान नहीं होता। उसमें कथानक को इस कौशल से संवारकर कथावस्तु का संघटन किया जाता है कि उसमें एकाग्रता, उतेजना, सावधानता और उद्देश्योन्मुखता आ जाती है। वस्तु की यह संघटन क्रिया दुरूह नहीं होती। इसमें कार्य का आरम्भ होने पर ही परिणति की अवस्था आ जाती है। एकांकी का लक्ष्य कार्य को आकस्मिक चरम स्थिति पर पहुंचाना रहता है।
2. **पात्र चरित्र– चित्रण :–** एकांकी में पात्रों की संख्या पांच छः से अधिक नहीं होती। उसमें मुख्य और गौण दोनों प्रकार के पात्र रखे जा सकते हैं। साहस, प्रणय और वीरता की कहानी में नायक के साथ प्रतिनायक की परिकल्पना भी एकांकी को प्रभावशाली बना देती है। पात्रों में से किसी को विदूषक बना दिया जाता है या उसकी अपेक्षा न समझी गई तो कुछ पात्रों के संवाद में ही हास्य, विनोद, व्यंग्य की सामग्री प्रस्तुत कर दी जाती है। पात्रों का सजीव, व्यक्तित्वभान और आकषर्णपूर्ण होना आवश्यक है नहीं तो कथा रोचकता के साथ दर्शकों को प्रभावित नहीं कर पाएगी। एकांकी में चरित्र–चित्रण का निर्माण पात्र के संस्कार, मनोविज्ञान और वातावरण के अनुसार होना उचित है।
3. **संवाद या कथोपकथन :–** एकांकी में संवादों के द्वारा ही कथा और चरित्र के स्थल सम्मुख लाए जाते हैं, अतः संवाद एकांकीकार के शिल्प कौशल का प्रधान तत्व है। स्वभाविकता, संक्षिप्तता, रोचकता, प्रभावोत्पादकता संवाद के उत्कर्ष– विधायक गुण हैं। संवाद की भाषा का निर्णय पात्रों की जाति, गुण, कर्म, स्वभाव, मनोवृत्ति, कथा की प्रकृति तथा उद्देश्य की स्थिति पर निर्भर रहता है, उसकी भाषा के वाक्यों में सरलता, सुबोधता, प्रभावपूर्णता तथा शब्दों में अव्यर्थता और मितव्ययिता का होना अपेक्षित है। पात्रों के गूढ़ आन्तरिक मनोभावों को व्यक्त करने के लिए किसी दृश्य या वस्तु की परिकल्पना या प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व का सहारा लिया जाता है।
4. **देश काल तथा वातावरण :–** एकांकी का फलक सीमित होता है, अतः देश काल और वातावरण के वैविध्य की तो इतनी अपेक्षा नहीं होती, पर सघन प्रभाव की दृष्टि से जिस स्थान तथा जिस परिवेश में घटना का सृजन और विकास होता है उसमें यथार्थता, विश्वसनीयता एवं घनत्व अनिवार्य है। कार्य– स्थिति, पात्र– परिस्थिति और काल सापेक्षता के अनुकूल समग्र वातावरण का निर्माण अनिवार्य है। परिवेश में एक भी कथागत, संवादगत अथवा चरित्रगत भूल समग्र प्रभाव को खण्डित कर सकती है। संकलनत्रय की सफलता अथवा विफलता का आधार उपयुक्त देशकाल एवं वातावरण का सृजन ही है।
5. **उद्देश्य :–** प्रभाव की एकता एकांकी का केन्द्रीयतत्व है एकांकी की कथा, संवाद और पात्र– योजना का सम्पूर्ण ढांचा इस एकान्तिक प्रभाव के दृष्टिगत ही संगठित होना चाहिए। लेखक एक घटना के माध्यम से एक विचार, एक भाव, एक प्रभाव, एक समाधान प्रस्तावित करना चाहता है। सुख अथवा आनन्द से समन्वित यही भाव सम्पूर्ण एकांकी संयोजन का प्रेरक तत्व

है। अपनी सीमित और परिचित परिधियों के कारण ही एकांकी की सफलता अवलम्बित होती है।

6. **संकलनत्रय :–** कार्य, समय तथा स्थल की एकता को संकलन– त्रय कहा जाता है। एकांकी में जो घटना दिखाई जाए उसका सम्बन्ध एक ही स्थान से हो अर्थात ऐसा न हो कि एक दृश्य आगरा का हो तो दूसरा दृश्य कलकता का इसी को स्थल की एकता कहते हैं। जो घटना एकांकी में दिखाई जाए वह वास्तव में उतने समय की हो जितना कि उसके अभिनय में लगता हो इसे समय की एकता कहते हैं। ऐसा करने से वास्तविक समय का रंगमंच के समय के साथ ऐक्य हो जाता है। कथावस्तु एकरस होनी चाहिए। इस एकरसता को निभाने के लिए प्रासंगिक कथाओं को स्थान नही मिल सकता इसे कार्य की एकता कहते हैं।

7 **अभिनय :–** एकांकी का यह अत्यन्त महत्वपूर्ण तत्व है। रचना का सम्पूर्ण आयोजन उसकी मंच पर प्रस्तुति अभिनेयता करती है। रंगमंच का भरपूर प्रयोग आवश्यक है। अभिनय की सफलता के लिए सार्थक वातावरण, मंच– योजना, प्रकाश व्यवस्था तथा कलात्मक सज्जा आवश्यक है। अभिनेयता को निखारने के लिए और कथा, चरित्र, संवाद का संयुक्त प्रभाव बढ़ाने के लिए एकांकीकार रंग–संकेतों का प्रयोग करता है।

8 **भाषा–शैली :–** अभिनयात्मक विधा होने के कारण एकांकी में भाषा का महत्व कहानी उपन्यास से अधिक होता है। नाटक से भी इसमें एक अर्थ से भेद है क्योंकि एकांकी में समय और अवसर बहुत सीमित होता है। सीमित पात्र, सीमित काल तथा सीमित कार्य में एकांकीकार को अपना लक्ष्य सिद्ध करना होता है। अतः भाषा स्पष्ट, सन्तुलित, अकृत्रिम और स्वाभाविक होनी चाहिए। विषय और पात्र की अनुकूलता प्रयुक्त भाषा की शब्दावली, वाक्यविन्यास और मुहावरे भाषा के निर्धारक तत्व है।

7.2.4 एकांकी : वर्गीकरण :–

विविध तत्त्वों की वरीयता के आधार पर एकांकी का वर्गीकरण निम्नलिखित आधारों पर सम्भव है।–

1 **विषय के आधार पर पर एकांकी का वर्गीकरण :** विषय के आधार पर सात प्रकार के एकांकियों की रचना की जाती है–

- **सामाजिक :–** समाज की समस्याओं और संघर्षो के चित्रण करने वाले एकांकी सामाजिक कहलाते हैं। जैसे 'रीढ की हड्ड़ी', एक दिन आदि एकांकी इसी प्रकार के उदाहरण है जैसे
- **पौराणिक :–** पौराणिक आधार पर लिखे गए एकांकी इस वर्ग में आते हैं। उदयशंकर भट्ट तथा सेठ गोविंददास ने पौराणिक एकांकी रचना में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- **ऐतिहासिक :–** इतिहास के विषय को आधार बना कर लिखे जाने वाली एकांकी ऐतिहासिक कहलाते हैं। रामकुमार वर्मा, हरिकृष्ण प्रेमी आदि ने ऐतिहासिक एकांकी लिखे हैं।
- **राजनीतिक :–** राजनीतिक गतिविधियों और राजनेताओं की मनोवृत्तियों पर आधारित विषय वाले एकांकी इस वर्ग में आते हैं।
- **सांस्कृतिक :–** जिन एकांकियों का विषय संस्कृति से सम्बन्धित होता है। उन्हें सांस्कृतिक एकांकी कहते है। जैसे रामकुमार वर्मा का 'प्रतिशोध' एकांकी।
- **दार्शनिक :–** दर्शन के विषय पर आधारित एकांकियों को दार्शनिक एकांकी कहते हैं। जैसे रामकुमार वर्मा, का, 'अन्धकार' एकांकी।
- **जनपदीय :–** किसी जनपद या अंचल विशेष के विषय पर लिखे गए एकांकी जनपदीय एकांकी कहलाते हैं। जैसे सूर्यकरण पारीक का 'बोलाकण' एकांकी आदि।

2 मूल प्रवृत्तियों के आधार पर एकांकी का वर्गीकरण :–

- **आलोचक एकांकी :–** जिसमें मानव जीवन की कमियों की आलोचना की जाती है उसे आलोचक एकांकी कहते हैं।
- **भावुक एकांकी :–** इसमें जीवन और समाज की विवेचना भावुकतापूर्ण ढंग से की जाती है।
- **विवेकवान :–** इसमें वाद–विवाद द्वारा किसी भाव या विषय की आलोचना– प्रत्यालोचना की जाती है।
- **समस्या एकांकी :–** इसमें जीवन और समाज की किसी आधारभूत समस्या को लेकर कथावस्तु चित्रित की जाती है समस्या एकांकी की श्रेणी में आते हैं।
- **व्याख्यामूलक एकांकी :–** इसमें किसी विषय की व्याख्या की जाती है।
- **आदर्शमूलक एकांकी :–** इसके रचना विधान का उद्देश्य किसी विशिष्ट आदर्श का प्रतिपादन करना होता है।
- **प्रगतिवादी एकांकी :–** जीवन की सामान्य प्रगतियों का उल्लेख करने वाली नाटकीय रचना वाले एकांकी इसके अन्तर्गत आते हैं।

3 रचना– विधान के आधार पर एकांकी का वर्गीकरण

- **सुखान्त एकांकी :–** इस प्रकार के एकांकियों में संघर्ष एवं दुख– भाव रहते हुए भी अन्त आनन्ददायक सुखद वातावरण में होता है।
- **दुःखान्त एकांकी :–** इस प्रकार के एकांकी में दुख की छाया प्रायः आरम्भ से ही स्पष्ट होने लगती है। दुखद घटनाओं से पूर्ण संवेदना का चित्रण इनमें रहता है और अंत भी दुखद होता है।

- **प्रहसन एकांकी :—** हास्य—विनोद युक्त एकांकियों में हास—परिहास के अतिरिक्त सुधार की भावना भी अन्तर्निहित रहती है। जैसे उदयशंकर भट्ट का 'नेता' हरिशंकर शर्मा का 'चिड़ियाघर से संवाद' आदि
- **फैंटेसी एकांकी :—** रोमांचक विषय— वस्तु को लेकर कल्पना के सहयोग से अलौकिक तथा स्वप्निल स्थितियों को नाटकीयता के परिवेश में प्रस्तुत करने वाला एकांकी 'फैंटेंसी' एकांकी कहलाता है।
- **गीतिनाट्य :—** इसमें संवाद गद्य में न होकर पद्य में होते हैं। काव्यात्मकता और भावुकता का समावेश इसका मुख्य लक्षण हैं।
- **झांकी :—** एक ही अत्यन्त संक्षिप्त किन्तु भाव — प्रवजना का दृश्य इसमें तीव्र गति से प्रस्तुत किया जाता है। संकलनत्रय का पालन भी किया जाता है।
- **संवाद :—** इसे संभाषण भी कहते हैं। इसमें पात्रों की संख्या दो ही रहती है। दोनों पात्र संवाद द्वारा किसी विशेष सिद्धान्त पर बातचीत करके उसका प्रतिपादन करते हैं। इसे 'एकांकी— रूपक' भी कहा जाता है।
- **एकपात्रीय एकांकी :—** इसे अंग्रेजी में 'मोनोड्रामा' कहा जाता है। इसमें एक ही पात्र रहता है। वह प्राय आप बीती घटना को सम्वादात्मक रूप मे अकेला ही प्रकट करता है। एक ही पात्र कई बार दो या से अधिक पात्रों के सम्वाद भी बोलता है। जैसे— सेठ गोविन्ददास के 'चतुष्पथ' एकांकी
- **रेड़ियो एकांकी :—** इसमें पात्र सामने नहीं होते केवल ध्वनि ही सुनी जाती है। ये ध्वनियां इतनी सशक्त और विषय तथा भावना के अनुरूप होती है कि श्रोता को प्रत्यक्ष जैसी अनुभूति होने लगती है। इनकी लेखन विद्या अत्यन्त सूक्ष्म होती है।

इस प्रकार कला की वक्रता, अभिनय की सफलता, बात कहने की कुशलता, मन के रहस्यों और विचारों को सूक्ति एवं व्यंजना शैली में व्यक्त करन वाले सशक्त हिन्दी एकांकियों का लेखन पिछले कई वर्षो से पर्याप्त विकास हुआ है। आज सामाजिक, राजनैतिक, मनोवैज्ञानिक, हास्य—व्यंग्य , धार्मिक, ऐतिहासिक व पौराणिक सभी प्रकार के एकांकी लिखे जा रहे हैं। मोनोड्रामा फैन्टसी, रेड़ियो— रूपक तथा अन्य कई रूपों में भी एकांकी का विकास हुआ है। पर अभी भी इस क्षेत्र में विकास की संभावनाएं हैं।

7.3 अभ्यासार्थ प्रश्न

1 एकांकी का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

....

....

....

....

2 एकांकी का वर्गीकरण कीजिए।

....

....

....

....

3 संकलन त्रय से आप क्या समझते हैं?

....

....

....

....

4 नाटक और एकांकी में साम्य–वैषम्य पर प्रकाश डालिए।

....

....

....

....

7.4 सदंर्भित पुस्तकें :–

1. बाबू गुलाबराय, काव्य के रूप, आत्माराम एण्ड सन्स, प्रकाशन नई दिल्ली, 1970
2. मैथिली प्रसाद भारद्वाज, पश्चात्य काव्य शास्त्र के सिद्धान्त, राधाकृष्ण प्रकाशनः नई दिल्ली, 1965
3. सत्येन्द्र, हिन्दी एकांकी : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली 1922
4. शिवदान सिंह चौहान, साहित्यानुशीलन, आत्मा राम एंड सन्ज, दिल्ली, 1974
5. उमाकान्त, एकांकी परिभाषा, स्वरूप , वर्गीकरण एवं विकास , नेशनल पब्लिषिंग : हाउसः दिल्ली, 1949

डॉ॰ सुनीता शर्मा,
सह आचार्य, हिन्दी विभाग,
गुरूनानक देव, विश्वविद्यालय,अमृतसर

एकांकी 'वसंत' तथा 'महाभारत की एक साँझ' का प्रतिपाद्य एवं पात्र चरित्र–चित्रण

8.0 रूपरेखा

8.1 पाठ का उद्देश्य

8.2 'वसंत' एकांकी का प्रतिपाद्य

8.3 वसंत' एकांकी के पात्र का चरित्र–चित्रण

8.3.1 मालती

8.4 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी का प्रतिपाद्य

8.5 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी का पात्र चरित्र–चित्रण

8.5.1 दुर्योधन

8.5.2 युधिष्ठिर

8.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

8.7 संदर्भित पुस्तकें

8.1 पाठ का उद्देश्य

1ण विद्यार्थी 'वसंत' एकांकी के मूल संदेश से परिचित होंगे।

2ण मालती की मनोव्यथा को जान पाएंगें।

3ण 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी के माध्यम से लेखक के मूल संदेश ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

4ण युधिष्ठिर तथा दुर्योधन के चरित्र के विविध पहलूओं को समझ सकेंगे।

8.2 'वसंत' एकांकी का प्रतिपाद्य

'वसंत' एकांकी सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय (7 मार्च, 1911–4 अप्रैल, 1987) द्वारा रचित है। अज्ञेय हिन्दी साहित्य में प्रयोगवादी एवं नई कविता के एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। वे एक कवि होने के साथ–साथ लेखक, पत्रकार, उपन्यासकार, नाटककार, निबंधकार एवं एक सफल आलोचक थे। एक उत्कृष्ट यात्राकार के रूप में भी अज्ञेय चर्चा का विषय रहे हैं। उनका सारा काव्य लेखन 'सदानीरा' नाम से दो खंडों में संकलित हुआ है तथा अन्य विषयों पर लिखा गया साहित्य 'निबंध

सर्जना और संदर्भ' तथा 'केंद्र और परिधि' नामक ग्रंथों में संकलित हुआ है। कई पत्र–पत्रिकाओं का संपादन करने के साथ–साथ अज्ञेय ने तारसप्तक, दूसरा सप्तक तथा तीसरा सप्तक जैसे युगांतकारी काव्य संकलनों का संपादन भी किया। ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता अज्ञेय आधुनिक हिन्दी साहित्य के श्लाका पुरुष के रूप में जाने जाते हैं।

इनके द्वारा रचित 'वसंत' एकांकी नारी मनोविज्ञान पर आधारित है जिसमें आरंभ से अंत तक नायिका के मन में कई प्रश्न उठते हैं कि आखिर वह कौन है ? वह क्या थी–फूल या मिट्‌टी ? क्या होगी मिट्‌टी या फूल। वह स्वयं से बार–बार यह प्रश्न करती है आखिर वह कौन है ? क्योंकि जन्म के साथ नारी वह कई संबंधों में गढ़ती ढलती चली जाती है– ''बालिका से किशोरी, कुमारी से पत्नी, बेटी से मां, एक निस्संग आत्मा से एक परिगृहीत कुनवा–वे निरन्तर कुछ न कुछ होती ही चलती हैं।''–

इस एकांकी में नारी उदासीनता का चित्रण भी किया गया है। वह स्त्री जो सुबह से रात तक केवल अपना परिवार देखती है परिवार के लिए ही अपना सारा जीवन समर्पित करती है पर उस घर में पुरुष केवल उसे घर चलाने वाली बाई ही समझकर उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं देता। न वह उसके स्वप्नों का सत्य जानता है और न ही उन्हें पूरा करने में सहयोग ही देता है। पूरे नाटक में वह पति की ओर से उदासीन भाव लिए रहती है। जहाँ तक उसकी अपनी संतान भी अपनी उमंगों में खोई हुई हैं। जब कि संतान मां के जीवन का आधार है।

वसंत का आगमन मन–मन की नवीन उमंगों को जागृत करता है। प्रकृति वसंत के आने पर खिल जाती है नवीन श्रृंगार कर लेती है। और मन–मन में भी नये–नये स्वप्न हिलोरे लेने लगते हैं। प्रस्तुत एकांकी में वसंत–1 और वसंत–2 नायिका मालती के जीवन के अतीत व भविष्य के प्रतीक हैं जो उसके जीवन को गति दे रहे है। वसंत–1 यदि उसका अतीत है तो उसी अतीत की सफलता के आधार पर ही वह भविष्य के स्वप्न बुनती है ताकि उन स्वप्नों की पूर्ति कर वह स्व को तलाश कर पाएगी। ˙ वसंत–1 उसके पति का प्रतीक है। यह वह स्वप्न एवं खुशियां थीं जो विवाह होने पर उसे अपने पति से मिली और वसंत–दो उसके पुत्र का प्रतीक है जिसके साथ उसका जीवन बहुरंगी हो गया है।

8.3 'वसंत' एकांकी का पात्र चरित्र–चित्रण

मालती का चरित्र–चित्रण :– मालती एकांकी 'वसन्त' की नायिका है। उसके परिवार में उसका पति व पुत्र है। वह एक कुशल गृहिणी होने के साथ–साथ एक अच्छी मां भी है। कला निपुण मालती अपने पति व पुत्र में ही अपने जीवन का विकास और सार्थकता देखती है फिर भी अपने उस भरे–पूरे परिवार में उसे लगता है अभी उसके स्वप्न पूरे नहीं हुए इसलिए अपनी संतान में उनको खोजती है। उसके चरित्र के विभिन्न पहलूओं पर निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत प्रकाश डाला जा रहा है :

1 **परिवार के प्रति समर्पण :–** मालती अपने परिवार के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है। वह अपने पति की सीमित आय के अनुरूप ही अपना घर चलाती है इसलिए प्रत्येक काम वह अपने हाथों से करती है। उक्त नाटक के आरंभ ही पता चलता है कि एक साधारण घर की महिला होने पर वह हर कार्य को बड़े प्रेम से करती है। जहां तक बर्तन साफ़ करते हुए भी वह अपने आप से बातें करती है जैसे कि उसके पति द्वारा कहीं गई इन पंक्तियों से पता चलता है :

''अगर मैं बाहर ही खड़ा रहता तो सोचता कि न जाने कौन तुमसे बातें कर रहा है। यह क्या मालूम था कि आप जूठे बरतनों से बातें कर सकती हैं।''

2 **ममतामयी माँ :–**नायिका मालती अपने पुत्र से अथाह प्रेम करती है। वह अपने पुत्र को ही अपना वसन्त समझती हुई उसमें ही अपने सुनहरी भविष्य की तलाश करती है। एक स्थान पर वह अपने बेटे से कहती है :– ''सबसे अच्छा वसन्त तू है बेटा। तू हंसता रह, बस फूल–फल.......तू मेरी सारी आज्ञाओं को, सारे अनुभवों का पौधा है, मेरा युगों–युगों का वसन्त''। यहाँ वह अपने बेटे से इतना प्रेम करती है तो दूसरी ओर उसका बेटा भी उसको ही अपना वसन्त समझता हुआ अपनी मां के लिए कहता है– हमारा वसंत तो तुम हो, मां–तुम हंसती क्यों नहीं ?

3 **अंतर्दृष्टि सम्पन्न :–** मालती भविष्य के बारे में गहरी सोच रखने वाली महिला हैं। उसके मन की दोनों भावनाएं–उसका अतीत व भविष्य पूरे नाटक से उसके साथ चलती रहती हैं। उन्हीं भावनाओं के कारण अपने अस्तित्व की तलाश में डूबी हुई वह अपने बेटे से कहती है – ''मुझमें बहुत से वसन्त हैं–कुछ मीठे, कुछ फीके, कुछ हंसते, कुछ उदास।'' वह अपने अतीत की मधुर कटु यादों के आधार पर ही भविष्य की परिकल्पनाएं करती है।

4 **कुशल गृहिणी :–** मालती प्रस्तुत नाटक में एक कुशल गृहिणी के रूप में उभरकर सामने आती है। वह घर के कामों के साथ–साथ अपने पुत्र व पति का भी ध्यान रखती है। नाटक में उसके पति को भी लगता है कि शायद वह घर के कामों से थक चुकी है। इसलिए वह एक स्थान पर कहता है :– ''मालती, मालूम होता है तुम बहुत थक गयी हो। क्या करूँ, सोचता तो बहुत दिनों से हूँ कि छुट्टी लेकर घूम आएं लेकिन कुछ मौका ही नहीं बनता।''

5 **कला निपुण :–** एकांकी में नायिका मालती एक कलाकार व गायिका के रूप में भी सामने आती है। एकांकी के आरंभ में वह गाती हुई प्रवेश करती है। लेखक के शब्दों में :–''मधुर कंठवाली एक स्त्री जो गाती हुई प्रवेश करती है। उसका स्वर आज की सिनेमा आर्टिस्ट का सधा–बाँधा स्वर नहीं है।''उसके मधुर संगीत की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है :

''फूल कांचनार के !

प्रतीक मेरे प्यार के !

प्रार्थना सी अर्धस्फुट कांपती रहे कली

पत्तियों का सम्पुट, निवेदिता ज्यों अजंली

आए फिर दिन मनुहार के, दुलार के ...फूल कांचनार के।''

6 **प्रकृति प्रेमी :–** मालती को प्रकृति से प्रेम करने वाली स्त्री के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जब मालती का पति उसे सिनेमा जाने के लिए कहता है तो वह सिनेमा जाने के लिए मना कर देती है क्योंकि उसका वहां दम घुटता है वह सिनेमा न जाकर के कहीं खुली हवा में जाना चाहती है। इस लिए उसका पति कहता है– ''तो चलो, कहीं बाग में चलें। या बाहर खेतों की तरफ। आजकल नदी की कछार पर सरसों खूब फूल रही है'' बीच–बीच में कहीं अलसी के नीले फूल–। तब मालती कहती है–......''सरसों के फूल में मेरा ही रंग खिलता है....और आम के बौर में......।'' इस प्रकार मालती का प्रकृति के प्रति स्नेह दृष्टिगत होता है।

7 **नारी स्वातंत्र्य की इच्छुक :–** नायिका मालती पुरुष प्रधान समाज के बँधनों को तोड़कर कहीं उड़ जाना चाहती है। जब एक स्थान पर वह कहती है :– ''मैं पतंग होती तो उड़ जाती दूर–दूर! फिर कभी वापस न आती नीचे'' तो ऐसा लगता हैं कि वह पुरुष प्रधान समाज के सभी बँधनों को तोड़कर आगे बढ़ना चाहती है। वह अपने पति को भी एक स्थान पर उलाहना देती हुई कहती है :– ''रहने भी दो, मुझे क्या करनी है छुट्टी ? थकते तो मर्द हैं, स्त्री कभी नहीं थकती हैं। काम और विश्राम–यह मर्द की ईजाद है।''

इस प्रकार प्रस्तुत एकांकी नायिका मालती का विभिन्न रूपों में परिचय मिलता है। वह एक अच्छी माँ के साथ–साथ अपने पत्नी धर्म को भी अच्छे से समझती है। सबसे बढ़कर वह स्वयं की पहचान चाहती है। वह जानना चाहती है कि आखिर वह कौन है।

8.4 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी का प्रतिपाद्य

प्रतिपाद्य से अभिप्राय है कहने योग्य, समझने योग्य। नाटक या एकांकी की कथा द्वारा लेखक जो संदेश देना चाहता है उसे प्रतिपाद्य कहते हैं। एक रचना की सफलता केवल तत्वों की संघटना पर नहीं अपितु रचना के गम्भीर उद्देश्य पर आधारित होती है यही उसका प्रतिपाद्य भी है। 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी भारतभूषण अग्रवाल (1910–1975) द्वारा रचित है। उन्होंने न केवल एकांकी अपितु उपन्यास, नाटक एवं आलोचना के क्षेत्र में भी ख्याति अर्जित की है। उनके लेखन की यह विशेषता है कि वे गम्भीर एवं संवेदनशील पहलू को भी बड़े रूचिकर एवं मनमोहक ढंग से प्रस्तुत कर देते हैं जिसे पढ़कर पाठक एवं दर्शक जीवन के कई तथ्यों व सत्यों से परिचित होता है।

'महाभारत की एक साँझ' एक पौराणिक कथा पर आधारित एकांकी है जिसमें दुर्योधन के जीवन की अंतिम साँझ को लेखक ने साधारण व्यक्ति के जीवन की सांझ का प्रतीक बताया है। जब वह पूरे जीवन में किये गये अच्छे बुरे कार्यों का मूल्यांकन स्वयं करता है। प्रस्तुत एकांकी में एकांकीकार ने संवादात्मक शैली में महाभारत के युद्ध के कारणों और उनके प्रभाव को सार रूप प्रस्तुत किया है। रचनाकार ने इस एकांकी के माध्यम से यह संदेश देने का प्रयास किया है कि

चाहे व्यक्ति कितना भी शूरवीर हो, कूट–नीतिज्ञ हो या बुद्धिमान हो पर यदि वह अधर्म की राह पर चलता है तो उसका अंत निश्चित है। इस एकांकी के द्वारा लेखक ने यह भी बताया है कि परिवार में यदि सम्पत्ति को लेकर भाइयों में द्वेष, वैमनस्य का भाव है तो वहाँ कलह अवश्यमभावी है और उसकी परिणति युद्ध जैसी स्थिति में ही होती है। ऐसा होने पर दोनों पक्ष समान जिम्मेदार और दोषी होते हैं। इस एकांकी में यह बात स्पष्ट होती है कि केवल दुर्योधन ही महाभारत के युद्ध के लिए उत्तरदायी नहीं है पांडवों की महत्वाकांक्षा भी इस युद्ध का कारण थी । युधिष्ठिर और दुर्योधन के संवाद दोनों की मनः स्थिति को स्पष्ट करते हैं। दुर्योधन अपने तर्कों द्वारा पांडवों को दोषी सिद्ध करने का प्रयास करता है तो पांडव भी दोष प्रत्यारोपण करते हैं। युद्ध के अंत में द्वैतवन के सरोवर में छिपे दुर्योधन को मारकर ही पांडव युद्ध की समाप्ति की घोषणा करना चाहते हैं क्योंकि वे राज्य पर एकाधिकार चाहते हैं। वे दुर्योधन की कूटनीति से परिचित हैं उन्हें इस बात का ज्ञान है कि जीवित रहने पर दुर्योधन पुनः सेना को संगठित कर युद्ध का प्रयास करेगा। इसके द्वारा लेखक इस बात को भी स्पष्ट करता है कि शत्रु को कभी कमजोर नहीं समझना चाहिए। कुल मिलाकर 'महाभारत की एक साँझ' के द्वारा लेखक ने त्याग और सहनशीलता जैसे मानवीय गुणों की शिक्षा के साथ अन्याय पर न्याय, असत्य पर सत्य की, दुराचरण पर सदाचरण की जीत दर्शाकर सद्कर्म और परोपकार की भावना को भी महत्व दिया है

8.5 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी का पात्र चरित्र–चित्रण

8.5.1 दुर्योधन का चरित्र–चित्रण

दुर्योधन भारत भूषण अग्रवाल द्वारा रचित 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी का मुख्य पात्र है। वह इस एकांकी का केन्द्र बिन्दु है क्योंकि पूरी कथा इसी के इर्द–गिर्द घूमती है। इसी को कथा का खलनायक माना जा सकता है। दुर्योधन धृतराष्ट्र और गन्धारी का पुत्र था और इसके 99 भाई थे। वह उन सबसे शक्तिशाली था। इसका नाम सुयोधन था परन्तु अपनी दुराचारी प्रवृत्ति के कारण इसका नाम सुयोधन से दुर्योधन हो गया। इसके चरित्र की विशेषताओं को इस प्रकार से समझा जा सकता है।

1. **महान योद्धा**–दुर्योधन एक महान योद्धा था उसने गदा युद्ध की शिक्षा श्री कृष्ण के बड़े भाई बलराम से ली थी जो कि गदा के प्रकांड पंडित थे। इसलिए दुर्योधन को गदा युद्ध में हराना मुश्किल था। गदा युद्ध में भीम को हारता देख श्री कृष्ण गदा युद्ध के नियमों का उल्लंघन कर भीम से दुर्योधन की जंघा पर वार करवाते हैं जैसे कि इन शब्दों में पता चलता है'', पांडवों की ओर भीम गदा लेकर उतरे। दोनों में भयंकर युद्ध हुआ तभी श्रीकृष्ण के इशारे पर भीम ने उसकी जंघा पर गदा प्रहार किया और दुर्योधन चीत्कार कर गिर पड़ा।''

2 **अहंकारी**–अहंकार उसमें कूट–कूट कर भरा हुआ था उसका यही अहंकार युद्ध का कारण बना। अपने अहंकार के कारण ही उसने अपने बड़ों की बातों को अनसुना कर भरी सभा में द्रौपदी का

चीरहरण किया। परिणामस्वरूप युद्ध की भूमिका यहीं से तैयार हुई। युद्ध के अंत में मरते हुए भी वह अपने अहं को त्यागता नहीं है और युधिष्ठिर के सम्मुख गर्व करते हुए कहता है– ''वो लीला रचते हैं। वो मेरी तरफ होते तब भी मैं हारता। मुझे पता था महाभारत का यही अंत होगा परन्तु में घुटने नहीं टेक सकता था और मुझे गर्व है खुद पे।'' इस तरह कहा जा सकता है कि दुर्योधन अहंकारी था।

3. **ईर्ष्यालू–** दुर्योधन ईर्ष्यालू स्वभाव का स्वामी था। वह राज्य के लिए अपने चचेरे भाईयों से ईर्ष्या करता था।उसने उन्हें सुई की नोक जितनी भूमि देने से भी इन्कार कर दिया। जहाँ तक कि उसने पांडवों को लाक्षागृह में जलाकर मार डालने का असफल प्रयास भी किया। क्योंकि वह हर कदम पर पांडवों से हारना नहीं चाहता था।

3 **षड्यन्त्रकारी–** दुर्योधन प्रत्येक क्षण राज्य को हथियाने के लिए षड्यन्त्र करता रहता था उसके इन षड्यन्त्रों को बनाने में उसके मामा शकुनी की भी अहम् भूमिका थी। उसने षड्यन्त्र कर चौपड में पांडवों से उन का सब कुछ छीन लिया और अपनी षड्यन्त्रकारी नीति के कारण भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य इत्यादि महान योद्धाओं को अपनी तरफ़ कर लिया था।

4 **हठी–** वह बहुत ज़िदी था। सम्पूर्ण राज्य प्राप्त करने की हठ लेकर बैठा था इसलिए वह राज्य को पाने के लिए तरह–तरह की चालें चलता है और सभी उसकी चालों के शिकार होते है। अंततः वह युधिष्ठिर से कहता भी है। कि उसके हठ का ही परिणाम है कि वो इस अवस्था में है।

6. **निरंकुश और स्वैच्छाचारी–** दुर्योधन को उसके पिता धृतराष्ट्र ने उसे निरकुंश और स्वैच्छाचारी बना दिया था इस लिए वह किसी की भी बात नहीं मानता है और अपनी मनमानी करता है यहां तक कि द्रौपदी के चीरहरण के समय सभी उसे यह घृणित कार्य करने से रोकते हैं परन्तु वह किसी की भी नहीं सुनता और अपनी इच्छानुसार अनैतिक कार्य करता है जिससे कि युद्ध की पृष्ठ भूमि तैयार होती हैं।

7. **दोषारोपण करने वाला–**दुर्योधन अपने अहंकार एवं हठी स्वभाव के कारण कभी भी अपनी गलती नहीं मानता था बल्कि वह दूसरों को ही दोष देता था। युद्ध के अंतिम क्षण में, मृत्यु के समक्ष होने पर भी वह स्वयं की गलती नहीं मानता बल्कि पांडवों पर ही दोष लगाता है कि तुम्हीं ने मेरे साथ छल किया है जो दुर्योधन के प्रस्तुत वाक्य से स्पष्ट है वह युधिष्ठिर से कहता है :

''तुमने तो द्रौपदी को भी जुएं में दाव में लगा दिया था। धर्मराज, तुमने अपने सगे भाई कर्ण का वध भी धोखे से होने दिया तुम्हारी माता ने तुम्हें सत्य नहीं बताया जो कर्ण जानता था......... क्योंकि वो योधा था असली दानवीर और धर्मी। '' दुर्योधन पर यह भी दोषारोपण करता है कि उन्होंने कुरूक्षेत्र में छलपूर्ण विजय प्राप्त की है। इसलिए वह कहता है कि मेरी मृत्यु के समय भी आपने छल किया इसलिए वह कहता है ''अब भी तुम्हारी छलपूर्ण विजय में कोई त्रुटि रह गई हैं।''

8. **दुर्बल**–वह एक महान योद्धा होने के साथ–साथ दुर्बल भी था। युद्ध के अंतिम समय में जब उसने देखा कि उस की सेना के महान योद्धा और उसके सभी भाई मारे गए हैं, तो वह डर गया तथा वह अपनी जान बचाने के लिए सरोवर में जा छिपा। जिससे उसका दुर्बल होना ज्ञात होता है।

इस तरह दुर्योधन 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी का मुख्य पात्र है जो महाभारत की सभी घटनाओं का केन्द्र बिन्दु है सारी कथा इसी के इर्द गिर्द घूमती है। वह अपने लालच के वशीभूत होकर सम्पूर्ण राज्य को तबाह कर देता है। महाभारत के युद्ध में जितने भी लोग मृत्यु को प्राप्त हुए उन सबकी मौत के लिए दुर्योधन ही जिम्मेवार था। उसने चचेरे भाईयों से अधिक धन को प्रेम किया और रिश्तों को समान देने की बजाय अपने अहंकार तथा ज़िद को महत्व दिया जिसके कारण समय के पहले मृत्यु को प्राप्त किया।

8.5.2 युधिष्ठिर का चरित्र–चित्रण :

युधिष्ठिर 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी का मुख्य पात्र एव ंनायक है। वह श्री कृष्ण की बुआ कुंती का पुत्र था। कुंती ने दुर्वासा ऋषि से प्राप्त मंत्र का जाप कर, धर्मराज का आह्वान कर इसे धर्मराज से प्राप्त किया था। वह पांडु पुत्रों में ज्येष्ठ पुत्र कहलाया। धर्म और न्याय युधिष्ठिर में कूट–कूट कर भरा था। युधिष्ठिर की चरित्रगत विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

1. **धर्मपरायण**–युधिष्ठिर धर्म के अनुसार आचरण करते था। वह कभी भी झूठ नहीं बोलते था इसी लिए शत्रु भी उस पर विश्वास करते थे क्योंकि सत्य के लिए इन्हें माना जाता था जहां तक कि श्री कृष्ण जी के कहने पर भी युधिष्ठिर झूठ नहीं बोलता है कि अश्वत्थामा मर गया बल्कि उनसे यह कहलावाने के लिए श्री कृष्ण को अश्वत्थामा नाम के हाथी का वध करवाना पड़ता है तब जाकर युधिष्ठिर कहते हैं कि अश्वत्थामा मर गया। इस तरह वह राज्य धर्म का पालन करते हैं।

युधिष्ठिर दुर्योधन को भी बार–बार यही समझाना चाहता है कि धर्म श्री श्रेष्ठ है। विजय तो धर्म की ही होती है। जब दुर्योधन बड़ी निराशा से कहता है कि "भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य सब युद्ध तो मेरी तरह से कर रहे थे परंतु विजय तुम्हारी चाहते थे। तब युधिष्ठिर दुर्योधन को धर्म का महत्व बताता हुआ कहता है– "क्योंकि वह भी धर्म के साथ थे।"

2. **विनयशील**– युधिष्ठिर स्वभाव से ही विनयशील था। वह सबको आदर समान देते थे युद्ध शुरू होने से पहले वह अपने आदरणीय भीष्म पितामह, गुरू द्रोणाचार्य इत्यादि महापुरूषों से आशीर्वाद लेने जाते हैं और झुक कर उन से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

3. **आदर्शवादी** : युधिष्ठिर एक आदर्शवादी व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं जब वह दुर्योधन के साथ जुएं में अपने भाईयों और पत्नी को हार जाने के बाद उन पर हो रहे अत्याचारी को देख चुप रहता है क्योंकि वह अपने आदर्शों के विरूद्ध जाकर उन की रक्षा नहीं करना चाहता बल्कि अपने आदर्श को बनाएं रखने के लिए उन पर हो रहे अत्याचारों को सहन करता है। इसलिए वह एक स्थान पर दुर्योधन से कहता है कि यदि अच्छे कार्य नहीं करोगे तो अंत भी अच्छा नहीं होगा अतः उसे उचित

की शिक्षा देते हुए कहता है– ''क्षमा करना सुयोधन––मेरा औचित्य तुम्हें ठेस पहुँचाने का नहीं था।''

4. **मासूम**–युधिष्ठिर एक भोले व्यक्ति के रूप में भी इस एकांकी में पाठकों को प्रभावित करते है सामने आता है दुर्योधन इसके साथ चालें खेलना रहता है परन्तु युधिष्ठिर उन चालों को न समझ कर उसकी चालों में फंसता रहता है। जैसे चौपट खेलने के प्रस्ताव को स्वीकार कर सब कुछ हार जाना यह सब दुर्योधन की षड्यन्त्रकारी नीति थी परन्तु युधिष्ठिर अपने भोलेपन के कारण उसके षड्यन्त्रों तथा भरी सभा में भाईयों और पत्नी सहित अपमानित होता है। इस संदर्भ में दुर्योधन कहता है– ''तुमने तो द्रौपदी को भी जुए के दाव में लगा दिया था धर्मराज।''

5. **पराक्रमी**–युधिष्ठिर एक पराक्रमी योद्धा है वह भाला चलाने में निपुण था और साथ ही साथ धनुष बाण और तलवार चलाना भी इन्हें आता था। युद्ध के क्षेत्र में बड़ी बहादुरी के साथ शत्रु से युद्ध करते और अंततः विजय को प्राप्त करते है। इसलिए युधिष्ठिर दुर्योधन से कहता है– ''तुम्हारी विशाल सैना का सामना हम मात्र पाँच भाईयों ने किया ––तुमने छल और बल दोनों का उपयोग किया फिर भी''

6. **धैर्यवान**–युधिष्ठिर एक धैर्यवान व्यक्ति हैं। वह संकट की घड़ी में भी अपने आपको संयत रखते है और जहां तक कि अपने भाईयों के विचलित होने पर उन्हें भी शांत करते हैं। युद्ध के अंतिम क्षणों में जब पांडवों की विजय होती है तो युधिष्ठिर खुशी प्रकट नहीं करते बल्कि राज्य के हुए सर्वनाश को देख दुःखी होते हैं। वे दुर्योधन द्वारा लगाए गए आरोपों को बड़े धैर्य से सुनते हैं कभी किसी बात पर क्रोधित नहीं होते हैं।

7. **क्षमाशील** : उनके स्वभाव में क्षमाशीलता का गुण विद्यमान है वह केवल मित्र को ही नहीं अपितु शत्रु को भी क्षमा कर देते थे। वनवास काल में जब दुर्योधन पांडवों की दुर्दशा देखने के दृष्टिकोण से द्वैत वन गया हुआ था तब मार्ग में उनकी भेंट गन्धर्वी से हो गयी। किसी बात को लेकर उनसे उनकी मुठभेड हो गयी। दुर्योधन को बंदी बना लिया गया। युधिष्ठिर को जब यह ज्ञात हुआ। तो वह दुर्योधन को छुड़ाने के लिए अर्जुन और भीम से आग्रह करने लगे। इसी प्रकार जयद्रथ द्वारा द्रौपदी के साथ दुर्व्यवहार करने पर भी वह जयद्रथ को माफ कर देता है। इस एकांकी के अंत में भी युधिष्ठिर पूरे वार्तालाप के बाद दुर्योधन से क्षमा मांगने से भी कभी पीछे नहीं हटता। वे दुर्योधन से क्षमायाचना करते हुए कहते हैं– ''तुम्हारा अंतिम समय है सुयोधन मुझे क्षमा करना कोई ठेस पहुँची हो तो।''

8. **न्यायी** :– युधिष्ठिर को न्यायप्रिय व्यक्ति के रूप में भी जाना जाता है युद्ध के अंतिम क्षण में जब दुर्योधन छिप जाता है तो भीम और युधिष्ठिर उसे लड़ने के लिए कहते हैं उस समय भी युधिष्ठिर न्याय करते हुए कहता है कि हम पांचों भाई तुम अकेले पर वार नहीं करेंगे बल्कि तुम जिससे युद्ध

लड़ना चाहते हो बता दो। तुम्हारा युद्ध उसी एक भाई से होगा। इस तरह वह दुर्योधन के साथ भी न्याय करता है कि मरते समय उसके मन में कोई शंका न रहे।

इस तरह कहा जा सकता है कि युधिष्ठिर इस एकांकी में एक उदात्त पात्र है जो धर्मपरायण, धैर्यवान, सच का साथ देने वाला, क्षमाशील इत्यादि विशेषताओं से परिपूर्ण है। अपना सब कुछ खो जाने के बाद भी वह विचलित नहीं होता बल्कि धैर्य से काम लेता है और अपने भाईयों को भी धर्म का पालन करने का पाठ पढ़ाता है। दुर्योधन के द्वारा इतना अन्याय करने के बाद भी वह उसे क्षमा कर देता है तथा उसके अंतिम समय में भी उसके साथ न्याय करता हैं। वह अपने बड़ों का आदर–समान करता है और उनके कहे को अपना कर्त्तव्य मान कर उसका पालन करता है। इन्हीं विशेषताओं के कारण वह निस्संदेह एक महान व्यक्तित्व है।

8.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. 'बसत' एकांकी के माध्यम से लेखक किस वसंत की चर्चा करता है और क्यों?

....

....

....

....

2. 'महाभारत की एक साँझ' के द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहता है ?

....

....

....

....

3. दुर्योधन के चरित्र के किन्हीं तीन गुणों की चर्चा कीजिए ?

....

....

....

....

4. मालती पाठकों को किस प्रकार प्रभावित करती है ? दस पंक्तियों मे उत्तर दीजिए।

8.7 संदर्भित पुस्तकें

1 नये एकांकी संपा, सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयापन अज्ञेय,

डॉ॰ सुनीता शर्मा,
सह आचार्य, हिन्दी विभाग,
गुरूनानक देव, विश्वविद्यालय,अमृतसर

'वसंत' व 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी में चित्रित समस्याएं

9.0 रूपरेखा

9.1 पाठ का उद्देश्य

9.2 'वसंत' एकांकी में चित्रित समस्याएं

9.2.1 नारी स्वातंत्र्य की समस्या

9.2.2 नारी चेतना की समस्या

9.2.3 'स्व' पहचान की समस्या

9.2.4 स्त्री–पुरुष संबंधों में उदासीनता की समस्या

9.2.5 अस्तित्व की समस्या

9.3 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी में चित्रित समस्याएं

9.3.1 आरोप–प्रत्यारोप की समस्या

9.3.2 अनाधिकृत अधिकार की समस्या

9.3.3 धर्म–अधर्म की समस्या

9.3.4 पारिवारिक मतभेद

9.3.5 सत्ता प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय व राजनैतिक मतभेद

9.3.6 अंतरराष्ट्रीय महायुद्धों की समस्या

9.3.7 अहम् की समस्या

9.4 अभ्यासार्थ प्रश्न

9.5 संदर्भित पुस्तकें

9.1 पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरांत

–विद्यार्थी वसंत एकांकी की समस्याओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

–नारी चेतना के महत्व को जान पाएगें।

–महाभारत की एक सांझ की समस्याओं का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

–इसके द्वारा अंतरराष्ट्रीय युद्ध नीति का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

9.2 'वसंत' एकांकी में चित्रित समस्याएं

'समस्या' से अभिप्राय कठिन अवसर या प्रसंग अथवा कठिनाई। अंग्रेजी में इसे 'प्रॉब्लम' कहा जाता है जिसका हल कठिनाई से होता है। जीवन में जब भी कोई समस्या आती है तो यह गतिमान जीवन के विकास में बाधा उत्पन्न करती है। समाज की संरचना पुरुष और स्त्री के सहयोग पर निर्भर करती है। पर भारतीय समाज में नारी ही सबसे अधिक समस्याओं का सामना कर रही है और वे समस्याएं उसके व्यक्तित्व, कर्मक्षेत्र और समाज से सम्बन्धित हैं।

'वसंत' अज्ञेय द्वारा रचित एकांकी है। इसमें भारतीय नारी का अंतः संघर्ष मुख्य रूप से चित्रित किया गया है जिसके अंतर्गत वह कई प्रकार की समस्याओं का सामना एक साथ कर रही है। पितृसत्तात्मक समाज में वह स्वयं की पहचान प्राप्त करने के लिए छटपटा रही है। छः ऋतुओं के ऋतुराज 'वसंत' पर आधारित इस एकांकी में मानव मन की अवस्था के साथ–साथ नारी मनःस्थिति को अभिव्यक्त किया है। प्रस्तुत एकांकी की समस्याएं निम्नलिखित हैं :–

9.2.1 नारी स्वातंत्र्य की समस्या :– इस पितृसत्तात्मक समाज में नारी पराधीन बनी हुई हैं जबकि उसे अपने महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व निभाने और मानसिक व शारीरिक के विकास के लिए पूर्ण स्वाधीनता चाहिए। यदि उसे स्वतंत्र वातावरण न मिल पाएगा तो उसका व्यक्तित्व वैसा विकास नहीं कर पाएगा। प्रस्तुत एकांकी में मालती अपने पति के यह कहने पर कि मालूम होता है तुम बहुत थक गई हो। कहती है–''थकते तो मर्द है; स्त्री कभी नहीं थकती है?'' इन पंक्तियों से पता चलता है कि अपनी बंधी बधाई दिनचर्या से मालती स्वतंत्रता चाहती है। मालती के समान सभी गृहिणियां स्वतंत्रता की इच्छुक होती हैं और स्वतंत्रता पाकर वे बहुत सहज अनुभव कर अपने घर को और अच्छी तरह संभाल सकती हैं।

9.2.2 नारी चेतना की समस्या :– आज इस युग में नारी को चेतन करने के लिए सरकारें व निजी संस्थाएं कई प्रयास कर रही हैं पर भारतीय नारी उन सब से अवगत नहीं है इसलिए दुखों की चक्की में इस प्रकार पिस रही है कि वह स्वयं ही अपनी वेदना का कारण नहीं जानती। मालती का छोटा सा परिवार है उसमें भी वह इसलिए प्रसन्न नहीं है क्योंकि वह दिन–रात काम काम और काम में झकड़ी हुई एक विशेष बैचेनी से गुज़रती है। तभी तो वसंत–1 तथा वसंत–2 के वाक्य उसे केवल भ्रमित कर पाते हैं। चेतना के अभाव में ही वह कहती है– ''मुझे तो किसी ने नहीं कहा कि वसंत तुम हो–फूलों का खिलना भी और पतझड़ भी– समीर भी और धूल का झक्कड़ भी।'' जब कि परिवार तो स्त्री के साथ ही है।

9.2.3 स्व' पहचान की समस्या :– किसी विद्वान ने बिल्कुल उचित कहा है– ''कोमल है कमजोर नहीं तू, शक्ति का नाम ही नारी है।'' पर भारतीय नारी जिसे कोमलता की देवी कहा जाता था आज उसके कोमलता के आवरण को दुर्बलता ने छिपा लिया है और यह दुर्बलता उसके भीतर एक विशेष भय का संचार करती है। 'वसंत' एकांकी की मालती इसी दुर्बल पक्ष के कारण कहीं वसंत–1 की बातों से तो कभी वसंत–2 के संवाद से भयभीत हो उठती है। चाहे यह दोनों पात्र मालती को उसके स्व की पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण कार्य करते हैं पर मालती तो उनकी बातों से भीतर से भयभीत हो उठती है इसलिए वह स्व से ही कह उठती है– ''लेकिन मैं क्या थी–क्या हूंगी–क्यां हूँ ? ....क्या थी–फूल या मिट्‌टी ?क्या हूंगी– मिट्‌टी या फूल?......एक बार सोचा था–लेकिन क्या सचमुच सोचा था? इतने वर्षो से इसी एक प्रश्न का उत्तर देना मैं क्यों टालती आई हूँ।'' अतः अपनी शक्ति को पहचानना स्त्री के लिए अति आवश्यक है।

9.2.4 स्त्री–पुरुष संबंधों में उदासीनता की समस्या :– नारी व पुरुष मिलकर ही एक परिवार अथवा गृहस्थी की नींव रखते हैं। परिवार के लिए निरन्तर कार्य करते करते कभी–कभी उनके स्वयं के संबंधों में ऐसी उदासीनता और खालीपन आ जाता है कि सब कुछ नीरस प्रतीत होता है और दोनों ऐसा महसूस करते हैं कि यह जीवन उन्हें रास नहीं आ रहा है उन्हें परिवर्तन चाहिए। आलोच्य एकांकी में आधुनिक समाज में चल रहे स्त्री–पुरुष संबंधों की उदासीनता का चित्रण भी हुआ है। नायिका बात–बात पर अपने पति के साथ बात करते हुए खीझ व्यक्त करती है। नाटक के आंरभ से अंत तक उसके मन में पति के प्रति उदासीन भाव भरा रहता है। उसका पति जब उसे प्रणय भरे क्षणों की याद करवाना चाहता है तो वह उन क्षणों को भी नकारते हुए कहती है– ''मुझे कुछ याद नहीं है। मैं तो सोचती हूँ, यह 'याद' भी मर्दो की ही ईजाद है। उनके लिए भूलना इतना सहज सत्य जो है।'' इसका अर्थ है वह परिस्थिति को देखते हुए अतीत के स्वर्णिम क्षणों को भी नकारती रहती है। जब उसका पति यह स्वीकार करता है कि वो उदासीन है और कहता है–''मालती, मालूम होता है तुम बहुत थक गई हो। क्या करूं सोचता तो बहुत दिनों से हूँ कि छुट्टी लेकर घूम आएं.....'' तब भी मालती का उत्तर देखते ही बनता है जैसे–''रहने दो। मुझे क्या करनी है छुट्‌टी। थकते तो मर्द है ; स्त्री कभी नहीं थकती है'' ?

9.2.5 अस्तित्व की समस्या :– अस्तित्व से अभिप्राय है–सत्ता, सत्व, वास्तविकता प्रस्तुत एकांकी में अस्तित्व की समस्या भी उभर कर पाठकों को प्रभावित करती है। जब व्यक्ति घर परिवार में अपने स्थान अथवा सत्ता को जान लेता है तो फिर जीजान से उसे निभाने का प्रयास भी करता है। 'वसंत' एकांकी की नायिका यह निर्णय ही नहीं ले पाती कि वह कौन है घर में उसका स्थान क्या है ? वह वसंत–1 और वसंत–2 को सुनने के बाद यह धारणा ही बना लेती है कि घर केवल पुरुष का है काम भी केवल पुरुष ही करते हैं वह कुछ करती नही ंतो उसका कोई अस्तित्व भी नहीं है उेसे में उसका पति और बेटा जब उसे विचारों के इस भंवर जाल से निकालने को प्रयास करते है तो तब भी वह निराश ही रहती है। उसका बेटा उसे उसके अस्तित्व से परिचित करवाने का प्रयास करता हुआ कहता है – ''हमें नहीं चाहिए वहां का वसन्त। हमारा वसंत तो तुम हो, मां– तुम हंसती क्यों नहीं ? और अंततः अपने

आप से मिलने के बाद ही मालती उसे कहती है ''यह तू क्या जाने! तू मेरी सारी आशाओं को सारे अनुभवों का पौधा है, मेरा युगों युगों का वसंत।''

निष्कर्षत :– कहा जा सकता है कि इस एकांकी के माध्यम से लेखक कहना चाहता है कि खुशियां लेकर आता है तो उसे उन्मुक्त मन से स्वीकार करना चाहिए क्योंकि व्यक्ति का अस्तित्व, उसकी उदासीनता उसके स्वयं की वृत्ति पर आधारित हैं और यदि किसी कारण हमें अपना मान न हो तो प्रकृति की शरण में चले जाने से हम पुनः अपने आप से मिल सकते हैं। मालती का सारा संघर्ष जो वसंत के आगमन से आरंभ होता है अंततः वसंत के साथ ही उसका अंत होता है वह अपने अधिकारों के प्रति चेतन होना और भी प्रसन्न हो जाती है।

9.3 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी में चित्रित समस्याएं

प्रस्तुत रेडियों नाटक 'भारत भूषण अग्रवाल' द्वारा लिखित हैं। पांडवों और कौरवों के मध्य लड़े जाने वाले महाभारत के महा विनाश उसके आने वाले जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव तथा मूल्यों के ह्रास का यथार्थ चित्राकंन करता है। लेखक का मानना है कि जब भी युद्ध जैसी स्थितियां बनती हैं उसमें दोनों पक्ष बरावर जिम्मेदार होते हैं। इस एकांकी में कई समस्याएं पाठकों को प्रभावित करती है जिन पर आगे प्रकाश डाला जा रहा है :–

9.3.1 रोप–प्रत्यारोप की समस्या :– प्रस्तुत रेडियो नाटक में कौरवों द्वारा पांडवों पर आरोप लगाए गए है कि उन्होंने उनके साथ छल के द्वारा से विजय प्राप्त करके उनके अधिकार को उनसे छीना है। एक स्थान पर दुर्योधन, युधिष्ठिर से कहता है :– ''वरणा तुम कहां हम को परास्त कर सकते थे ? भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य सब युद्ध तो मेरी तरफ से लड़ रहे थे परन्तु विजय तुम्हारी चाहते थे....''

प्रस्तुत कथा में यहाँ एक ओर कौरव पांडवों पर आरोप लगा रहे हैं वहीं दूसरी ओर पांडव कौरवों पर यह आरोप लगा रहे हैं उनका कहना है कि वे अधर्म के रास्ते पर चल रहे थे। इसलिए उनको उनके किए की सजा प्राप्त हुई है। एक स्थान पर युधिष्ठिर कहता है :– ''तुम्हें अपना कुकर्म नहीं दिख रहा, दुर्योधन मैंने सोचा था कि तुम पश्चाताप करना चाहोगे परंतु......'' इस प्रकार एकांकी के आरंभ से अंत तक पांडवों का कौरवों के प्रत्यारोप ही चलते रहते हैं और अपने–अपने स्तर पर दोनों स्वयं को सही बताते हैं।

9.3.2 अनाधिकृत अधिकार की समस्या :– भले ही महाभारत का मुख्य कारण कौरवों की राज्य लिप्सा रहा माना जाता है। वहीं इस कथा के माध्यम से पांडवों की राज्य प्राप्त करने की महत्वकांक्षा को भी प्रदर्शित किया गया है। युधिष्ठिर स्वंय कहता है ''बड़ा भाई मैं था राज–काज का अधिकार मेरा था ना कि तुम्हारा......'' कौरव जहां खुलकर राज्य चाह व्यक्त करते है तो पांडवों के मन भी इसकी कम लालसा नहीं थी अतः अनुचित महत्वकांक्षा इसकी एक विशेष समस्या है जो पाठकों को सोचने पर विवश करती है कि अनुचित केवल कष्ट दायक होता है।

9.3.3 धर्म–अधर्म की समस्या :– इस एकांकी नाटक के माध्यम से महाभारत के युद्ध की मुख्य धर्म–अधर्म की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। पांडवों को लगता था कौरव अधर्म के रास्ते पर चल रहे हैं जिनके कारण युद्ध हुआ परन्तु कौरव मानते थे कि अधर्मी वे नहीं बल्कि पांडव हैं ; जिन्होंने उनके साथ छल करके उनका अधिकार उनसे छीना है। धर्म–अधर्म की इस समस्या में युधिष्ठिर–दुर्योधन से कहता है ''तुमने जो किया वह अधर्म था और उसका यही अंत होना था'' तो दूसरी ओर दुर्योधन–युधिष्ठिर से कहता है ''हां तुमने तो द्रौपदी को भी जुए में दांव में लगा दिया था। धर्मराज तुमने अपने सगे भाई कर्ण का वध भी धोखे से होने दिया।'' इन कृत्यों को कदापि धर्म की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता।

प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से यह भी बताया गया है कि युद्ध के लिए केवल कौरव ही जिम्मेदार नहीं थे बल्कि पांडव भी उतने ही भागीदार थें क्योंकि राज्य प्राप्त करने की लालसा दोनों के लिए एक जैसी थी फिर चाहे वे कौरव थे या पांडव।

9.3.4 पारिवारिक मतभेद :– 'महाभारत की एक साँझ' एकांकी कौरवों और पांडवों के बीच राज्य प्राप्ति के लिए चले पारिवारिक मतभेद को सामने लाया गया है जो कि आधुनिक जीवन की एक प्रमुख समस्या है क्योंकि आज परिवार में जितने भी सदस्य है उनमें आपसी मतभेद इसलिए मुखरित होता है कि उन्हें लगता वह तो सही है बाकि सभी गलत है। पारिवारिक रीति नीतियाँ मानने में भी उनका अहं आगे आता है जिससे मतभेद बढ़ता जाता है। कौरवो को लगता था कि उनके पिता बड़े भाई थे, तो इस दृष्टि से उन्हें राज्य मिलना चाहिए था और पांडवों ने उनके साथ छल करके उनसे उनका अधिकार छीना है, लेकिन पांडवों को लगता था कि राज्य पर उनका अधिकार है ना कि कौरवों का ''इस संबंध में युधिष्ठिर एवं दुर्योधन का कथन इस प्रकार है :– बड़ा भाई मैं था, राज–काज पर अधिकार मेरा था ना कि तुम्हारा........'' दुर्योधन–''यह अधिकार तुमको किसने दिया मेरे पिता बड़े भाई थे और तुम्हारे पिता को राज का अधिकार कार्यवाहक के रूप में मिला था'' इस प्रकार अपने–अपने दृष्टिकोण से अधिकारों की व्याख्या करना आज के मनुष्य की आपसी कलह समस्या के रूप में सामने आता है।

9.3.5 सत्ता प्राप्ति के लिए राष्ट्रीय व राजनैतिक मतभेद :– इस एकांकी के माध्यम से लेखक ने विभिन्न राष्ट्रों में परस्पर से चले आ रहे सत्ता प्राप्ति के राजनैतिक मतभेदों एवं समस्याओं को प्रदर्शित किया है। महाभारत के समय भी कौरव व पांडव दोनों सत्ता प्राप्त करना चाहते थे और यही युद्ध का मुख्य कारण रहा होगा। युधिष्ठिर एक स्थान पर कहता है– ''परन्तु राजा तो वही थे हम परस्पर बैठकर राज्य का विभाजन भी तो कर सकते थे ?'' यही नही सत्ता को हथियाने के लिए दूसरे राष्ट्र भी ताक में बैठे रहते है। किसी राष्ट्र का कोई पक्ष दुर्बल हुआ तो झट से आक्रमण कर दिया और विश्व नीति के अनुसार अन्य राष्ट्र भी अपने–अपने दृष्टिकोण अनुसार आपस में लड़ रहे राष्ट्रों की सहायता में आगे आते है। 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी में बहुत से राजा कौरवों की ओर से पांडवों से युद्ध करते है क्योंकि

कौरव उस समय सत्ताधारी थे दूसरा पांडवों से मतभेद होने के कारण पांडवों के साथ केवल वही राजा थे जो न्याय चाहते थे।

9.3.6 अंतरराष्ट्रीय महायुद्धों की समस्या :– प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से लेखक ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले महायुद्धों की समस्या को प्रस्तुत किया है। अतीत में कौरव व पांडवों के बीच हुए महाभारत का रूप आज के अंतराष्ट्रीय स्तर पर होने वाले महायुद्धों ने ले लिया है। उस समय राज्य प्राप्ति के लिए महाभारत हुआ आज भी समस्या वही की वही है आज भी विभिन्न राष्ट्रों के बीच इसी चाह में बड़े–बड़े युद्ध लड़े जा रहे हैं।

9.3.7 अहम् की समस्या :– आज अहम् एक घातक बीमारी का रूप धारण कर चुका है। अहंकारी व्यक्ति अपने को सबसे चतुर बुद्धिमान और पराक्रमी मानता है पर उसका बढ़ा हुआ अहंकार ही उसके पतन का कारण भी बनता है। दुर्योधन का अहंकार इसका सशक्त उदाहरण है क्योंकि उसने अपने सम्मुख किसी को योग्य नहीं समझा उसे लगता था कि वही सबसे अधिक बुद्धिमान तथा एक अच्छा राजा है इसलिए तो उसने पांडवों के पाँच ग्राम मांगने पर उसने कहा था कि वह अपार शक्तिशाली है इसलिए बिना युद्ध के पाँच ग्राम तो क्या सुई को नोक के बराबर धरती देने को भी तैयार नहीं है और उसका परिणाम महाभारत की भीष्म युद्ध के रूप में हमारे सामने आता है जिसमें कोई भी जीवित नहीं रह पाता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'महाभारत की एक सांझ' एकांकी के माध्यम से रचनाकार ने जिन समस्याओं को उद्धृत किया है वे निश्चित रू‸ से पाठकों का मार्गदर्शन करके उन्हें इस उद्देश्य से परिचित भी करवाती हैं कि जीवन में अहम् तो व्यक्ति के लिए विनाश का ही दूसरा रूप है। क्योंकि दोनों ओर के अहम् का टकराव ही भीषण युद्ध की त्रासदी थी जिसे 'महाभारत' कहा गया।

9.4 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. वसंत एकांकी के आधार पर संबंधों की उदासीनता के कारणों पर प्रकाश डालिए।

   ....

   ....

   ....

   ....

2. पारिवारिक मतभेद से आप क्या समझते है ?

....

....

....

....

3. अस्तित्व की समस्या के विषय में आपके क्या विचार हैं ?

....

....

....

....

4. 'अहम्' के कारणों और उसके प्रभाव का वर्णन करें।

9.5 संदर्भित पुस्तकें

1. नये एकांकी संपा, सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयापन अज्ञेय,

डॉ॰ सुनीता शर्मा,
सह आचार्य, हिन्दी विभाग,
गुरूनानक देव, विश्वविद्यालय,अमृतसर

भोर का तारा, एक दिन एवं सीमा रेखा एकांकरियों की महत्वपूर्ण सप्रसंग व्याख्याएं

10.0 रूपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 एकांकियों की व्याख्या

10.3.1 'भोर का तारा'

10.3.2 'एक दिन'

10.3.3 'सीमा रेखा'

10.4 कठिन शब्द

10.5 पठनीय पुस्तकें

10.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन उपरान्त आप पाठ्यक्रम में निर्धारित तीन एकांकियों– 'भोर का तारा', 'एक दिन' तथा 'सीमा रेखा' की महत्वपूर्ण पंक्तियों से अवगत होने के साथ उनकी व्याख्या भी कर सकेंगे।

10.2 प्रस्तावना

'भोर का तारा' एकांकी के लेखक 'जगदीशचन्द्र माथुर' आधुनिक काल के प्रमुख नाटककारों में से है। इनके नाटक रंगमंच के लिए ही लिखे गए हैं और सफलतापूर्वक अभिनीत भी हुए हैं। एकांकी तो कई हैं, जिसमें 'मकड़ी का जाला' और 'भोर का तारा' आदि विशेष प्रसिद्ध हैं।

'भोर का तारा' एकांकी में लेखक ने व्यक्ति के सुख को समष्टि के सुख में विलीन कर देना ही व्यक्ति की सिद्धि है, इस आदर्श को कवि शेखर के माध्यम से व्यक्त किया है। 'एक दिन' एकांकी के लेखक 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' के विषय में तो कहा जाता है कि आधुनिक नाटक का आरम्भ ही उन्हीं से हुआ है। इनकी एकांकियों में मुख्यतः समस्या–नाटक की प्रवृत्ति है और पात्रों की कर्म–प्रेरणाओं का वह सुन्दर विश्लेषण करते हैं। 'एक दिन' में एक ओर परम्परावादी पिता है जिसे पूर्ण रूप से रूढ़िवादी नहीं कहा जा सकता, दूसरी ओर आधुनिकतावादी पुत्र है जिसके सामन्तवादी संस्कार पिता के निर्मम विश्लेषण के तले उभर आते हैं। दोनों जिस कन्या के हित को लेकर स्वयं उलझन में पड़े हैं उससे वह कन्या ही उनको उबारती है। 'सीमा रेखा' के रचिता 'विष्णु प्रभाकर तो आधुनिक काल की पुरानी पीढ़ी के साहित्यकारों में विशेष स्थान रखते हैं। वे मानवतावादी साहित्यकार हैं। इन पर महात्मा गांधी के विचारों का स्पष्ट प्रभाव देख सकते हैं। इन्होंने राजनीतिक, ऐतिहासिक, हास्य व्यंग्य प्रधान एकांकियों के अतिरिक्त सामयिक समस्याओं पर भी कुछ एकांकी लिखे हैं।

'सीमा रेखा' इनका राजनीति से सम्बन्धित एकांकी है जिसमें इन्होंने यह सत्य प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया है कि "...जनता के राज में, जनतंत्र में, जनता की प्रतिष्ठा होती है। जन–राज में शासक कोई नहीं होता, सब सेवक होते हैं।... जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।"

10.3 एकांकियों की सप्रसंग व्याख्या

10.3.1 भोर का तारा

1) कैसा अकेला–सा, एकटूक देखता रहता है? जानते हो क्यों... नहीं जानते? (तख्त के दूसरे भाग पर बैठता हुआ) बात यह है कि एक बार रजनीबाला अपने प्रियतम प्रभात से मिलने चली, गहरे नीले कपड़े पहनकर, जिसमें सोने के तारे टंके थे। ज्यों ही निकट पहुची, त्यों ही लाज की आंधी आई और बेचारी रजनी को उड़ा ले चली।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'जगदीशचन्द्र माथुर' द्वारा रचित 'भोर का तारा' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ एकांकी के प्रमुख पात्र कवि शेखर द्वारा अपने मित्र माधव के समक्ष कही गई हैं। इन पंक्तियों में कवि की कल्पना व्यक्त हुई है।

व्याख्या :– कवि शेखर अपने मित्र माधव से बहुत ही गम्भीर स्वर में भोर के तारे के अकेलेपन पर अपनी कल्पना द्वारा प्रकाश डालते हुए कहता है कि तुम जानते हो कि किस प्रकार यह तारा अकेला एकटक देखता रहता है। उसका इस तरह देखने के पीछे एक कारण है और वह कारण यह है कि एक दिन रजनीबाला अर्थात रात की रानी अपने प्रियतम प्रभात से मिलने गई, गहरे नीले रंग के वस्त्र धारण किए हुए और उसमें सोने के तारे टके थे अर्थात् रात्रि ने भयंकर कालिमा की चादर ओढ़ी थी लेकिन जैसे ही वह अपने प्रियतम के पास पहुँची उसे लज्जा आ गई और प्रभात का तारा यह दृश्य देखता ही रह गया। अर्थात् प्रभात के प्रकाश में रात्रि की कालिमा लुप्त हो गई।

विशेष :–

1. काव्यमयी भाषा का प्रयोग
2. प्रकृति का मानवीकरण किया गया है।

2) यही तो नहीं करते। तुम राजनीतिज्ञ और मन्त्री लोग बड़ी संजीदगी के साथ अमीरी–गरीबी, युद्ध और सन्धि की समस्याओं को हल करने का अभिनय करते हो परन्तु मनुष्य को इन उलझनों के बाहर कभी नहीं लाते। कवि इसका प्रयत्न करे हैं पर उन्हें पागल....

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'जगदीशचन्द्र माथुर' द्वारा रचित 'भोर का तारा' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियां शेखर द्वारा अपने मित्र माधव को कही गई हैं। इन पंक्तियों में शेखर राजनेताओं की वास्तविकता का उल्लेख कर रहा है और यह सत्य भी प्रकट कर रहा है कि कवि जब इस यथार्थ को व्यक्त करते हैं तो यही लोग उसे पागल की संज्ञा देते हैं।

व्याख्या :– शेखर राजनीतिज्ञ के दोगलेपन पर प्रकाश डालते हुए माधव से कहता है कि राजनीतिज्ञ लोगों की समस्याओं को कभी भी सुलझाने का प्रयास नहीं करते क्योंकि लोगों की उलझनों से भी वे अपना स्वार्थ साधते हैं। जब माधव कहता है कि हम दिन–रात लोगों की उलझनों को सुलझाते रहते हैं तब शेखर उसे राजनीति के दोगलेपन का चेहरा दिखाते हुए कहता है कि बड़े–बड़े मन्त्रिगण, अमीरों, गरीबों, युद्ध तथा संधि की समस्याओं को हल करने का मात्र नाटक करते है, तुम्हारे सिद्धान्तों और प्रयोगों में मार्मिक अट्टहास होता है किन्तु तुम लोग कभी भी यह प्रयास नहीं करते कि लोगों को इस जंजाल से मुक्त कर सको। तुम अपने अभिनय द्वारा सदैव उन्हें उलझाए रखते हो। कवि जब इस वास्तविकता को अपनी लेखनी द्वारा लोगों के समक्ष लाने का प्रयास करता है तो तुम लोग उसे पागल घोषित

करते हो। तुम्हारे अभिनय से उलझे लोग भी वास्तविकता को समझ नहीं पाते और सब सत्य प्रकट करने वाले कवि को पागल का सम्बोधन देते हैं।

विशेष :– सरल भाषा का प्रयोग हुआ है।

3) मुझे तो सौन्दर्य ही कर्त्तव्य जान पड़ता है। मुझे तो जहां सौन्दर्य दीख पड़ता है, वहां कविता दीख पड़ती है, वही जीवन दीख पड़ता है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'जगदीशचन्द्र माथुर' द्वारा रचित 'भोर का तारा' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ शेखर द्वारा माधव को कविता की उपज का बोध करवा रही हैं।

व्याख्या :– इन पंक्तियों में शेखर कविता के जन्म में सौन्दर्य की क्या भूमिका रहती है उसका उल्लेख करते हुए करता है कि सौन्दर्य–दर्शन से ही कवि कर्त्तव्य का ज्ञान सीखता है। जहाँ सौन्दर्य की छाया दिखती है वहीं से कविता के भाव सजग हो जाते हैं और जहां कविता के भाव जागृत होते हैं वहाँ जीवन मुस्कुराता हुआ सामने आ जाता है। अर्थात् कवि की कल्पना सौन्दर्य से अग्रसर होती है।

विशेष :–

1. सरल भाषा का प्रयोग।
2. कवि की कल्पना शक्ति का वर्णन है।
3. भाव से कविता उत्पन्न होती है, यह सत्य प्रकट किया गया है।

4) दया ? हूं (ठहरकर) मैं तो उसे इसलिए भीख देता हूँ क्योंकि मुझे उसमें एक कविता, एक लय, एक व्यथा झलक पड़ती है। उसका गहरा झुर्रीदार चेहरा, उसके कांपते हुए हाथ, उसकी आंखों के बेवस गड्ढे, (एक तरफ एकटक देखते हुए, मानो इस मानसिक चित्र में खो गया हो) उसकी झुकी हुई कमर– माधव, मुझे तो ऐसा जान पड़ता है मानो किसी शिल्पी ने उसे इस ढांचे में ढाला हो।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'जगदीशचन्द्र माथुर' द्वारा रचित 'भोर का तारा' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियां शेखर द्वारा माधव के समक्ष कही गई हैं जिसमें एक कवि की संवेदनशीलता का बोध हो रहा है।

व्याख्या :– राजमहल के पास के अन्धी भिखमंगी भीख मांगती थी उसे शेखर भीख देता है क्योंकि उस औरत को देखकर उसे कविता की प्रेरणा मिलती है। अपने मित्र को वह कहता है कि उस औरत की भाव–भंगिमा से मेरे गान में लय आती है और उसकी रचना देखकर मुझे कला की अनुपम सृष्टि की झलक मिलती है। झुर्रियों से भरा उसका चेहरा, कांपते हुए हाथ, बेवस आँखें तथा झुकी हुई कमर को देखकर शेखर को ऐसा अनुमान होता है कि जैसे कि किसी शिल्पकार ने उसकी करुण मुर्ति निमित्त की हो। अर्थात् सामान्य जन जिस गहराई तक नहीं पहुंच पाता कवि की संवेदना उसे सामान्य जन से अलग करती हुई उस गहराई तक ले जाती है।

विशेष :–

1. कवि की कविता सामान्य में भी विशेष को खोज लेती है।
2. परिस्थितियों का सामान्य जन से अलग अंकलन एक कवि की संवेदना से ही सम्भव है।

5) कविता तुम्हारे सूने दिलों में संगीत भरती है; स्त्री भी तुम्हारे ऊबे हुए मन को बहलाती है। पुरुष जब जीवन की सूखी चट्टानों पर चढ़ता–चढ़ता थक जाता है तब सोचता है, 'चलो थोड़ा मन–बहलाव ही कर लें।' स्त्री पर अपना सारा प्यार, अपने सारे अरमान

निछावर कर देता है, मानो दुनिया में और कुछ हो ही न और उसके बाद जब चांदनी बीत जाती है, जब कविता भी नीरव हो जाती है, तब पुरुष को चट्टानें फिर बुलाती हैं और वह ऐसे भागता है मानो पिंजड़े से छुटा हुआ पंछी और स्त्री के लिए फिर वही अंधेरा, फिर वही सूनापन!

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'जगदीशचन्द्र माथुर' द्वारा रचित 'भोर का तारा' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियां एकांकी की प्रमुख नारी पात्र छाया द्वारा शेखर को कही गई हैं। इन पंक्तियों में कविता और नारी में समानता बताते हुए पुरुष द्वारा नारी को छले जाने का यथार्थ अभिव्यक्त हुआ है।

व्याख्या :– जब शेखर अपनी पत्नी छाया को अपनी कविता की प्रेरणा बताता है तब छाया उसे कहती है कि प्रत्येक पुरुष के लिए नारी एक कविता है। अर्थात् जिस प्रकार कविता सूने दिलों में संगीत भरती है उसी प्रकार नारी भी पुरुष के ऊबे हुए मन को बहलाती है। पुरुष जब अपने जीवन की उलझनों से संघर्ष करते–करते थक जाता है तब अपने मन में पूर्ण साहस भरने के लिए नारी के पास आता है। अतः पुरुष अपने ऊबे मन को बहलाने के लिए नारी का सहारा लेता है। उन क्षणों में वह अपना समस्त प्रेम, अपनी सारी आशाओं को नारी पर निछावर कर देता है किन्तु जब उसका मन बहल जाता है। अर्थात् उसकी ऊब का निराकरण हो जाता है तो वह पूणः अपने जीवन पथ पर अग्रसर हो जाता है। वह स्वयं को नारी से इस भाँति अलग कर लेता है मानो कोई पंछी पिंजड़े की कैद से मुक्त हुआ हो अर्थात् पिंजड़े से छूटा पंछी जिस प्रकार स्वतन्त्र होकर पीछे मुड़कर नहीं देखता आगे बढ़ता है स्वतन्त्रता की खुशी में उसी प्रकार पुरुष भी नारी का भोग कर जब उसे छोड़कर जाता है तो पूणः उसकी स्थिति को जानने की कोशिश भी नहीं करता। पुरुष तो मन बहला कर चला जाता है लेकिन नारी अकेले इस पीड़ा को सहती रहती है। पुरुष के लिए जो प्रेरणा है उसके स्वयं के जीवन में मात्र अंधेरा रह जाता है क्योंकि पुरुष तो स्वार्थ पूर्ति के लिए नारी का प्रयोग करता है किन्तु नारी भावात्मक रूप से पुरुष से सम्बंध बनाती है और पुरुष द्वारा छले जाने पर मात्र विलाप करती रह जाती है।

विशेष :–

1. 'मन–बहलाव' मुहावरे का प्रयोग हुआ है।
2. 'चांदनी' सुखद क्षणों का प्रतीक है।
3. 'मानो पिंजड़े से छूटा हुआ पंछी।' उत्प्रेक्षा अलंकार का प्रयोग है।

10.3.2 'एक दिन'

1) वंश की मर्यादा तुम्हारे लिए झूठी हो गई, जिसे बचाने में सब कुछ चला गया। बाप–दादों का घर भी चला गया। जिस घर में पैदा हुआ, खेला–कूदा, बड़ा हुआ... जिसमें तुम्हारी मां आई, तुम भी जिसमें जनमें थे, उसके नीलाम की डुग्गी से भी प्राण उतना नहीं बिंधा था जितना आज बिंधा है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियां जमींदार राजनाथ ने अपने बेटे मोहन से कही हैं। जिसमें राजनाथ का अपनी मर्यादाओं के प्रति लगाव प्रकट हुआ है।

व्याख्या :– राजनाथ अपनी वंश परम्परा और मर्यादाओं के प्रति मोह रखता है किन्तु उसका बेटा मोहन आधुनिक विचारधारा का है इसलिए वह पुरानी परम्पराओं एवं मर्यादाओं को झूठा बोलता है। अपनी आधुनिक सोच के कारण ही वह मित्र निरंजन को अपने घर में बहन शीला के रिश्ते के लिए बुलाता है किन्तु परम्परावादी राजनाथ इस कार्य को मर्यादाओं के विरुद्ध मानकर इसका विरोध करते हुए कहता है कि

वंश की मर्यादा आज तुम्हारे लिए झूठ हो गई है, लेकिन इन्हीं मर्यादाओं को बचाए रखने हेतु हमारा सब कुछ चला गया। अर्थात् राजनाथ ने अपनी वंश परम्परा एवं मर्यादा को अब तक बचाए रखा है चाहे उसके लिए उसका बाप–दादों का घर ही क्यों नहीं नीलाम हो गया, पर उसने मर्यादा का उल्लंघन कभी नहीं किया। वह बेटे से कहता है जिस घर में तुम्हारी माँ विवाह कर आई, जिसमें तुम्हारा जन्म हुआ, उस घर के निलाम होने पर मुझे इतना दुख नहीं हुआ जितना आज तुम्हारी इस बात से हुआ है। अर्थात् राजनाथ विवाह पूर्व लड़के द्वारा लड़की देखने को मर्यादा का उल्लंघन मानता है। वह बेटे द्वारा इस मर्यादा को झूठा कहना सहन नहीं कर पाता।

विशेष :–

1. दो पीढ़ियों के मध्य विचारिक अन्तर को बताया है।
2. भाषा सरल, सुबोध है।

2) लड़कियों का स्वयंवर होता था पर चुनता कौन था? कन्या या वर? एक कन्या के लिए सैकड़ों युवक आते थे। रूप, गुण और पौरुष में जो बड़ा होता, उसे कन्या चुनती। जयमाला जिसके गले में पड़ती वह अपने भाग्य पर फूल उठता। उस युग में कन्या की यह मर्यादा थी, आज क्या है? स्त्री–जाति जितने नीचे पिछले दस वर्षों में गई है उतनी पहले कभी नहीं गई थी।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। इन पंक्तियों में लेखक ने राजनाथ के माध्यम से प्राचीन स्वयंवर प्रथा में नारी के अधिकार को व्यक्त करते हुए वर्तमान नारी की गिरती सामाजिक स्थिति को स्पष्ट किया है।

व्याख्या :– राजनाथ द्वारा विवाह पूर्व लड़के द्वारा लड़की को देखने की रीति स्वीकार नहीं करने पर मोहन इसे झूठी मर्यादा की संज्ञा देकर जब प्राचीन समय में स्वयंवर प्रथा का उल्लेख करता है जिसमें अनेकों पुरुष लड़की को देखते थे तब राजनाथ स्वयंवर में नारी अधिकार को स्पष्ट करते हुए कहता है कि प्राचीन समय में स्वयंवर होता था लेकिन उसमें चुनाव कौन करता था– वर या कन्या। एक लड़की के लिए सैंकड़ों लड़के आकर अपने रूप, गुण और वल का प्रदर्शन करते थे। फिर लड़की जिसके गले में जयमाला डालती वह स्वयं को भाग्यशाली समझता। अर्थात् स्वयंवर प्रथा में वर चुनाव का पूरा अधिकार लड़की को होता था किन्तु आज के समय में यह अधिकार लड़की से छिन्न रहा है क्योंकि लड़के द्वारा लड़की को देखने की इस आधुनिक रीति में चुनाव का अधिकार सिर्फ लड़का अपना मानता है। इसलिए आज नारी की स्थिति पहले जैसी अधिकार और सम्मान की नहीं रही।

विशेष :–

1. प्राचीन स्वयंवर प्रथा का वर्णन।
2. नारी के गिरते सामाजिक स्तर का उल्लेख।
3. प्रश्नात्मक शैली।

3) जो बहुत बड़े बन जाते हैं, प्रकृति उन्हें टिकने नहीं देती। मेरी जो दशा आज सात पीढ़ी के बाद है, वही निरंजन की दूसरी पीढ़ी में होगी। यही इस जगत का चक्र है। ऊपर का बिन्दु नीचे और नीचे का बिन्दु ऊपर।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियां राजनाथ ने अपने बेटे मोहन को प्रकृति के परिवर्तित नियम को समझाते हुए कही हैं।

व्याख्या :– निरंजन के पिता पहले राजनाथ के पिता के मुन्शी थे। किन्तु आज स्थिति यह थी कि राजनाथ आर्थिक रूप से कमजोर हो गए थे और निरंजन का परिवार आर्थिक रूप से पूर्ण सुविधा सम्पन्न। राजनाथ अपने पूर्वजों और निरंजन के पूर्वजों के इतिहास को बताते हुए बेटे से कहता है कि जो लोग बहुत बड़े बन जाते हैं प्रकृति उन्हें उसी स्थिति में रहने नहीं देती अर्थात् परिवर्तन प्रकृति का नियम है इसलिए कोई भी व्यक्ति सदैव एक ही परिस्थिति में नहीं रहता। वह मोहन से कहता है कि मेरी जो दशा सात पीढ़ी बाद हुई है, निरंजन की दूसरी पीढ़ी में हो जाएगा अर्थात् राजनाथ तो सात पीढ़ी बाद निर्धन हुआ, किन्तु समय का चक्र अब इतना तीव्र है कि निरंजन की दूसरी पीढ़ी ही निर्धन हो जाएगी। क्योंकि संसार का चक्र है कि ऊपर का बिंदु नीचे तथा नीचे का बिंदु ऊपर हो जाता है। अतः व्यक्ति समय के परिवर्तन के साथ अमीर से गरीब तथा गरीब से अमीर बनता है और यह क्रम निरंतर चलता रहता है।

विशेष :–

1. परिवर्तन प्रकृति का नियम है, इस ओर संकेत किया है।
2. भाषा सरल सुबोध है।

4) विवाह के पहले जो लड़का लड़की को स्वयं देखना चाहता है वह असभ्य है। पसन्द करने का अधिकार वह अपना मानता है, कन्या का नहीं। तुम जितना समझते हो मैं उतना जड़ नहीं हूं। प्रगति रोने मैं नहीं आता। बस इतना जान लो, प्रगति अन्धों की नहीं आंखों बालों की होती है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियां राजनाथ द्वारा अपपने बेटे से कही गई हैं जिसमें राजनाथ विवाह पूर्व लड़के द्वारा लड़की देखने को उसकी असभ्यता बताकर अपने विचार प्रकट करता है।

व्याख्या :– राजनाथ अपने बेटे से कहता है कि विवाह से पहले जो लड़का स्वयं लड़की को देखना चाहता है, भारतीय संस्कृति के अनुसार वह असभ्य है। क्योंकि ऐसा करके वह चुनाव का अधिकार स्वयं का मानता है। माता–पिता तथा कन्या को चुनाव का अधिकार वह नहीं देता। राजनाथ का बेटा इस कार्य को आधुनिक सोच के अनुसार प्रगति मानता है। राजनाथ बेटे को कहता है कि मैं उतना नासमझ नहीं हूँ जितना तुम समझते हो। जिसे तुम प्रगति कहते हो उसे रोकने मैं नहीं जा रहा लेकिन तुम भी यह बात अच्छे से समझ लो कि प्रगति अँधों की नहीं, आँख वालों की होती है। अर्थात् जो लोग आँखें खोल कर चलते हैं प्रगति वे ही करते हैं।

विशेष :– 'प्रगति अंधो की नहीं, आँख वालों की होती है' में मुहावरे का प्रयोग हुआ है।

5) जिसे देखो, धन से अलग कर देखो। पद, प्रतिष्ठा और अधिकार से अलग कर देखो। उस मनुष्य को देखो जो तुम्हारे इस युग में जन्म ले रहा है, जो धन और अधिकार से नहीं। अपने गुणों से आगे बढ़ेगा।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। यह पंक्तियां राजनाथ द्वारा अपने बेटे को गुणों की महत्ता बताते हुए कही गई हैं।

व्याख्या :– राजनाथ का कहना है कि व्यक्ति की परख करनी हो तो वह उसकी पद, प्रतिष्ठा व अधिकार से नहीं उसके गुणों के आधार पर करनी चाहिए। क्योंकि धन, पद, प्रतिष्ठा, अधिकार हमेशा व्यक्ति के पास नहीं रहते, आज है तो कल नहीं होंगे। लेकिन संस्कार रूपी गुण व्यक्ति में हमेशा विद्यमान रहते हैं। इसलिए व्यक्ति की सही पहचान उसके गुणों व संस्कारों से ही होती है। जिसने अपने गुणों के बल पर प्रगति की हो सही में वही प्रगति है। इसलिए उसका चुनाव करना सही है।

विशेष :– व्यक्ति के गुणों को महत्व दिया गया है।

**6)		वह अपने घर के बड़े होंगे, इस घर की बड़ी मैं हूँ। आपके पास धन नहीं है पर क्या भाव भी नहीं हैं मेरे लिए? किसी पेड़ के नीचे.... झोंपड़ी में मैं सुखी रहूंगी। जानकी के चौदह वर्ष वन में बीत गए। मैं क्या कहूं? जिसका संग हो उसका विश्वास और आदर मिल जाए, इससे बड़ा धन सोने–चांदी में लिपटना नहीं है।**

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियां शीला द्वारा अपने पिता से कही गई हैं जिसमें वह इस बात को स्पष्ट करती हैं कि वह किसी अमीर शिक्षित व्यक्ति से विवाह नहीं करना चाहती बल्कि ऐसा पति चाहती है जो उसे प्रेम और विश्वास दे सके।

व्याख्या :– शीला को जब यह ज्ञात होता है कि उसका भाई अमीर और शिक्षित युवक निरंजन को उसके विवाह के लिए चुन रहा है और ऐसे व्यक्ति से शादी होने से वह शीला का सुख मानता है तब शीला अपनी ईष्छा व्यक्त करती हुई कहती है कि उसे देखने आया निरंजन चाहे स्वयं को बड़ा मानता है लेकिन इस घर की बड़ी मैं हूँ। भले ही आपके पास धन नहीं है लेकिन क्या मेरे लिए भाव भी नहीं हैं जो आपने यह सब होने दिया। वह कहती है कि धन मेरे लिए आवश्यक नहीं है, मैं किसी पेड़ के नीचे झोंपड़ी में रहकर भी सुखी रहूँगी जैसे सीता के चौदह वर्ष वन में निकले। अर्थात् सीता को अपने पति का प्रेम और विश्वास मिला इसलिए वन में भी वह प्रसन्न रही। शीला भी यही चाहती है कि जिसे पति रूप में पाऊँ उसका विश्वास, प्रेम और आदर मिल जाए तो इससे बड़ा धन कोई और नहीं है। अर्थात् नारी पति का प्रेम और विश्वास चाहती है न कि मात्र धन।

विशेष :– 1.नारी की वास्तविक चाहत व्यक्त हुई है कि वह पति से आदर–सम्मान चाहती है न कि धन।

2.शीला का आदर्श चरित्र उभरकर सामने आया है।

**7)		इस युग में हम अपना सब कुछ विदेशी आँखों से देख रहे हैं। स्वतन्त्रता का उत्सव हम मना रहे हैं, अपने को भूलकर, अपने गुण और अपनी मान्यताएँ भूलकर आगे चलने में जो पीछे देखते नहीं थे, वे ही अब दूसरों के पीछे सरपट दौड़ रहे हैं, स्वतन्त्र भारत की स्वतन्त्र नारी को अब सब कुछ फाड़ फेंकना है।**

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ राजनाथ द्वारा अपनी बेटी के समक्ष कही गई हैं जिसमें वह वर्तमान समय में व्यक्ति द्वारा पश्चिमीकरण की अंधी दौड़ का उल्लेख कर बता रहे हैं कि इस दौड़ से आज हम अपने संस्कारों को भूल रहे हैं।

व्याख्या :– राजनाथ कहते हैं कि आधुनिक सभ्यता और शिक्षा के कारण आज हम सब कुछ विदेशी आँखों से देख रहे हैं। आज व्यक्ति स्वतन्त्रता का उत्सव तो मना रहा है किंतु वे अपनी सभ्यता और संस्कृति तथा गुण एवं मान्यताओं को भूल चुका है। भारतीय जो कभी पीछे मुड़कर देखते नहीं थे आज वही पाश्चात्य सभ्यता के पीछे अंधी दौड़ लगा रहे हैं। इतना ही नहीं आज की स्वतन्त्र नारी भी पुराने आदर्शों व मान्यताओं को फाड़कर फैंक देना चाहती है। अर्थात् भारतीय संस्कृति में जो आदर्श, मान्यताएँ व परम्पराएं थीं उनको हम पाश्चात्य संस्कृति के पीछे भागने के कारण भूलते जा रहे हैं।

विशेष :–

1. वर्तमान समय में पश्चिमीकरण की अंधी दौड़ को स्पष्ट किया है।
2. भारतीय संस्कारों के ह्रास को दर्शाया है।

**8)		जानकी का युग इस देश में कभी नहीं मिटेगा। मैं जानकी हूँ। इस देश की कोई भी स्त्री जानकी है। जब तक हमारे भीतर जानकी का त्याग है, जानकी की क्षमा है, तब तक हम वही हैं। तुम्हारे लिए जानकी पौराणिक है इसलिए असत्य है। मेरे लिए वह**

भावगम्य है। उनके भीतर मेरी सारी समस्याएं, सारे समाधान हैं। राम में तुम अविश्वास कर सकते हो, जानकी में अविश्वास का अधिकार तुम्हें नहीं।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियां शीला द्वारा अपने भाई मोहन को भारतीय नारी में जानकी की छवि को स्पष्ट करते हुए कही गई हैं।

व्याख्या :– शीला का भाई मोहन जब कहता है कि आज का युग जानकी का नहीं है तो भाई की इस युक्ति को नकारते हुए वह कहती है कि जानकी का युग इस देश से कभी समाप्त नहीं हो सकता, क्योंकि इस देश की प्रत्येक नारी में हम जानकी को देख सकते हैं। जब तक हमारे भीतर जानकी की भाँति त्याग और क्षमा का भाव रहेगा तब तक इस देश की नारी में हमें जानकी का रूप दिखाई देगा। मोहन से वह कहती है कि तुम्हारे लिए जानकी एक पौराणिक पात्र है इसलिए तुम उसे असत्य मानते हो, लेकिन मेरे लिए वह भावना का विषय है। जानकी के भीतर ही मुझे अपनी सारी समस्याएँ और उनके समाधान मिलते हैं। राम में तुम अविश्वास कर सकते हो, लेकिन जानकी पर अविश्वास करने का तुम्हें अर्थात् पुरुष वर्ग को कोई अधिकार नहीं है।

विशेष :– भारतीय आदर्श और मान्यताओं के प्रति आस्था व्यक्त हुई है।

9) भारत वही पुराना है। आप उसे नया बनाकर उसकी प्रतिष्ठा बिगाड़ रहे हैं। वह क्या चाहता है, उसको देखिए, उसको समझिए जो आप चाहते हैं, उसका आरोप इस पुराने भारत पर न कीजिए।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ शीला द्वारा निरंजन को कही गई हैं। जिसमें वह स्पष्ट कर रही है कि भारत में आज भी वही आदर्श, परम्पराएँ एवं मान्यताएँ प्रतिष्ठित हैं।

व्याख्या :– निरंजन जब शीला के अकेले में न मिलने के विचार को पुराने विचार मानते हुए कहता है कि नया भारत अब आपसे कुछ और चाहेगा अर्थात् पुरानी विचारधाराओं से मुक्ति। तब शीला निरंजन को उत्तर देती हुई कहती है कि भारत आज भी पुराना ही है। आप लोगों ने अर्थात् पाश्चात्य सभ्यता तथा आधुनिक शिक्षा के पक्षधरों ने भारत को नया कहकर उसकी प्रतिष्ठा को बिगाड़ दिया है। भारत क्या चाहता है उसे आप समझिए न कि आप क्या चाहते हैं उसका आरोप भारत पर करें। अर्थात् भारत में तो आज भी प्राचीन परंपराओं, आदर्शों एवं मान्यताओं की प्रतिष्ठा है लेकिन आप जैसे लोग जो पाश्चात्य रंग में रंगे हैं उसे नया कहकर उसकी उस प्रतिष्ठा को हानि पहुँचा रहे हैं।

विशेष :–

1. पाश्चात्य सभ्यता का भारतीय सभ्यता पर प्रभाव बताया है।
2. भारत आज भी अपनी परम्पराओं, आदर्शों एवं मान्यताओं को अपनाए हुए है, इस पर बल दिया है।

10) आपकी अवस्था का पुरुष जब मेरी आयु की लड़की के पास जाता है, अन्धा हो जाता है। और कहीं संयोग से लड़की सुन्दर हुई तो वह उन्मत्त हो उठता है। अन्धा क्या देखेगा? उन्मत्त क्या समझेगा? इसलिए अपने आप न देखकर किसी दूसरे से दिखा लेना आप जैसों के हित की बात है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ शीला द्वारा निरंजन को उसकी वास्तविकता दिखाने हेतु कही गई हैं।

व्याख्या :– शीला का मानना है कि जब एक लड़का किसी लड़की को अकेले में कुछ देर देखने या बात कर उसे पूरी तरह जानने का प्रयास करता है उसमें वह पूर्ण रूप से ठगा जाता है, लेकिन निरंजन शीला के इस विचार को स्वीकार नहीं करता। तब शीला अपनी तर्कशीलता से निरंजन को वास्तविकता से परिचित करवाते हुए कहती है कि आपकी अवस्था का पुरुष अर्थात् जिसमें पद, प्रतिज्ञा एवं अधिकार का अह्म हो, जब मेरी उम्र की लड़की के पास जाता है, तो वह अन्धा हो जाता है और यदि लड़की सुंदर हो तो वह उन्मत्त हो जाएगा अर्थात् अह्मी पुरुष सुन्दर तथा सुशील लड़की को देखकर अंधा तथा पागल हो जाएगा। इसलिए अंधा व्यक्ति क्या देखेगा और पागल क्या समझेगा। आप जैसे अर्थात् अह्मी पुरुषों को यदि लड़की देखनी है तो उन्हें चाहिए कि वह स्वयं न देखकर अपने माता–पिता, भाई–बहन आदि को यह कार्य करने को कहें। दूसरे से दिखा लेना ही आप जैसों के हित में होगा।

विशेष :–

1. पुरुष अह्म को खण्डित किया है।
2. शीला के चरित्र में व्याप्त तर्कशीलता का बोध होता है।

10.3.3 'सीमा रेखा'

1) जनता के नेता अब पुलिस की गाड़ी में ही जा सकते हैं। जिन्होंने जनता का नेतृत्व किया, जनता के आगे होकर गोलियां खाईं, जो एक दिन जनता की आंखों के तारे थे, वे ही आज पुलिस के पहरे में जनता से मिलने जाते हैं।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'विष्णु प्रभाकर' द्वारा रचित 'सीमा रेखा' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ जन नेता सुभाष की पत्नी सविता द्वारा व्यंग्य स्वरूप उपमंत्री शरत् चंद्र को उस समय कही गई हैं जब वे गोली चलने के घटनास्थल पर पुलिस की गाड़ी में जाने की बातें करते हैं।

व्याख्या :– सविता अपने जेठ उपमंत्री शरत् चंद्र को व्यंग्य करती हुई कहती है कि जनता के नेता अब तो पुलिस की गाड़ी में ही जा सकते हैं। अर्थात् जनता और नेता में सत्ता के कारण दूरी आ गई है इसलिए अब नेता पुलिस संरक्षण के बिना जनता से नहीं मिलते। क्रोध से भरकर वह कहती है कि जिन लोगों ने जनता का नेतृत्व किया, स्वतंत्रता आंदोलन में जनता के आगे होकर गोलियाँ खाई, जो नेता कभी जनता की आँखों के तारे थे अर्थात् जनता में लोकप्रिय थे, आज वही नेता सत्ता मिल जाने पर पुलिस के पहरे में जनता से मिलने जाते हैं।

विशेष :–

1. वर्तमान राजनीतिज्ञों पर व्यंग्य किया गया है।
2. भाषा में व्यंग्यात्मकता है।

2) सुनिए, भाई साहब! बात यह है कि आप अपना संतुलन खो बैठे हैं, आप निरंकुश होते जा रहे हैं। आप अपने को केवल शासक मानने लगे हैं। आप भूल गए हैं कि जन–राज में शासक कोई नहीं होता, सब सेवक होते हैं।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'विष्णु प्रभाकर' द्वारा रचित 'सीमा रेखा' एकांकी से ली गई हैं। यह पंक्तियाँ सविता द्वारा शरत् चन्द्र को उस समय कही गई हैं जब वे प्रदर्शनकारियों का गुंडों के बहकावे में आने की बात कहते हैं।

व्याख्या :– शरत्चन्द्र जब कहते हैं कि प्रदर्शनकारी गुंडों के बहकावे में आ जाते हैं तब सविता उनसे कहती है कि यह क्या बात है कि प्रदर्शनकारी गुंडों के बहकावे में आ जाए, पर आप लोग जो उनके नेता है उनकी बात न सुने। इस पर शरत् आवेश में सविता पर ही

चलाना शुरू हो जाता है। शरत् को असंतुलित होते देख सविता उसको सम्बोधित करती हुई कहती है कि भाई साहब! बात यह है कि आप अपना संतुलन खो चुके हैं। इसलिए आप निरंकुश होते जा रहे हैं। आप स्वयं को शासक मानने लगे हैं इसलिए आप जनता के हित में नहीं सोच रहे। आप भूल चुके हैं कि जनतन्त्र में शासक या नेता कोई नहीं होता, सब सेवक होते हैं। अर्थात् जनतन्त्र में नेता जनता का ही प्रतिनिधि होता है फिर वह स्वयं को जनता से अलग कैसे देख सकता है।

विशेष :–

1. जनतन्त्र के नियम को स्पष्ट किया गया है।
2. वर्तमान समय में जनतन्त्र के होते हुए भी नेता कैसे स्वयं को शासक मानने लगे हैं। इस सत्य को दर्शाया गया है।

3) यहीं कि हमें राज्य की रक्षा करते–करते प्राण दे देने चाहिए, प्राण लेने नहीं चाहिए। हमें देने का ही अधिकार है, लेना का नहीं।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'विष्णु प्रभाकर' द्वारा रचित 'सीमा रेखा' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ जन नेता सुभाष द्वारा अपने बड़े भाई उपमंत्री शरत्चन्द्र को उस समय कही गई हैं जब वह प्रदर्शनकारियों पर पुलिस द्वारा चलाई गोली को उचित ठहराते हैं।

व्याख्या :– सुभाष अपने बड़े भाई उपमंत्री शरत्चंद्र से पुलिस द्वारा जनता पर गोली चलाकर प्राण ले लेने का विरोध करते हुए कहता है कि हमें राज्य की रक्षा करते हुए अपने प्राण दे देने चाहिए, न कि दूसरों के प्राण लेने चाहिए। हमें मात्र प्राण देने का अधिकार है लेने का नहीं। अर्थात् सुभाष सरकारी कर्मचारी तथा सरकार को उनके कर्त्तव्य का बोध करवाना चाहता है क्योंकि उसके अनुसार जनतन्त्र में सरकार व सरकारी कर्मचारी जनता के सेवक होते हैं और सेवक को रक्षा करते हुए अपने प्राण देने चाहिए, न कि जिनकी रक्षा के लिए वे हैं उनके प्राण लेने चाहिए।

विशेष :– जनतन्त्र में सरकार व सरकारी कर्मचारी जनता के सेवक होते हैं, इस बात को स्पष्ट किया गया है।

1) जब तक सरकार और उसके अधिकारी ठीक आचरण नहीं करेंगे, तब तक जनता प्रदर्शन करती ही रहेगी, कानून हाथ में लेती ही रहेगी। भाई साहब, इस नौकरशाही ने, शासन की इस भूख ने आपको जनता से दूर कर दिया है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'विष्णु प्रभाकर' द्वारा रचित 'सीमा रेखा' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ सुभाष द्वारा शरत्चन्द्र को उस समय कही गई हैं जब वह सुभाष से प्रश्न करता है कि जनता के राज में भी सड़कों पर प्रदर्शन होने चाहिए तथा भीड़ को कानून हाथ में लेना चाहिए।

व्याख्या :– शरत्चन्द्र द्वारा पूछे प्रश्न का उत्तर देते हुए सुभाष कहता है कि जब तक सरकार और उसके अधिकारी अपना आचरण सही नहीं करेंगे, तब तक जनता प्रदर्शन करती रहेगी और कानून को अपने हाथ में भी लेगी। वह कहता है कि भाई साहब इस नौकरशाही और राजनीतिज्ञों की सत्ता की भूख ने शासन को अर्थात् सरकार को जनता से दूर कर दिया है।

विशेष :– राजनीतिज्ञों व सरकारी अधिकारियों की स्वार्थपरता की ओर संकेत किया गया है।

5) हाँ, सुभाष भी कुचला गया। लेकिन खबरदार जो उनके लिए रोए। रोने से उन्हें दुःख होगा। उन्होंने प्राण दे दिए पर शासन और जनता का संतुलन ठीक कर दिया। वे शहीद हो गए, पर दूसरों को बचा गए। नगर में अब बिल्कुल शांति है। सब मौन, सगर्व इन बलिदानों की चर्चा कर रहे हैं। अब शोक–संतप्त है।

प्रसंग :– प्रस्तुत पंक्तियाँ सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'नये एकांकी' में संकलित 'विष्णु प्रभाकर' द्वारा रचित 'सीमा रेखा' एकांकी से ली गई हैं। ये पंक्तियाँ शरत्चन्द्र द्वारा अपने परिवार की स्त्रियों को संबोधित करते हुए उस समय कही हैं जब वह परिवार को यह सूचना देते हैं कि भीड़ ने कैप्टन विजय और सुभाष को कुचल कर मार दिया है।

व्याख्या :– शरत्चन्द्र, उमा और अन्नपूर्णा को बताते हुए कहता है कि असंतुलित भीड़ ने जन नेता सुभाष और कैप्टन विजय को कुचल कर मार डाला है। वे सबको रोने से मना करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि रोने से सुभाष और विजय की आत्मा को दुख होगा। उन्होंने अपने प्राणों की बलि देकर शासन और जनता को संतुलित कर दिया है। वे स्वयं शहीद हो गए लेकिन दूसरों को बचा गए हैं अर्थात् असंतुलित भीड़ न जाने कितने लोगों को मारती और बचाव में शासन भी उनको मारता। लेकिन इन दोनों की मृत्यु ने जनता और शासन दोनों को शांत कर दिया। उनकी शहादत के पश्चात् नगर में शांति हो गई। हर तरफ खामोशी छायी है और लोग जन नेता सुभाष और पुलिस कैप्टन विजय के बलिदान की गर्व सहित चर्चा कर रहे हैं।

विशेष :–

1. शहादत उग्र भीड़ को संतुलित कर सकती है।
2. शरत्चन्द्र की सूझबूझ का भी बोध हुआ है जो दुख में भी मानसिक संतुलन बनाए रखते हैं।

10.4 कठिन शब्द

1. तख्त
2. रजनीबाला
3. प्रभात
4. मानवीकरण
5. दोगलापन
6. अग्रसर
7. भावात्मक
8. स्वयंवर
9. पौराणिक
10. तर्कशीलता

10.5 पठनीय पुस्तकें

1. नये एकांकी– सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

डॉ. पूजा शर्मा

व्याख्याता, हिन्दी विभाग, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,

जम्मू विश्वविद्यालय।

B.A. HINDI	UNIT-IV	Lesson No. 11
COURSE CODE : HI-401		B.A. Sem-IV

'भोर का तारा', 'एक दिन' एवं 'सीमा रेखा' एकांकरियों का प्रतिपाद्य एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण

11.0 रूपरेखा

111 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 एकांकियों का प्रतिपाद्य एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण

11.3.1 'भोर का तारा'

11.3.2 'एक दिन'

11.3.3 'सीमा रेखा'

11.4 निष्कर्ष

11.5 कठिन शब्द

11.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

11.7 पठनीय पुस्तकें

11.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन उपरान्त आप 'भोर का तारा', 'एक दिन' तथा 'सीमा रेखा' एकांकियों का मूल उद्देश्य जानने के साथ ही इन एकांकियों के प्रमुख पात्रों से अवगत हो सकेंगे।

11.2 प्रस्तावना

किसी भी कृति की रचना निरुद्देश्य नहीं होती। लेखक किसी–न–किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कृति की रचना करता है। 'भोर का तारा' में लेखक ने कवि के वास्तविक कर्त्तव्य को बताने का प्रयास किया है। व्यक्ति सुख से अधिक महत्व समष्टि–सुख का है यही सत्य लेखक ने इस एकांकी में प्रतिपादित किया है। 'एक दिन' एकांकी में लेखक ने प्राचीन परम्पराओं एवं आदर्शों की आधुनिक सभ्यता एवं नये आदर्शों पर विजय दिखाई है। 'सीमा रेखा' में परिस्थितियों और पात्रों का यथार्थवादी चित्रण करते हुए लेखक ने जनतंत्र के मुख्य आदर्श को स्वाभाविक रूप से उभारा है। लेखक रचना में जिस उद्देश्य को अभिव्यक्ति देता है उसे पूर्ण रूप से व्यक्त करने में पात्रों का पूर्ण योगदान रहता है। पात्र लेखक के उद्देश्य को भी प्रकट करते है साथ ही कथा को गति भी देते हैं।

11.3 एकांकियों का प्रतिपाद्य एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण

11.3.1 'भोर का तारा' एकांकी का प्रतिपाद्य/उद्देश्य

आधुनिक काल के प्रमुख नाटककार 'जगदीशचन्द्र माथुर' द्वारा रचित 'भोर का तारा' एकांकी एक उच्च उद्देश्य को लेकर लिखी गई है और यह उद्देश्य है– संकट के क्षणों में राष्ट्र के पौरुष को जगाना एक कवि का प्रथम कर्तव्य है। अर्थात जो कवि प्रेम आदि व्यक्ति–सुख के लिए अपनी कविता लिखता है, वही संकट के समय में व्यक्ति–सुख को त्याग कर समष्टि–सुख के लिए जब लिखता है उसी में उसके कवि कर्म की सिद्धि है। अतः 'भोर का तारा' से अभिप्राय है कि एक नए युग का, नई भावनाओं का आरम्भ । माधव द्वारा शेखर से आग्रह करना कि वह आक्रमण के समय अपनी कविता राष्ट्र को जगाने के लिए प्रयोग करे तथा शेखर द्वारा मित्र माधव का आग्रह स्वीकार कर ओजमयी कविता का गान करना इस एकांकी में लेखक के उद्देश्य को स्पष्ट कर देता है। इस एकांकी में अपने उद्देश्य को अभिव्यक्त करने के लिए लेखक ने जिस कथा का आधार लिया है वह इतिहास से सम्बन्धित है क्योंकि इसमें पांचवीं शती, सन् 455 के आस–पास गुप्त साम्राज्य की राजधानी उज्जयिनी के कवि शेखर का जीवन है। वह अपने अस्त व्यस्त धर में तल्लीन होकर कुछ गाता–गुनगुनाता है और लिखता रहता है। माधव से वार्तालाप करते हुए वह इस ओर भी संकेत करता है कि राजनीतिज्ञ और मन्त्रीलोग संजीदगी से अमीरी, युद्ध और संधि की समस्याओं को हल करने का नाटक करते हैं किन्तु मनुष्य को इन समस्याओं से कभी मुक्त नहीं करते।

इस एकांकी में लेखक ने कला और देश–प्रेम के मध्य संघर्ष उपस्थित कर अन्त में देश–प्रेम को श्रेष्ठ दिखाया है। इसमें एक कवि की कला की उपासना द्वारा प्रेम और मनुष्यता को लेखक ने उच्च शीर्ष पर पहुँचा दिया है। देश की पुकार को लेखक ने कवि की कला से बेहतर माना है। एक कवि का कर्त्तव्य मात्र आश्रयदाता का मनोरंजन करना ही नहीं बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अपने कवि–कर्म द्वारा जनता में चेतना का संचार करना भी होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु लेखक ने इस एकांकी की रचना की है।

13.1.2 प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण

'भोर का तारा' एकांकी में तीन प्रधान पात्र हैं– शेखर, माधव और छाया।

शेखर

1. शेखर का कवि रूप :– शेखर एक कवि के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होता है। एकांकी के आरम्भ में ही उसके कवि रूप का परिचय हमें मिलता है– ''शेखर कुछ गुनगुनाते हुए टहलता है, या कभी–कभी तख्त पर बैठकर कुछ लिखता जाता है। जान पड़ता है, वह कविता बनाने में संलग्न है, तल्लीन मुद्रा। जो कुछ वह कहता है उसे लिखता भी जाता है।'' वह सदैव एक स्वप्न लोक में रहता है। कल्पना के सागर में डूबता–उतरता अपनी कविता की रचना करता है। उसके लिए सौंदर्य ही कविता है इसलिए वह अपने मित्र माधव से कहता है– ''मुझे तो सौन्दर्य ही कर्तव्य जान पड़ता है। मुझे तो जहां सौन्दर्य दीया पड़ता है, वहां कविता दीख पड़ती है, वहीं जीवन दीख पड़ता है।'' उसकी काव्य– प्रतिभा से प्रसन्न होकर सम्राट स्कन्दगुप्त उसे 'राजकवि' के रूप में सम्मानित करते हैं।

2. संवेदनशील :– शेखर संवेदनशील व्यक्ति है। उसकी संवेदना ही उसे सामान्य में विशेष को देखने की दृष्टि देती है। सम्राट के भवन के निकट, राजपथ पर अन्धी भिखमंगी को वह इस लिए भीख देखा है। क्योंकि उसे देखकर शेखर को उसमें– ''एक कविता, एक लय, एक व्यथा झलक पड़ती है।'' उसकी शारीरिक दीनता को देखकर शेखर को लगता है कि मानो किसी शिल्पकार ने उसे इस ढांचे में

ढाला है। एक भिखमंगी औरत में शेखर को कविता तथा एक शिल्पकार की कला का बोध होना, पाठक को उसके संवेदनशील होने का बोध करवाता है।

3. **प्रेमी :–** शेखर प्रेमी के रूप में भी सामने आता है। वह अपनी प्रेयसी छाया से अत्यन्त प्रेम करता है। किन्तु छाया सम्राट स्कन्दगुप्त के दरबारी देवदत्त की बहन है इसलिए उसे लगता है कि वह कभी छाया को प्राप्त नहीं कर सकता। क्योंकि एक मंत्री की बहिन का मामूली कवि से संबंध होना वह कठिन मानता है किन्तु छाया का प्रेम उसके जीवन का लक्ष्य है– "माधव, जीवन में मेरी दो ही तो साधनाएं हैं, छाया का प्यार और कविता।" इस प्रकार छाया उसके जीवन की प्रेरणा थी और शेखर का प्रेम भी छाया के प्रति स्वच्छ था इसलिए वह छाया को पत्नी रूप में पाता है और उसकी प्रेरणा से 'भोर का तारा' नामक महाकाव्य की रचना भी करता है।

4. **देश–प्रेमी :** शेखर देश–प्रेमी है। जब राष्ट्र को उसकी आवश्यकता पड़ती है तो उस समय शेखर अपने काव्य और प्रेम का बलिदान देकर जनता में देश–प्रेम जगाने का प्रयास करता है। जनता में क्रांति का संचार करने के लिए वह अपने कविकुल शिरोमणि होने के स्वप्न को भी त्याग देता है और ऐसा वह इसलिए कर पाया क्योंकि उसके लिए प्रेम और अपने स्वप्न से बढ़कर देश–प्रेम है।

माधव :–

माधव 'भोर का तारा' एकांकी के प्रमुख पात्र शेखर का मित्र है। वह एक कामकाजी राजनीतिज्ञ और साहसी सैनिक है। वह कल्पना में नहीं, जीवन के यथार्थ में विश्वास रखता है। शेखर उसके विषय में कहता है कि "तुम राजनीतिज्ञ और मंत्री लोग बड़ी संजीदगी के साथ अमीरी–गरीबी, युद्ध और संधि की समस्याओं को हल करने का अभिनय करते हो, परंतु मनुष्य को इन उलझनों के बाहर कभी नहीं लाते।" किन्तु माधव को हम देश प्रेमी के रूप में देखते हैं। वह जागरुक सैनिक, आदर्शवादी व्यक्ति तथा सच्चे मित्र के रूप में हमारे सामने आता है। शेखर को राजकवि बनावाने तथा छाया से मिलाने का श्रेय माधव को ही जाता है। हूणों द्वारा तक्षशिला पर अत्याचार होते देख उसका हृदय देश रक्षा तथा शत्रु के विनाश हेतु अधीर हो जाता है। वह गुप्त साम्राज्य को संकट से उभारने के लिए तक्षशिला से जान हथेली पर रख भाग आता है ताकि देश की जनता से सहयोग की भीख माँग सके। वह शेखर को भी देश प्रेम के गीत लिखने हेतु प्रेरित करता है तथा शेखर से भीख माँगते हुए कहता है– "...शेखर तुम्हारी वाणी में ओज है, तुम्हारे स्वर में प्रभाव। तुम अपने शब्दों के बल सोई हुई आत्माओं को जगा सकते हो, युवकों में जान फूंक सकते हो।" अतः स्पष्ट है कि शेखर इस एकांकी का नायक न होते हुए भी कथा को दिशा देने तथा नायक शेखर के चरित्र को दिशा देने तथा चरम सीमा तक पहुँचाने में सहायक रहा है।

छाया :–

छाया सम्राट स्कन्दगुप्त के दरवार की नर्तकी, कवि शेखर की प्रेयसी, पत्नी तथा राजदरवारी देवदत्त की बहन है। वह शेखर के प्रति आकर्षित है और उसके द्वारा लिखी कविता का गान सम्राट के समक्ष कर शेखर को दरबारी कवि बनाने का आग्रह भी करती है। छाया, शेखर से प्रेम करती है। इसलिए उसे पति रूप में भी स्वीकार किया है। छाया में उन्माद है, मादकता है, जीवन की उन्नत चेतना है। शेखर के काव्य 'भोर के तारा' के विषय में वह कहती है कि यह हमारे प्रेम की अमर स्मृति है। किन्तु उसे चिंता रहती है कि कहीं यह कृति नष्ट न हो जाए, कोई इसे चुरा न ले। इस कृति से शेखर को विशेष ख्याति मिलने वाली थी और शेखर प्रसन्न भी था लेकिन छाया भयभीत थी ताकि उनकी खुशी नष्ट न हो जाए। जो शंका छाया को थी वैसा होता भी है। जब शेखर, माधव के आग्रह से अपने स्वप्न को छोड़ देश–प्रेम की ओर बढ़ता है तब वह माधव से कहती है, "माधव, तुमने तो मेरा प्रभावत नष्ट कर दिया। इस प्रकार छाया शेखर के प्रति अत्यन्त भावुक है किन्तु शेखर के जीवन का उज्जवल पक्ष उसे धैर्य देता है और वह पूर्ण स्थिति को समझ जाती है।

11.3.2 'एक दिन' एकांकी का प्रतिपाद्य एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण

'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी का विषय सामाजिक है जिसमें विवाह से पहले लड़की को देखने की प्रथा का उल्लेख करते हुए यह सत्य स्थापित किया है कि भारतीय आदर्श एवं मान्यताओं द्वारा ही देश व समाज का विकास सम्भव है साथ ही लेखक का उद्देश्य परोक्ष रूप से प्राचीन परम्पराओं व आदर्शों की आधुनिक नई सभ्यता एवं नए आदर्शों पर विजय घोषित कर आधुनिक शिक्षा और पाश्चात्य सभ्यता को अपनाए हुए युवकों को यह समझाना है कि भारतीय आदर्श और मान्यताओं से ही हमारा देश व समाज उन्नति की राह पर चल सकता है।

एकांकी में एक तरफ प्राचीन विचारों से ग्रस्त अपने वंश की मर्यादा और भारतीय आदर्शों में आस्था रखने वाला राजनाथ है तो दूसरी तरफ आधुनिक शिक्षा में पला उनका बेटा मोहन। दोनों की विचारधाराओं में बहुत अन्तर है और इस अन्तर को समाप्त कर हम कैसे एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं यही बताना लेखक का उद्देश्य रहा है। मोहन जब अपनी बहन शीला को दिखाने के उद्देश्य से मित्र निरंजन को घर में बुलाता है तो मोहन का यह मर्यादा विरुद्ध कार्य राजनाथ को स्वीकार्य नहीं होता। राजनाथ विवाह पूर्व लड़के द्वारा लड़की को देखना मर्यादा का उल्लंघन मानता है किन्तु बेटे की आधुनिक विचारधारा इसे झूठी मर्यादा का नाम देती है क्योंकि उसके मतानुसार अपनी रूचिानुरूप कन्या पाने के लिए विवाह पूर्व उसे देखना, बात करना पूर्ण रूप से सही है। राजनाथ नारी की स्थिति व्यक्त करते हुए कहता है– "लड़कियों का स्वयंवर होता था पर चुनता कौन था? कन्या या वर? एक कन्या के लिए सैंकड़ों युवक आते थे। रूप, गुण और पौरुष में जो बड़ा होता, उसे कन्या चुनती। जयमाला जिसके गले में पड़ती वह अपने भाग्य पर फूल उठता। उस युग में कन्या की यह मर्यादा थी, आज क्या है? स्त्री जाति जितने नीचे पिछले दस वर्षों में गई है उतनी पहले कभी नहीं गई थी।" अतः राजनाथ पुरुष द्वारा नारी को परखना नारी जाति के समाज में गिरते स्तर का लक्ष्ण मानते हैं क्योंकि आज के समय में विवाह पूर्व जो नारी को देखने की प्रथा चली है उसमें नारी की रूचि पूर्ण रूप से लुप्त है मात्र लड़के को ही यह स्वतन्त्रता है कि वह अपने अनुसार लड़की का चुनाव करे। राजनाथ को आधुनिक शिक्षा और भारतीयों का विदेशी संस्कृति को अपनाते जाना भी अखरता है क्योंकि प्रत्येक वस्तु को विदेशी नजरीय से देखना भारतीय संस्कृति के लिए संकट का कारण है। राजनाथ ने अपनी बेटी को आधुनिक शिक्षा नहीं दी अपितु उसे रामायण–महाभारत पढ़ाया। ताकि संस्कारों का विकास उसके भीतर हो सके। आज के युग में रामायण–महाभारत पढ़ाना चाहे अनपढ़ता ही कहलाती हो पर उसमें सीता–द्रौपदी जैसी नारियां भी हैं जो नारी के भीतर निडरता को जागृति करती हैं। शीला में भी हम उन्हीं गुणों को पाते हैं। शीला का निडर होकर निरंजन से बात कर उसकी आधुनिक मानिकता को खंडित करता है। शीला के तर्कों के सामने निरंजन टिक नहीं पाता और उसकी सच्चरिता व वाक्पटुता पर मोहित होकर उससे शादी करने को तैयार हो जाता है।

लेखक ने पाश्चात्य सभ्यता पर भारतीय सभ्यता की तथा आधुनिक नूतन शिक्षा पर भारतीय आदर्शों की जीत दिखाकर अपने उद्देश्य की पूर्ति की है। क्योंकि लेखक का उद्देश्य यही है कि हमारा समाज भारतीय आदर्शों एवं परम्पराओं को आदर सहित स्वीकार करे, तभी यह देश उन्नति के पथ पर बढ़ सकता है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण

राजनाथ का चरित्र–चित्रण

1) संस्कार प्रेमी

राजनाथ 'एक दिन' एकांकी में चित्रित मध्यवर्गीय व्यक्ति है जिसकी स्थिति पहले अच्छी थी क्योंकि उसके पिता एक रियासत के मालिक थे। समय की गति और परिवर्तन को वह स्वीकार करता है किन्तु अपने संस्कारों को भूलना उसे मान्य नहीं। अपनी वंश परंपरा एवं मर्यादा के लिए तो वह सब न्योछावर करने को तैयार है।

2) परम्परा विरोधी आधुनिक मानसिकता का विरोधी

राजनाथ प्राचीन परम्पराओं के साथ जीने वाला व्यक्ति है इसलिए परम्परा विरोधी आधुनिक मानसिकता उसे स्वीकार नहीं है। विवाह पूर्व लड़के का लड़की को देखना उसे परम्परा तथा संस्कार विरोधी कार्य लगता है इसलिए वह अपने बेटे तथा उसके मित्र निरंजन की इस आधुनिक मानसिकता का विरोध करता है जिसमें पसंद करने का अधिकार मात्र पुरुष का हो, कन्या का नहीं। वह अपने बेटे को स्वयंवर की मर्यादा का स्मरण करवाता है जिसमें वर चुनाव का अधिकार और स्वतंत्रता कन्या को थी।

3) धन की अपेक्षा गुण को महत्व देने वाला

राजनाथ मनुष्य के गुणों को महत्व देता है न कि धन को। उसका बेटा जब कहता है कि निरंजन धनवान है इसलिए उसकी बहन को उसके साथ विवाह करने पर सुख मिलेगा, तब राजनाथ अपने विचार प्रकट करते हुए कहता है कि कन्या का विवाह करना हो तो लड़के को उसकी पद, प्रतिष्ठा और अधिकार से अलग करके देखो। ऐसे मनुष्य का चुनाव करो जो धन और अधिकार से नहीं अपितु अपने गुणों से विकास करे। क्योंकि संस्कार की जड़ें गहरी होती हैं वह शीर्घ नहीं उखड़तीं किन्तु धन, पद, प्रतिष्ठा, अधिकार सदा नहीं रहते, शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

आधुनिक शिक्षा के प्रति उदासीनता :–

राजनाथ आधुनिक शिक्षा को युवकों द्वारा अपने संस्कारों, प्राचीन आदर्शों और मान्यताओं के प्रति उदासीन व भूल जाने का कारण मानता है। उसका मानना है कि यह आधुनिक शिक्षा का ही प्रभाव है जो आज का युवा वर्ग अपने दादा–परदादा का नाम तक नहीं जानता। इतिहास तो जान लेता है पर अपने घर के इतिहास को नहीं जान पाता। आज की पीढ़ी में जो चरित्र बल की कमी है उसका उत्तरदायी भी राजनाथ आधुनिक शिक्षा को मानते हुए कहता है, "...यह नई शिक्षाा क्या हुई, चरित्र की बागडोर छोड़ दी गई। मन के विचार और भावना की आंधी में सेमर की रुई–सी हमारी पीढ़ी उड़ी जा रही है।"

अतः राजनाथ को लेखक ने आधुनिक शिक्षा को दोष देने वाला, आधुनिक शिक्षित युवकों की कटू आलोचना करने वाला तथा युवकों के चरित्र को पर बल देने वाला चित्रित किया है।

शीला का चरित्र–चित्रण

भारतीय संस्कृति के प्रति आस्थावान :– शीला, राजनाथ की बेटी है और पिता की भाँति वह भी भारतीय आदर्शों, मान्यताओं एवं परम्पराओं को महत्व देती है। इसलिए शीला को हम एक संस्कारी लड़की की संज्ञा दे सकते हैं। वह किसी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने नहीं गई परन्तु घर पर ही उसे रामायण–महाभारत जैसे धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करवाया गया। इसलिए पिता की भाँति वह भी भारत की प्राचीन परम्पराओं को समाज की उन्नति के लिए आवश्यक मानती है।

वंश परम्पराओं की पक्षधर :– शीला वंश परम्पराओं को महत्व देती है इसलिए भाई मोहन जब एक अमीर मित्र निरंजन को अपने घर शीला को दिखाने लाता है तो शीला वंश–परम्पराओं का अनुसरण करते हुए उस अपरिचित युवक के सामने नहीं जाती। क्योंकि वह नहीं

चाहती थी कि उसके सुख के लिए वंश की परम्पराओं को तोड़ा जाए। वह पिता से कहती है– ''...किसी पेड़ के नीचे... झोंपड़ी में मैं सुखी रहूंगी। जानकी के चौदह वर्ष वन में बीत गए। मैं क्या कहूं? जिसका संग हो उसका विश्वास और आदर मिल जाए, इससे बड़ा धन सोने–चांदी में लिपटना नहीं है।''

साहसी नारी :– शीला के लिए सीता आदर्श है। उसका मानना है कि देश के सभी पढ़े–लिखे लड़के निरंजन हैं, उनमें रावण जैसा संयम भी नहीं है। इसलिए इन लड़कों के इस रोग का उपचार करने हेतु प्रत्येक लड़की को सीता बनना पड़ेगा। अपने साहस के बल पर ही वह निरंजन से अकेले बात कररने को तैयार होती है। शीला में सावित्री, सीता जैसी पवित्रता, त्याग, क्षमा और शक्ति है। वह दृढ़तापूर्वक भाई से कहती है कि मैं निरंजन से बात कर उसे इस योग्य नहीं छोड़ूँगी कि वह पुणः किसी लड़की से ऐसा व्यवहार कर सके।

गुणों को महत्त्व देने वाली :– शीला व्यक्ति का वास्तविक, धन उसके गुणों को मानती है यही कारण था कि वह बनावटी, उतावले तथा शिक्षा–धन के दंभ वाले युवक की पत्नी बनना स्वीकार नहीं करती। वह पुरुष का गुण धन, रूप और विद्या नहीं अपितु पुरुष के संयम को मानती है। वर्तमान समय में युवकों द्वारा विवाह पूर्व लड़कियों को देखना वह बुरी प्रथा मानती है। तर्क सहित इसका निराकरण करती हुई निरंजन के समक्ष कहती है कि ''आपकी अवस्था का पुरुष जब मेरी आयु की लड़की के पास जाता है, अन्धा हो जाता है। और कहीं संयोग से लड़की सुन्दर हुई तो वह उन्मत्त हो उठता है। अन्धा क्या देखेगा? उन्मत्त क्या समझेगा? इसलिए अपने आप न देखकर किसी दूसरे से देखा लेना आप जैसों के हित की बात है।'' शीला अपने तर्कों से निरंजन को निरुत्तर कर देती है। शीला की सच्चरित्रता एवं तर्कशीलता को देखकर निरंजन अपनी गलती स्वीकार करता है और शीला से पूर्व जन्म का संयोग मानता है। शीला भी निरंजन के चरित्र में आए बदलाव को देख अपनी स्वीकृति देती हुई कहती है कि, ''निश्चित। जीवन–भर का सुख और सन्तोष इसी विश्वास पर है।''

भारतीय नारी की गरीमा :– शीला में भारतीय नारी की गरिमा दृष्टिगोचर होती है। प्राचीन परम्पराओं, मान्यताओं एवं मर्यादाओं को तो वह अपने जीवन में अपनाए हुए है। साथ ही एक भारतीय नारी की भाँति त्याग, क्षमा, आदर्श को भी अपने चरित्र में समाहित किए हुए है। भारतीय नारी की गरीमा का परिचय देते हुए वह अपने भाई से कहती है– ''जानकी का युग इस देश में कभी नहीं मिटेगा। मैं जानकी हूं। इस देश की कोई भी स्त्री जानकी है। जब तक हमारे भीतर जानकी का त्याग है, जानकी की क्षमा है, तब तक हम वहीं हैं। तुम्हारे लिए जानकी पौराणिक है इसलिए असत्य है। मेरे लिए वह भावगम्य हैं। उनके भीतर मेरी सारी समस्याएँ, सारे समाधान हैं। राम में तुम अविश्वास कर सकते हो, जानकी में अविश्वास का अधिकार तुम्हें नहीं।'' शीला के मुख से निकला ये एक–एक शब्द उसमें व्याप्त भारतीय नारी की गरीमा को प्रदर्शित करता है।

अतः शीला में हम भारतीय आदर्श, सभ्यता एवं प्राचीन मान्यताओं में पूर्ण आस्था रखने वाली भारतीय नारी के रूप को देख सकते हैं।

निरंजन का चरित्र–चित्रण :–

निरंजन लगभग तेईस वर्ष का लम्बा–गोरा, आधुनिक युग की पीढ़ि का प्रतिनिधित्व करता है। सुविधा सम्पन्न परिवार से सम्बंधित तथा आधुनिक शिक्षा को ग्रहण कर वह प्राचीन भारतीय परम्पराओं, मर्यादाओं एवं मान्यताओं को पुरानी रूढ़ियां मानता है जिनका तोड़ा जाना निश्चित है। यह आधुनिक शिक्षा का प्रभाव ही है कि वह मोहन के निमंत्रण पर उसकी बहन शीला को देखने उनके घर चला जाता है क्योंकि विवाह पूर्व लड़की को देखना, उससे अकेले बात कर उसका चुनाव करने में वह कोई बुराई नहीं समझता। वह आधुनिक पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है जो लड़कियों से खुलकर बात कर सकती है। नारी की लज्ज़ा, मर्यादा को वह बुरा मानकर नारी जाति द्वारा इसे त्यागने के पक्ष में है।

आज की पीढ़ी जीवनसाथी का चुनाव स्वयं करना चाहती है लेकिन भारतीय परम्परा के अनुसार यह मर्यादाओं का उल्लंघन है। निरंजन भारतीय परम्पराओं में विश्वास नहीं करता इसलिए मर्यादाओं का उल्लंघन कर शीला को अपने पास बुलाता है और संकोचवश जब शीला उसके पास नहीं जाती तो वह इसे अपना अपमान समझकर वापिस चले जाना चाहता है। निरंजन अपनी शिक्षा, पद और प्रतिष्ठा के दम्भ में था किन्तु शीला उसका यह अहम् अपनी तर्कशीलता से तोड़ती है। अन्त में निरंजन की विचारधारा परिवर्तित होती है। जिसका कारण भारतीय परम्परा का अनुसरण करने वाली शीला है। शीला की सच्चरित्रता और वाक्पटुता के कारण वह परास्त होकर प्राचीन मान्यताओं का पक्षधर हो जाता है।

11.3.3 'सीमा रेखा' एकांकी का प्रतिपाद्य एवं प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण

विष्णु प्रभाकर द्वारा रचित 'सीमा रेखा' एकांकी एक राजनीतिक एकांकी है, जिसके कथानक में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् देश में होने वाले दंगे–फसाद, प्रदर्शनों को आधार बनाकर सरकार–जनता के मध्य पनपी दूर को व्यक्त कर उसे समाप्त करने का प्रयास किया गया है।

यह एकांकी समसामयिक राजनीतिक समस्या पर लिखी गयी है जिससे भारत की जनतंत्र प्रणाली का स्वरूप स्पष्ट हुआ है। एकांकी में एक ही घर के चार सगे भाईओं– लक्ष्मीचन्द्र, शरत्चन्द्र, कैप्टन विजय और सुभाषचन्द्र के माध्यम से भिन्न–भिन्न व्यवसायों एवं विचारधारों को स्पष्ट करते हुए जनतंत्र में राजनीतिक समस्या और उसके समाधान को व्यक्त कर दिया है। चार भाइयों में समाज के चारा वर्ग– व्यापार, राजनीति, पुलिस और जन चित्रित हुए हैं। लक्ष्मी चन्द्र व्यापारी है, शरत्चंद्र तत्कालीन सरकार का उपमंत्री है, कैप्टन विजय पुलिस कप्तान है और सुभाषचंद्र जननेता है इसे विरोधी पक्ष में भी रख सकते हैं। जिस प्रकार एक ही समाज में भिन्न–भिन्न विचारधाराओं के वर्ग एक साथ रहते हैं वैसे ही ये चारों भाई भी अलग विचारधारा रखते हुए भी एक घर में रह रहे हैं किन्तु जब अपना स्वार्थ सामने आता है तो यह अपनी विचारधारा को ही सही समझते हैं। लेखक ने भी इस एकांकी में सिद्ध किया है कि देश में प्रजातंत्र की असफलता का मूल कारण संकुचित स्वार्थपरता तथा उत्तरदायी व्यक्तियों की अनुदारता है।

इस एकांकी का आरम्भ एक घटना से होता है और वह है– शहर में विद्यार्थियों का सरकार के विरोध में प्रदर्शन करना। यह प्रदर्शन जब दंगे का रूप ले लेता तो पुलिस को आत्मरक्षा के लिए गोली चलानी पड़ती है जिसका परिणाम यह निकलता है कि इस गोलावारी में कुछ लोगों की जान चली गई। इसी घटना को लेकर फिर परिवार में विवाद चल पड़ता है। शरत्चंद्र का विचार है कि गोली चलने का कोई कारण होगा। लक्ष्मीचंद्र भी पुलिस द्वारा आत्मरक्षा में चली गोली को गलत नहीं ठहराता किन्तु जन नेता सुभाषा की पत्नी सविता का मानना था कि गोली पुलिस को जनता की रक्षा के लिए दी जाती है, न कि आत्मरक्षा के लिए। शरत् पुलिस का पक्ष लेते हुए कहता है कि भीड़ को कानून हाथ में लेने का अधिकार नहीं है परन्तु वह यह बात भी जानते हैं कि जनता का राज है तो जनतंत्र में जनता की प्रतिष्ठा होती है। सुभाष किसी की बात न मानते हुए अपना तर्क देता है कि जनता के राज में गोली चलाना जुर्म है। जनतंत्र की शक्ति का उल्लेख करते हुए वह कहता है कि जिस जनता ने सत्ता पक्ष को शासन की डोर दी, वही सत्ता उन पर गोली चलने देगी तो यह कहाँ तक उचित है। जब तक सत्ता और उसके सब अधिकारी अपना आचरण सुधार न ले तब तक जनता प्रदर्शन करती रहेगी और कानून भी हाथ में लेगी। क्योंकि इस नौकरशाही, शासन की भूख ने सरकार को जनता से बहुत दूर कर दिया है।

सारी घटना की वास्तविकता जानकर विजय, सुभाष भीड़ को शांत करने हेतु उनके बीच जाते हैं किन्तु भीड़ अपना संतुलन खो बैठती है, परिणामस्वरूप विजय और सुभाष बेकाबू भीड़ द्वारा कुचले जाते हैं। उनके प्राणों की आहुति भीड़ पर अंकुश गला देती है। प्राण देकर ही सही पर जनता का संतुलन ठीक हो गया। शरत् भी वहां जाता है और दोनों की मृत्यु होते देख कहता है कि सुभाष की मृत्यु

जनता की क्षति है तो विजय की मृत्यु सरकार की। शरत् की पत्नी अन्नपूर्णा इसे घर की क्षति मानती है। इन भिन्न–भिन्न विचारों का विरोध करती सुभाष की पत्नी सविता कहती है– ''नहीं जीजी, यह घर की नहीं, सारे देश की क्षति है। देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं?'' तभी शरत् भी सविता का समर्थन करता है– ''तुमने ठीक कहा सविता। यह हमारे देश की क्षति है। जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।'' अर्थात् शरत् जनतंत्र की, वास्तविकता को भलि–भाँति जानता है। तभी तो वह यह स्वीकार करता है कि– ''जनता का राज है और जनता के राज में, जनतन्त्र में, जनता की प्रतिष्ठा होती है।'' इस प्रकार लेखक ने कर्तव्य पथ की सीमाओं का उल्लेख करते हुए जनता और सरकार के मध्य सामंजस्य स्थापित करने के अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की है।

प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण :–

शरत्चन्द्र :–शरतचन्द्र 'सीमा रेखा' एकांकी का प्रमुख पात्र है। वह तत्कालीन सरकार का उपमंत्री तथा गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित है। इस एकांकी में विद्यार्थियों और पुलिस के मध्य पत्थराव तथा गोली की घटना घटित होती है और इसी घटना से शरत् का चरित्र उभरकर सामने आता है।

दंगों के विरोधी :– शरतचन्द्र समाज में होने वाले दंगों के विरोधी हैं क्योंकि उनका मानना है कि इन दंगों से समाज तथा सरकार की क्षति होती है। विद्यार्थी दंगाइयों के बहकावे में आकर दंगे तथा लूट–पाट करते हैं, सरकार को गाली देते है।। जबकि जनतन्त्र में ऐसा नहीं होना चाहिए, क्योंकि जनतन्त्र में जनता का राज होता है। सरकार तथा देश जनता के बल पर ही विकास पाता है इसलिए जनता को अपने देश तथा समाज की क्षति नहीं करनी चाहिए।

संवेदनशील :– राजनीतिक क्षेत्र से सम्बंधित होने पर भी शरत्चन्द्र एक संवेदनशील व्यक्ति है। प्रदर्शनकारी विद्यार्थियों पर पुलिस द्वारा गोली चलाए जाने की सूचना मिलते ही वह घटनास्थल पर जाने के लिए तैयार हो जाता है लेकिन कैप्टन विजय के आ जाने पर पहले वह घटना स्थल की सारी वस्तु स्थिति प्राप्त करते हैं जिसमें उन्हें ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के पथराव करने के पश्चात् पुलिस को आत्मरक्षा के लिए गोली चलानी पड़ी। पूरी स्थिति की जानकारी होने पर उनके संवेदनशील हृदय का उल्लेख हुआ है क्योंकि वह पुलिस वालों के घायल होने पर भी उतने ही दुखी होते हैं जितना दुख उन्हें पुलिस की गोली से मरने वाले या घायल होने पर हुआ। आज का नेता मात्र सरकार की चिन्ता करता है लेकिन शरत्न्द्र को जनता की भी चिन्ता है। विजय से कहे उसके ये शब्द– ''विजय यह तुमने क्या कर डाला? तुमने गोली क्यों चलाई? तुम्हें सोचना चाहिए था कि... नहीं, नहीं, यह बहुत बुरा हुआ। जानते नहीं अब जनता का राज है और जनता के राज में, जनतन्त्र में, जनता की प्रतिष्ठा होती है।'' शरत् की जनता के प्रति संवेदनशीलता को ही दर्शाते हैं।

सरकार–जनता में तालमेल के पक्षधर :– शरत् ऐसा नेता है जो सरकार और जनता में परस्पर तालमेल का पक्षधर है। वह जनता पर गोली चलाना गलत मानता है क्योंकि जनता की प्रतिष्ठा को समझता है वहीं बड़े भाई लक्ष्मी के दस वर्षीय बेटे की पुलिस गोली से हत्या होने पर उसे धक्का तो लगता है किन्तु वह पूर्ण दोष पुलिस का भी नहीं लगाता, भीड़ को नियंत्रित करते हुए जब विजय और सुभाष मारे जाते हैं। तो वह रोता नहीं और न ही किसी अन्य को रोने देता है क्योंकि वह इन दोनों को शहीद मानता है जिन्होंने अपनी जान देकर दूसरों को बचा लिया। बड़े भाई लक्ष्मी के बेटे अरविंद तथा विजय, सुभाष की मृत्यु को वह जनता और सरकार दोनों की क्षति मानता है। उसके अनुसार– ''जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती...।''

अतः कहा जा सकता है कि शरत् चन्द्र के चरित्र में हमें एक आदर्श नेता, देश भक्त तथा संवेदनशील व्यक्ति के दर्शन होते हैं।

सुभाषचन्द्र का चरित्र–चित्रण :–

सुभाष चन्द्र 'सीमा रेखा' एकांकी में चित्रित दूसरा महत्वपूर्ण पात्र है। जो चारों भाइयों में सबसे छोटा तथा जन का नेता है। उसे हम जनता का प्रतिनिधि कह सकते हैं। सुभाष के चरित्र में दो पक्ष विशेष रूप से उबरकर सामने आते हैं– निर्भीक जन नेता तथा बलिदान की भावना से परिपूर्ण।

सुभाष जनता का प्रतिनिधित्व करता है इसलिए निर्भीक होकर अपनी बात सबके सामने रखता है। वह पुलिस द्वारा गोली चलाने का विरोध करता है और इसी विरोध को अपने भाई शरत्चन्द्र के समक्ष व्यक्त करते हुए कहता है– "हमें राज्य की रक्षा करते–करते प्राण दे देने चाहिए, प्राण लेने नहीं चाहिए। हमें देने का ही अधिकार है, लेने का नहीं!" जनता की रक्षा और हक के लिए लड़ते हुए वह अपने भाई के भी विरुद्ध हो जाता है। तभी तो वह शरत् से कहता है, "मैं जनता से प्रतिज्ञा करके आया हूँ कि आज शाम तक गोली चलाने वाले कप्तान–पुलिस को मुअत्तिल कराके छोड़ूंगा।" सुभाष की यह प्रतिज्ञा उसके एक अच्छा जन नेता होने को तो प्रदर्शित करती ही है साथ ही उसकी निर्भीकता को भी सामने लाती है। वह सत्ता के नेता शरत् के समक्ष निर्भीकता से यह भी स्वीकार करता है कि, "जब तक सरकार और उसके अधिकारी ठीक आचरण नहीं करेंगे, तब तक जनता प्रदर्शन करती ही रहेगी, कानून हाथ में लेती ही रहेगी।" इतना ही नहीं वह शरत् पर यह आरोप भी लगा देता है कि नौकरशाही तथा शासन की भूख आपको जनता से दूर कर रही है।

यही निर्भीकता उसके भीतर बलिदान की भावना को जागृत रखती है। वह शरत् को अपने साथ भीड़ को नियंत्रित करने के उद्देश्य से ले जाता है। लेकिन भीड़ पर संतुलन पाने के लिए वह अपने प्राणों की बलि दे देता है। शरत् के कहे ये शब्द, "सुभाषा भी कुचला गया। लेकिन खबरदार जो उनके लिए रोए। रोने से उन्हें दुख होगा। उन्होंने प्राण दे दिए पर शासन और जनता का संतुलन ठीक कर दिया। वे शहीद हो गए, पर दूसरों को बचा गए।" जनता तथा देश हित के लिए सुभाष के बलिदान को इंगित करते है।

अतः सुभाष एक सच्चा जन नेता है जो अपने देश से प्रेम करता है और समय आने पर अपने प्राणों का बलिदान देने से भी पीछे नहीं हटता।

विजय का चरित्र–चित्रण :–

विजय एक आदर्श कर्मचारी है। आरम्भ में लोगों पर गोली चलाने के कारण हम उसे भ्रष्ट पुलिस का अंग मानने की गलती करते हैं किन्तु पूर्ण वस्तु स्थिति का ज्ञात होने पर विजय का चरित्र स्पष्ट रूप से उबरकर सामने आता है। विजय ने गोली जानबूझ कर नहीं चलाई अपितु जब भीड़ अपना निमंत्रण खोकर पुलिस पर पथराव करती है तब आत्मरक्षा हेतु वह गोली चलाता है। क्योंकि जब जनता ही अपने देश में हिंसा का सहारा लेगी तो पुलिस को इसे नियंत्रित करने के लिए गोली भी चलानी पड़ती है। लेकिन ऐसा नहीं है कि विजय को गोली चलाने का दुख नहीं है। क्योंकि गोलीभारी में निर्दोष जनता की भी हत्या हुई है इसका उसके हृदय पर गहरा अघात होता है। इसलिए वह जनता के समक्ष स्वयं को सौंप देता है। लेकिन बेकाबु भीड़ वियज पर अपनी निर्दयता दिखाती है और उसे कुचल कर मार देती है। विजय की मृत्यु से जनता शांत तो हो जाती है लेकिन इस मृत्यु से देश की क्षति भी होती है क्योंकि उसने के ईमानदार कर्मचारी को खो दिया।

लक्ष्मीचन्द्र का चरित्र–चित्रण :–

'सीमा रेखा' एकांकी में चित्रित लक्ष्मीचन्द्र का चरित्र एक स्वार्थी व्यापारी का है जिसके लिए अपने स्वार्थ से ऊपर न तो देश है और न ही सरकार। स्थितिानुरूप उसकी विचारधारा परिवर्तित होती हुई दिखाई दी है। आरम्भ में वह पुलिस द्वारा गोली चलाने का समर्थन करता दिखता है किन्तु जैसे ही उसे ज्ञात होता है कि उसका बेटा भी इस गोलीकाण्ड में मारा गया है तो वह पूर्ण रूप से पुलिस तथा

सरकार के विरुद्ध हो जाता है ''जब पैसे की जरूरत होती है तो मेरे पास भागे आते हो! टेक्स मांगते हो, व्यापार में पैसा लगाने को कहते हो और... मुझी पर गोली चलाते हो...।'' लक्ष्मी के ये शब्द इस बात को स्पष्ट करते हैं कि ऐसे तो व्यापारी सरकारी की सहायता करते हैं और सरकार व्यापारी की किन्तु एक व्यापारी जब अपना अहित होता देखता है तो वह सरकार के पक्ष में नहीं होता। अपने बेटे के लिए लक्ष्मी का जो विलाप है उसके एक भावुक पिता होने का द्योतक है क्योंकि व्यक्ति कितना भी स्वार्थी क्यों न हो अपनी संतान के प्रति मोह उसमें होता ही है।

सविता का चरित्र–चित्रण :–

सविता 'सीमा रेखा' एकांकी की प्रमुख नारी पात्र है जो सुभाष की पत्नी है। एक जन नेता की पत्नी होने के कारण उसमें भी हम जन के प्रति प्रेम को देखते हैं। उसके चरित्र की निम्न विशेषताएं हैं–

जन की हितेषी :–

सविता एक जन नेता की पत्नी है और उसका प्रभाव उसके चरित्र पर भी पड़ा है। वह पुतिस द्वारा चलाई गोली का विरोध करती हुई कहती है– ''गोली उन्हें आत्मरक्षा के लिए नहीं दी जाती, जनता की रक्षा के लिए दी जाती है।'' जब शरत् कहता है कि विरोध को रोकने का पुलिस को पूरा अधिकार है तब वह कहती है कि विरोध के कारण को देखना सरकार का कर्त्तव्य था। वह प्रदर्शनकारियों को गुंडा कहे जाने का भी विरोध करती है। क्योंकि उसका मानना है कि जनता गुंड़ों के बहकावे में आ सकती है तो सरकार के क्यों नहीं। सरकार के नेता तो सब कुछ थे उनके लिए, फिर क्यों उनकी नहीं सुनी गई।

निर्भीक व स्पष्टवादी :–

सविता में हम निर्भीकता तथा स्पष्टवादिता को भी देखते हैं क्योंकि अपने विचारों को वह पूर्ण स्पष्टता के साथ निर्भीक होकर दूसरों के सामने रखती है। जब शरत् चन्द्र प्रदर्शनकारियों के गुण्डों के बहकावे में आने की बात करता है तब सविता यह बात स्वीकार नहीं करती तथा शरत्चन्द्र के आवेश में आने पर वह निर्भीकता से स्पष्ट शब्दों में शरत्चन्द्र को कहती है कि, ''सुनिए, भाई साहब! बात यह है कि आप अपना संतुलन खो बैठे हैं, आप निरंकुश होते जा रहे हैं। आप अपने को केवल शासक मानने लगे हैं। आप भूल गए हैं कि जन–राज में शासक कोई नहीं होता, सब सेवक होते हैं।''

वाणी में व्यंग्यता :– सविता सबसे छोटी है लेकिन वह व्यंग्यता में निपूर्ण है। व्यंग्य व्यक्ति पर सीधा चोट करते हैं और सविता भी अपने भीतर का रोष व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त करती है। 'सीमा रेखा' में सविता के व्यंग्य कई स्थानों पर देखने को मिलते हैं। शरत्चन्द्र जब पुलिस संरक्षण में प्रदर्शनकारियों के पास जाने की बात करता है तब सविता व्यंग्यपूर्ण वाणी में उनसे कहती है– ''जनता के नेता अब पुलिस की गाड़ी में ही जा सकता है। जिन्होंने जनता का नेतृत्व किया, जनता के आगे होकर गोलियाँ खाई जो एक दिन जनता की आंखों के तारे थे, वह ही आज पुलिस के पहरे में जनता से मिलने जाते हैं।'' सविता की वाणी में व्याप्त व्यंग्यता एक ओर यहाँ उसकी बुद्धिमता का प्रदर्शन करती है वहीं दूसरी तरफ सत्य को भी उद्घाटित करती है।

संवेदनशील :– जनता के प्रति सविता का स्नेह उसकी संवेदनशीलता को स्पष्ट करता है क्योंकि जब तक व्यक्ति में संवेदनशीलता नहीं होगी तब तक व्यक्ति दूसरों के हित की नहीं सोच पाता। एकांकी के आरम्भ से लेकर अन्त तक सविता की जनता के प्रति संवेदनशीलता प्रकट होती है। वह जनता के हित के लिए अपने पारिवारिक सदस्यों का भी विरोध करती है किन्तु वह हृदय से किसी का अपमान नहीं करना चाहती। परिवार के समक्ष सविता के कहे ये शब्द, ''मैं क्षमा चाहती हूँ। आप सब मुझसे बड़े हैं। आपका अपमान मैं कभी नहीं कर

सकती, ऐसा सोच भी नहीं सकती। पर इस नाते–रिश्ते से ऊपर भी तो हम कुछ हैं। हम स्वतंत्र भारत की प्रजा हैं, हम एक स्वतन्त्र देश के नागरिक हैं, हम इन्सान हैं।'' उसकी संवेदनशीलता तथा इन्सानियत को स्पष्ट करते हैं।

अतः कह सकते हैं कि सविता इस एकांकी की सबसे सशक्त नारी पात्र है जो जनता के हित का समर्थन करती है।

11.4 निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'भोर का तारा', 'एक दिन' तथा 'सीमा रेखा' एकांकियों के लेखकों ने एक निश्चित उद्देश्य की पूर्ति हेतु इनकी रचना की और इन एकांकियों के पात्रों ने उनके उद्देश्य को सफल बनाने में अहम् भूमिका निभाई है। क्योंकि पात्रों के माध्यम से ही लेखक अपने उद्देश्य को रचना में अभिव्यक्ति देता है।

11.5 कठिन शब्द

1. निरुद्देश्य
2. समष्टि–सुख
3. व्यक्ति–सुख
4. यथार्थवाद
5. ओजमयी
6. संजीदगी
7. वाक्पटुता
8. भावगम्य

11.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

(i) 'भोर का तारा' एकांकी का प्रतिपाद्य/उद्देश्य स्पष्ट करें।

उ) ____

____

____

____

____

(ii) 'एक दिन' एकांकी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

उ) ____

____

____

____

____

(iii) 'सीमा रेखा' एकांकी में व्यक्त लेखक के प्रतिपाद्य को स्पष्ट करें।

उ) ____

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

(iv) 'माधव' के चरित्र पर प्रकाश डालिए।

उ) ———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

(v) 'छाया' के चरित्र की विशेषताओं पर रोशनी डालिए।

उ) ———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

(vi) 'भोर का तारा' एकांकी के प्रमुख पात्र शेखर का चरित्र–चित्रण कीजिए।

उ) ———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

(vii) 'एक दिन' एकांकी के पुरुष पात्र 'राजनाथ' का चरित्र–चित्रण कीजिए।

उ) ———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

(viii) 'एक दिन' एकांकी की 'छाया' में भारतीय नारी के दर्शन होते हैं। सिद्ध कीजिए।

उ) ———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

———————————————————————————

(ix) **आधुनितावादी 'निरंजन' के चरित्र को स्पष्ट करें।**

उ) ---

(x) **'शरत्चन्द्र' का चरित्र–चित्रण कीजिए।**

उ) ---

(xi) **'सीमा रेखा' एकांकी की सशक्त नारी पात्र 'सविता' के चरित्र की विशेषताएँ बताइए।**

उ) ---

(xii) **'सीमा रेखा' के जननेता 'सुभाषचन्द्र' का चरित्र–चित्रण कीजिए।**

उ) ---

11.7 पठनीय पुस्तकें

(i) नये एकांकी– सं. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

डॉ. पूजा शर्मा

व्याख्याता, हिन्दी विभाग, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,

जम्मू विश्वविद्यालय।

भोर का तारा, एक दिन एवं सीमा रेखा एकांकरियों में चित्रित समस्याएँ

12.0 रूपरेखा

121 उद्देश्य

12.2 प्रस्तावना

12.3 एकांकियों में चित्रित समस्याएँ

12.3.1 'भोर का तारा' एकांकी में चित्रित समस्याएँ

12.3.2 'एक दिन' एकांकी में चित्रित समस्याएँ

12.3.3 'सीमा रेखा' एकांकी में चित्रित समस्याएँ

12.4 निष्कर्ष

12.5 कठिन शब्द

12.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

12.7 पठनीय पुस्तकें

12.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन उपरान्त आप 'भोर का तारा', 'एक दिन' तथा 'सीमा रेखा' एकांकियों में व्यस्त समस्याओं से अवगत हो सकेंगे।

12.2 प्रस्तावना

लेखक जिस परिवेश में रहता है। जिस समाज का वह अंग है उसमें व्याप्त समस्याओं से वह प्रभावित होता है और उन समस्याओं को अपने साहित्य में अभिव्यक्ति देकर उनका निराकरण करने का प्रयास करता है। इसलिए लेखक के साहित्य में युगीन समस्याएँ हमेशा स्थान पाती हैं। 'भोर का तारा', 'एक दिन' तथा 'सीमा रेखा' एकांकियां भी अपनी युगीन समस्याओं को स्थान दिए हैं। जिनका विश्लेषण इस पाठ में किया जाएगा।

12.3 एकांकियों में चित्रित समस्याएँ

12.3.1 'भोर का तारा' एकांकी में चित्रित समस्याएँ

'भोर का तारा' एकांकी 'जगदीशचन्द्र माथुर' द्वारा रचित है। लेखक का जन्म 16 जुलाई सन् 1917 को उ.प्र. के खुर्जा के पास एक गाँव में हुआ। इस समय प्रथम विश्वयुद्ध चल रहा था और किशोर अवस्थ तक उन्हें द्वितीय विश्वयुद्ध (1939–45) की विभीषिका को भी सहना पड़ा। दो विश्वयुद्धों का अनुभव उनके मन–मस्तिष्क पर इस प्रकार बसा है कि उनकी रचनाओं में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में यह

अनुभव व्यक्त हो जाता है। युद्ध से उपजा विनाश व्यक्ति के भीतर पूनर्निर्माण की स्थिति को जागृत करता है इसलिए जगदीशचन्द्र माथुर की प्रायः नाट्य कृतियों एवं एकांकियों में यह अन्तः स्वर गूँजता हुआ दिखता है। 'भोर का तारा' एकांकी भी गुप्त वंश के अन्तिम शासक स्कन्दगुप्त के शासन–काल से सम्बन्धित ऐतिहासिक एकांकी है। इस एकांकी में पांचवी शती, सन् 455 के आसपास का समय वर्णित है जब समाज में गुप्त साम्राज्य का शासन था। इसलिए कवि शेखर जो कि निजी प्रेम पर कविता लिखता है वह गुप्त साम्राज्य पर हूजों द्वारा आक्रमण करने पर अपने निजी प्रेम को त्याग कर स्वदेश प्रेम को महत्व देते हुए ओज पूर्ण कविता के माध्यम से जन में चेतना का संचार करता है ताकि जनता कठिन समय में अपने राजा का सहयोग दे। इस एकांकी में लेखक ने तक्षशिला पर हूणों के आक्रमण का उल्लेख किया है जो एक ऐतिहासिक घटना है। क्योंकि हूण, मध्य एशिया में निवास करने वाली एक जाति थी। जनसंख्या की वृद्धि तथा प्रसार की इच्छा से वे अपना मूल स्थान छोड़कर नये प्रदेशों की ओर चल पड़े। बाद में उनकी दो शाखाएँ बनी– पूर्वी और पश्चिमी शाखा। गुप्त साम्राज्य के चरमोत्कर्ष अर्थात् पांचवी शताब्दी (458) में उत्तर–पश्चिमी ओर से हूणों ने भारत पर आक्रमण किया। उस समय गुप्त साम्राज्य (उत्तरी भारत) का शासक स्कंदगुप्त था। स्कंदगुप्त ने हूणों को पराजित कर वापिस जाने पर विवश किया था। सन् 466–67 ई. में तोरमाण के नेतृत्व में हूणों ने भारत पर दूसरी बार आक्रमण किया पर इस बार भी हूणों के हाथ निराशा ही लगी। स्कंदगुप्त ने अपने शासन काल में हूणों को भारत में आधिपत्य स्थापित नहीं करने दिया था। बाहरी शक्ति का आक्रमण जब होता है तो देश का ह्रास होता है किन्तु जब जनता एक जुट होकर अपने राजा का साथ देती है तो बाहरी शक्तियाँ अपना अधिपत्य स्थापित नहीं करा पातीं। अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए हमें एकजुट होना चाहिए। यही बाहरी शक्तियों के आक्रमण की समसया का निराकरण है जिसे जगदीशचन्द्र माथुर ने 'भोर का तारा' एकांकी में स्पष्ट किया है।

इस एकांकी में मूल रूप से दो ही समस्याएँ दृष्टिगोचर होती हैं– व्यक्ति का 'स्व' तक सीमति रहना तथा देश पर बाहरी शक्तियों का आक्रमण।

1) व्यक्ति का 'स्व' तक सीमित रहना

एकांकी के आरम्भ में कवि शेखर 'स्व' तक सीमित व्यक्ति के रूप में सामने आया है। क्योंकि वह सौन्दर्य का पुजारी है और कल्पना जगत में विचरण करते हुए प्रेम–पूर्ण कविता करता है। उसके जीवन की मात्र दो ही साधनाएँ हैं– छाया का प्रेम और कविता। वह अपनी प्रेयसी छाया की प्रेरणा से 'भोर का तारा' काव्य ग्रन्थ की रचना भी करता है। इसी काव्य–ग्रन्थ को वह सम्राट के समक्ष सुनाकर यश प्राप्त की अपेक्षा रखता है। यहां शेखर का स्वार्थ दृष्टिगोचर होता है। क्योंकि एक कवि का दायित्व है कि वह यश प्राप्त के लिए नहीं बल्कि समाज हित के उद्देश्य से रचना करे। किन्तु लेखक ने देश संकट के समय शेखर में देश प्रेम को जागृत कर इस स्वार्थी प्रवृत्ति का निराकरण कर दिया है। दूसरी तरफ इस एकांकी में लेखक ने राजनीतिज्ञों के स्वार्थीपन पर भी दृष्टिपात किया है। नेता लोग जिस प्रकार लोगों को अपनी बातों में उलझाएं रखते हैं, उसी का उल्लेख शेखर ने माधव के समक्ष किया है– 'तुम राजनीतिज्ञ और मन्त्री लोग बड़ी संजीदगी के साथ अमीरी–गरीबी, युद्ध और सन्धि की समस्याओं को हल करने का अभिन्य करते हो परन्तु मनुष्य को इन उलझनों के बाहर कभी नहीं लाते।'' अतः स्पष्ट है कि राजनीतिज्ञ, लोगों से उनकी समस्याओं के निधान की बड़ी–बड़ी बातें तो करते हैं लेकिन मूल रूप से वे समस्याएँ कभी खत्म नहीं करते। सत्ताधारियों की ऐसी प्रवृत्ति एक बात यह भी स्पष्ट करती है कि उनकी कथनी और करनी में बहुत अन्तर है। लेकिन एक राष्ट्र, समाज एवं देश तभी विकास कर सकता है जब उसके सत्ताधारी जनता के हित के लिए जीते हैं।

2) देश पर बाहरी शक्तियों का आक्रमण

गुप्त साम्राज्य के स्वर्ण युग में जब देश, कला और साहित्य की उच्चतम अभिलाषा के स्वप्न देख रहा था, तभी हूणों के सरदार तोरमण ने पंचनद पर आक्रमण कर उसे मिटा दिया। उसके अत्याचारा से देश भयाक्रांत हो चुका था। तक्षशीला को अपने पैरों तले रौंद

कर वह पूर्ण रूप से नष्ट कर रहा था। देश पर जब बाहरी शक्तियों का आक्रमण होता है तो उससे सत्ता के साथ–साथ आम जन भी भीषण त्रासदी को जेलता है इसलिए बाहरी आक्रमण एक बहुत बड़ी समस्या है जो देश के विकास को अवरुद्ध ही नहीं करती बल्कि पूर्ण रूप से नष्ट कर देती है लेकिन लेखक ने इस समस्या से निधान पाने का रास्ता भी इस एकांकी में सुझाया है। वह है– आम जन का एक जुट होकर अपने सम्राट का सहयोग करना ताकि एकता की शक्ति द्वारा बाहरी शक्तियों को विध्वंश किया जा सके। हूणों के आक्रमण से जब हर ओर निराशा के बादल छाने लगे तब माधव कवि शेखर की सहायता माँगता है ताकि वह अपनी ओज पूर्ण कविता द्वारा सोयी तथा निराश जनता की आत्मा को जगा सके। शेखर भी ऐसी कठिन परिस्थितियों में अपने निजी स्वार्थ को त्याग देश–हित हेतु ओज पूर्ण वाणी में रण भरी गाता हुआ उन्मत जनता से मिलता है और भीड़ के मध्य उसका जन स्वर गूंजता हुआ सुनाई देता है–

"नगाड़े पै डंका बजा है, तु शस्त्रों को अपने संभाल

बुलाती है वीरों की तुरही, तू उठ कोई रास्ता निकाल।"

शेखर की यह ओज वाणी जनता में चेतना का संचार करती है और शेखर को भी भोर के तारे से प्रभात का सूर्य बनाने में सक्षम होती है।

12.3.2 'एक दिन' एकांकी में व्यक्त समस्याएँ

'लक्ष्मीनारायण मिश्र' द्वारा रचित 'एक दिन' एकांकी एक सामाजिक एकांकी है। इस एकांकी में लेखक ने वर्तमान समाज में विवाह पूर्व लड़की देखने की विकृत सामाजिक रीति की समस्या को व्यक्त किया है। इस एक समस्या के साथ–साथ वर्तमान समाज की कुछ अन्य समस्याएँ भी उजागर हो गई हैं। जैसे– पीढ़िगत अंतराल, नैतिक मूल्यों का हनन तथा युवा वर्ग की धन लोलुपता।

1) विवाह पूर्व लड़की देखने की रीति

वर्तमान समय में विवाह पूर्व लड़की देखने की जो विकृत रीति है उसे एक समस्या के रूप में हम ले सकते हैं क्योंकि इस देखा–देखी में लड़की की पसंद–न–पसंद नहीं पूछी जाती। इस एकांकी का पात्र राजनाथ इसे लड़कियों के अधिकार का हनन मानता है। इसलिए वह बेटी को दिखाने के लिए बेटे द्वारा अपने मित्र निरंजन को घर पर बुलाना मर्यादा और भारतीय परम्परा के विरुद्ध मानता है। वह बेटे को प्राचीन काल में होने वाले स्वयंवर का स्मरण करवाता है– "लड़कियों का स्वयंवर होता था पर चुनता कौन था? कन्या या वर? एक कन्या के लिए सैकड़ों युवक आते थे। रूप, गुण और पौरुष में जो बड़ा होता , उसे कन्या चुनती। जयमाला जिसके गले में पड़ती वह अपने भाग्य पर फूल उठता।" राजनाथ का स्वयंवर के विषय में बताना लड़कियों के अधिकार को स्पष्ट करता है जिसमें लड़की को पूर्ण अधिकार था वर के चुनाव का, किन्तु आज उससे यह अधिककार छीन लिया गया है। राजनाथ लड़की दिखाने के खिलाफ नहीं, बल्कि उसका कहना है कि लड़की, लड़के को न दिखाकर उसके माता–पिता को दिखाई जाए वो भी सारी बातें तय होने के पश्चात। उनके अनुसार जो लड़का विवाह से पूर्व ही लड़की देखना चाहता है वह असभ्य है क्योंकि वह पसंद करने का अधिकार अपना मानता है, कन्या का नहीं। इसलिए यह सामाजिक रीति आज एक समस्या बनी हुई है।

3) पीढ़ीगत अंतराल

दो पीढ़ियों के भीतर बदलते समय के साथ जीने का तरीका, विचारधारा, विश्वास और व्यवहार में जब बदलाव आने लगता है तो इस स्थिति को पीढ़िगत अंतराल कहते हैं। इस अंतराल में माता–पिता के विचार उनकी आधुनिक संतान अपनाना नहीं चाहती और संतान की आधुनिक सोच माता–पिता के लिए अग्राह्य हो जाती है। इस एकांकी में भी राजनाथ और उसके आधुनिक शिक्षा ग्रहण किए बेटे मोहन तथा उसके मित्र में विचारों का अंतर मिलता है। बेटे के अनुसार लड़के का विवाह पूर्व लड़की देखना, उससे अकेले में बातें

करना पूर्ण रूप से सही है किन्तु राजनाथ इसे मर्यादाओं का उल्लंघन मानता है। राजनाथ के कहे ये शब्द– "...पुत्र कह रहा है, पिता का चित्त ठिकाने नहीं। तुम्हारे विचार मुझसे नहीं मिलते, इसलिए मैं पागल हूँ। तुम्हारे शब्दों में, तुम्हारे इस युग में इस देश की नई पीढ़ी बोल रही है, जिसका विश्वास अब अपनी जड़ों में नहीं है।" पीढ़ितगत अंतराल को स्पष्ट करते हैं। राजनाथ भारतीय परम्परा तथा मर्यादाओं के प्रति लगाव रखता है किन्तु बेटा उन परम्पराओं तथा मर्यादाओं को झूठी घोषित करता है। पिता–पुत्र में आए वैचारिक अंतर से दोनों में टकराव की स्थिति उत्पन्न होती है। राजनाथ भारतीय मर्यादा को संस्कार रूप में अपनाए है तभी तो वह बेटे से कहता है– "इस देश की मर्यादा क्या है, तुमसे न सीखूंगा। उसे सीखने के लिए किसी विलायती प्रोफेसर के पास भी न जाऊंगा। वह तो जिस तरह मेरे पूर्वजों के रक्त के रूप में मेरे इस शरीर में है, उसी तरह संस्कार के रूप में मेरे मन में है।" अतः पुरानी पीढ़ी चाहती है कि उनकी आने वाली पीढ़ी अपनी परम्पराओं, मर्यादाओं एवं मान्यताओं को उसी प्रकार ग्रहण कर उसका विकास करे जिस प्रकार उन्होंने किया, किन्तु आधुनिक पीढ़ी पुरानी परम्पराओं, मर्यादाओं एवं मान्यताओं को अपने विकास में बाधक मानती है। यही कारण है दोनों की विचारधारा में अन्तर बढ़ने का। इस एकांकी में मात्र इस अंतर को ही दिखाया नहीं गया बल्कि भारतीय संस्कारों में अटूट आस्था रखने वाली शीला की पवित्रता, निडरता और साहस के कारण प्राचीन परम्पराओं एवं आदर्शों की आधुनिक नई सभ्यता एवं नये आदर्शों पर विजय भी दिखाई है जो पीढ़िगत अंतराल को समाप्त करने की राह है।

3) नैतिक मूल्यों का हनन

आधुनिक पीढ़ी चाहे स्वयं को विकसित पीढ़ी कहती है किन्तु वास्तविकता में वे नैतिक मूल्यों की दृष्टि से पतन की स्थिति में पहुँच चुकी है। वर्तमान पीढ़ी स्वतन्त्रता में विश्वास रखती है लेकिन उनकी यह स्वतंत्रता उनके भीतर नैतिक मूल्यों को विलुप्त कर देती है। पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण में वे अपने गुण एवं मान्यताओं को भूल चुके हैं। इसी ओर संकेत करते हुए राजनाथ कहता है– "इस युग में हम अपना सब कुछ विदेशी आँखों से देख रहे हैं। स्वतन्त्रता का उत्सव हम मना रहे हैं, अपने को भूलकर अपने गुण और अपनी मान्यताओं को भूलाकर।... स्वतन्त्र भारत की स्वतन्त्र नारी को अब सब कुछ फाड़ फेंकना है। जानकी उसके लिए बड़ी भोली और धर्मभीरु है... उनमें बुद्धि की कमी है, साहस की कमी है, व्यक्तित्व की कमी है।" देखा जाए तो आधुनिक होना गलत नहीं, लेकिन अपनी संस्कृति को नकारकर आधुनिक विचारधाराओं को अपनाना हमारी संस्कृति तथा नैतिक मूल्य दोनों के लिए घातक है क्योंकि नैतिक मूल्य ही हमें जीवन जीने की दिशा देते हैं। जब नैतिक मूल्य ही व्यक्ति के जीवन से लुप्त हो जाएंगए तो वह न किसी का सम्मान कर सकेगा और न ही अपना सम्मान बना पाएगा। मर्यादाएँ हमें संस्कारी या सही दिशा पर चलने का मार्ग दिखाती है। इस एकांकी में मुख्य रूप से लड़की दिखाने की जिस रीति को लिया गया है उससे नैतिक मूल्य का हनन ही हो रहा है। पुराने समय में विवाह से पूर्व लड़के का लड़की को देखना असभ्य समझा जाता था किन्तु आज इस कार्य को आम बात के रूप में लिया जाता है। जिसका स्पष्टीकरण मोहन द्वारा अपने पिता से कहे इन शब्दों से होता है– "सब कहीं यह हो रहा है... बड़े से बड़े घर में... बिना कन्या देखे विवाह अब बड़े घरों में नहीं होता।" आधुनिक पीढ़ी द्वारा यह खुलापन उनके निर्णय को सही दिशा नहीं देता। क्योंकि इस रीति से यहां एक तरफ लड़की की अस्मिता तथा अधिकारों पर संकट बढ़ता है वहीं दूसरी तरफ चयन की इस प्रक्रिया में व्यक्ति के गुण, संस्कार न देख मात्र रूप सौन्दर्य पर बल दिया जाता है जो उनके जीवन को सुखद नहीं बनने देता। इसलिए नैतिक मूल्य का हनन व्यक्ति और समाज दोनों के लिए हितकर नहीं है। इस एकांकी में पिता के संस्कारों एवं मूल्यों का पालन करने वाली बेटी शीला का चित्रण भी लेखक ने किया है और शीला के माध्यम से ही निरंजन और मोहन नैतिक मूल्यों का पुणः अनुसरण कर पाते हैं।

4) युवा वर्ग की धन–लोलुपता

वर्तमान समय का युवा वर्ग अर्थ पर केन्द्रीत हो चुका है इसलिए वह हर वस्तु को अर्थ से तोलता है। 'एक दिन' एकांकी में भी मोहन और निरंजन इसी धन–लोलुप युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। मोहन अपने मित्र निरंजन की धनवानता को देखकर ही अपने घर शीला के रिश्ते के लिए बुलाता है। जबकि उसका पिता राजनाथ इसका विरोध करता हुआ कहता है– ''...धन के सामने तुम्हारे लिए बहिन का मान भी मिट रहा है। ...मर्यादा और आदर्श की बातें चाहे झूठी भी क्यों न हों, व्यक्ति को नीचे नहीं उतरने देतीं।'' किन्तु वर्तमान समय में धन को ही प्रमुख मानकर लड़के के खानदान या उसके आचार–व्यवहार को नहीं देखा जाता। विवाह के लिए मात्र धनी लड़के को महत्व देना पूर्ण नारी जाति का अपमान है क्योंकि धनवान लड़के द्वारा लड़की को देखकर उसे पसंद या नापसंद करना लड़की की इच्छा एवं अधिकारों को समाप्त कर देता है। इसलिए लेखक ने राजनाथ के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि चुनाव धन पर नहीं, गुण के स्तर पर करना चाहिए– ''जिसे देखो, धन से अलग कर देखो। पद प्रतिष्ठा और अधिकार से अलग कर देखो। उस मनुष्य को देखो जो तुम्हारे इस युग में जन्म ले रहा है, जो धन और अधिकार से नहीं, अपने गुणों से आगे बढ़ेगा।'' राजनाथ की बेटी शीला भी धन की अपेक्षा व्यक्ति के गुण पर बल देती है। क्योंकि उसका मानना है कि, ''बाप के धन का बल, शिक्षा का बल, चरित्र और व्यक्ति का बल नहीं बनेगा।'' इस प्रकार लेखक ने मोहन और निरंजन को धन–लोलुप बताया है लेकिन शीला को धन की अपेक्षा गुणों पर बल देने वाली चित्रित कर युवा पीढ़ी के समक्ष एक आदर्श को भी स्थापित किया, जिसका अनुसरण कर भ्रष्ट युवा पीढ़ी सही राह तथा दृष्टिकोण को प्राप्त करेगी जैसे निरंजन की मानसिकता शीला की विचारधारा से परिवर्तित हुई।

अतः कहा जा सकता है कि लेखक ने इस एकांकी में लड़की देखने की रीति में जो विकार आया है उसे चित्रित करने के साथ–साथ उसके समाधान के रूप में भारतीय परंपराओं, मर्यादाओं को अपनाने का पक्ष लिया है क्योंकि देश तथा समाज को बचाए रखने के लिए प्राचीन मान्यताओं और नैतिक मूल्यों को अपनाए रखना आवश्यक है।

12.3.3 'सीमा रेखा' एकांकी में चित्रित समस्या

'सीमा रेखा' एकांकी में विष्णु प्रभाकर ने जनतंत्र में धूमिल होते आदर्शों की समस्या को चित्रित किया है। वर्तमान समय में जनता और सरकार के मध्य दूरी बढ़ती जा रही है इसी समस्या को उद्घाटित कर लेखक ने जनता में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का प्रयास किया है। अंग्रेजी राज में तो लाठी गोली चला करती थी किन्तु आज जनतंत्र में भी चल रही है। हर दूसरे दिन दंगे–फसाद, लूटपाट, तोड़–फोड़, नेताओं के खिलाफ नारे–बाजी तथा रास्ता रोको की घटनाएं घटित होती हैं। ऐसी घटनाओं से सरकार तथा जनता की क्षति होती है जिसे हम अलग–अलग समझते हैं किन्तु जनतंत्र में, जनता के राज में, जनता की प्रतिष्ठा होती है फिर भी ऐसी घटनाएँ घट रही हैं जबकि इन घटनाओं में होनी वाली क्षति किसी एक वर्ग की नहीं बलिक सम्पूर्ण देश की क्षति होती है। जनतंत्र में सरकार–जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती है।

इस एकांकी में लेखक ने सरकार, नेता, पुलिस का जनता के साथ संबंध तथा व्यवहार को वर्णित करने के साथ उनसे उत्पन्न समस्या का चित्रण भी किया है। जनता द्वारा चुने गए नेताओं ने अपने और जनता के मध्य एक रेखा खींच ली है। यही करना है कि उपमंत्री शरतचंद्र दंगा होने पर जनता के बीच जाने से कतराते हैं। जबकि जनता ने उन्हें अपने हित के लिए ही चुना है। सविता इस पर व्यंग्य करती हुई शरत् से कहती है, ''जनता के नेता अब पुलिस की गाड़ी में ही जा सकते हैं। जिन्होंने जनता का नेतृत्व किया, जनता के आगे होकर गोलियां खाईं, जो एक दिन जनता की आँखों के तारे थे, वे ही आज पुलिस के पहरे में जनता से मिलने जाते हैं।'' सविता का यह व्यंग्य वर्तमान समय में नेताओं की इस स्थिति को पूर्ण रूप से स्पष्ट करता है कि आज नेता जनता से इतनी दूरी बना बैठे हैं कि दंगा आदि होने पर जनता के समक्ष जाने से कतराते हैं। लेखक ने अंत में शरत् के मुख से यह कहलवाकर कि, ''जनतंत्र में सरकार और

जनता के बीच कोई विभाजन रेखा नहीं होती....'' जनतंत्र के वास्तविक स्वरूप को स्पष्ट कर दिया है क्योंकि क्षति चाहे जनता की हो या सरकार की वह सम्पूर्ण देश की क्षति होती है।

लेखक ने दंगों के दौरान होने वाली हिंसा की समस्या को भी उकेरा है। दंगे होते हैं तो पुलिस को वेकाबु भीड़ को नियंत्रित करने हेतु गोली चलानी पड़ती है। आत्म रक्षा तथा भीड़–नियंत्रण के लिए चलाई गई इस गोलाबारी में कुछ निर्दोष भी मारे जाते हैं, यह एक गम्भीर समस्या है। साथ ही पुलिस को हिंसा का रास्ता नहीं अपनाना चाहिए क्योंकि उनके द्वारा चलाई गई गोली यह नहीं देखेगी की वह दोषी पर चल रही है या निर्दोष पर। 'सीमा रेखा' एकांकी में भी विजय द्वारा अनियंत्रित भीड़ पर गोली चलाई गई और वह इसे सही भी कहता है लेकिन जब उसे ज्ञात होता है कि उसके द्वारा चलाई गई गोली में उसका मासूम दस वर्षीय भतीजा भी मारा गया है तो वह प्रायश्चित करने के उद्देश्य से अनियंत्रित भीड़ के सम्मुख चला जाता है ताकि वह भीड़ को समझा कर शांत कर सके। किन्तु अनियंत्रित भीड़ भी हिंसा को अपनाती हुई विजय को कुचल देती है इतना ही नहीं भीड़ की हिंसा जन नेता सुभाष को भी कुचलने से पीछे नहीं हटती। इस प्रकार लेखक इसी ओर संकेत करता है कि हिंसा का सहारा लेना समाज के लिए घात परिणाम लेकर आता है। क्योंकि इस हिंसा में जहां मासूम बच्चा बलि चढ़ा वहीं जन के लिए संघर्ष करने वाला जननेता सुभाष भी मृत्यु को प्राप्त हुआ और जनता के रक्षक पुलिस व्यवस्था के कर्मचारी विजय को भी मौत ही मिलती है। किन्तु इनके प्राण से जनता और शासक दोनों संतुलित हो जाते हैं। हिंसा का ऐसा परिणाम देख अनियंत्रित भीड़ भी शांत हो जाती है और सरकार भी। शरत् उनकी मौत को बलिदान की संज्ञा देता है– ''उन्होंने प्राण दे दिए पर शासन ओर जनता का संतुलन ठीक कर दिया। वे शहीद हो गए, पर दूसरों को बचा गए। नगर में अब बिल्कुल शांति है।'' विजय–सुभाषा की मृत्यु ने जनता और सरकार के मध्य की दूरी को समाप्त कर दिया। इस घटना से जनता तथा सरकार यह समझ गई कि जनतंत्र में जनता–सरकार अलग नहीं होती और उनके द्वारा हुइ क्षति भी किसी एक की नहीं बल्कि सम्पूर्ण देश की क्षति है। इस प्रकार लेखक ने जनतंत्र में जनता–सरकार के मध्य धूमिल होते आदर्शों की समस्या को चित्रित करने के साथ अन्त में जनता–सरकार के मध्य दूरी को समाप्त कर यह सत्य प्रतिष्ठित किया है कि, ''...जनता के राज में, जनतंत्र में, जनता की प्रतिष्ठा होती है।....जन–राज में शासक कोई नहीं होता, सब सेवक होते हैं।...जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।''

12.4 निष्कर्ष

अतः कह सकते हैं कि लेखक समाज की जिन समस्याओं से प्रभावित होता है, उनको अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के समक्ष प्रकट कर उनके निराकरण का प्रयास करता है। इस अध्याय में निर्धारित तीनों एकांकियों में भी लेखक का यही प्रयास हमें दृष्टिगोचर हुआ है। क्योंकि लेखकों ने मात्र समस्या को ही चित्रित नहीं किया बल्कि उनके समाधान भी सुझाए हैं।

12.5 कठिन शब्द

1. चरमोत्कर्ष
2. आधिपत्य
3. निराकरण
4. राजनीतिज्ञ
5. सत्ताधारी
6. विध्वंश
7. तुरही
8. अंतराल

9. धूमिल

10. क्षति

12.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

(i) 'भोर का तारा' एकांकी में चित्रित समस्या पर प्रकाश डालें।

उ) ————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

(ii) 'एक दिन' एकांकी में व्यक्ति किस सामाजिक समस्या को उठाया गया है?

उ) ————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

(iii) 'सीमा रेखा' एकांकी समाज की किस समस्या को उद्घाटित करती है?

उ) ————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

————————————————————————————

12.7 पठनीय पुस्तकें

(i) नये एकांकी– सं. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय'

डॉ. पूजा शर्मा

व्याख्याता, हिन्दी विभाग, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,

जम्मू विश्वविद्यालय।

शब्द शक्तियां एवं लोकोक्तियां

13.0 रूपरेखा

131 उद्देश्य

13.2 प्रस्तावना

13.3 शब्द शक्तियां– सामान्य परिचय

13.4 लोकोक्तियां

13.5 निष्कर्ष

13.6 कठिन शब्द

13.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

13.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन उपरान्त विद्यार्थी शब्द शक्तियों तथा लोकोक्तियों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

13.2 प्रस्तावना

कोई भी शब्द किस स्थान पर प्रयुक्त होता है तथा जिनसे शब्द का अर्थ सहजता से समझ में आ जाता है तो ऐसे शब्दों को शब्द शक्ति कहा जाता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो जिन शब्दों में अर्थ बोध करवाने की शक्ति होती है उन शब्दों को 'शब्द शक्ति' कहा जाता है। मुहावरों की तरह लोकोक्तियों का प्रयोग भी भाषा को सुन्दर, सरस और अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए किया जाता है। साधारण बोचलाल की भाषा में लोकोक्ति को कहावत भी कहते हैं। ये पूरे वाक्य या वाक्यांश के समान होती है और साधारण अर्थ से अलग अर्थ भी देती है।

13.3 शब्द शक्तियां– सामान्य परिचय

शब्द शक्ति का अर्थ और परिभाषा– "शब्दार्थ सम्बन्धःशक्तिः" अर्थात् शब्द और अर्थ के सम्बन्ध को शब्द शक्ति कहते हैं। शब्द शक्तियों के द्वारा शब्द के अर्थ का बोध होता है। अत शब्द शक्ति को निम्न प्रकार परिभाषित कर सकते हैं–

"शब्दों के अर्थों का बोध कराने वाले व्यापार शब्द शक्ति कहलाते हैं।"

शब्द शक्ति के भेद–शब्द शक्तियां तीन प्रकार की होती है–

1. अभिधा 2. लक्षणा 3. व्यंजना।

इन तीनों से सम्बन्धित तीन प्रकार के शब्द होते है– 1. वाचक, 2. लक्षक और 3. व्यंजक तथा इन तीनों से सम्बन्धित क्रमश तीन ही प्रकार के अर्थ होते हैं–1. वाच्यार्थ, 2. लक्ष्यार्थ, और 3, व्यंग्यार्थ। इन तीनों के सम्बन्ध को अग्र रूप में व्यक्त किया जा सकता है–

शब्द	**अर्थ**	**शब्द शक्ति**
1. वाचक	वाच्यार्थ	अभिधा
2. लक्षक	लक्ष्यार्थ	लक्षणा
3. व्यंजक	व्यंग्यार्थ	व्यंजना

वाच्यार्थ को मुख्यार्थ या अमिधेयार्थ भी कहते हैं।

शब्द शक्तियों की परिभाषा :–

1. **अभिधा शब्द शक्ति–** शब्द को सुनकर या पढ़कर श्रोता या पाठक को उसका जो लोक प्रसिद्ध प्रचलित अर्थ तत्क्षण ज्ञात होता है उसे **अभिधेयार्थ या वाच्यार्थ** कहते हैं। इस अभिधेयार्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति **'अभिधा'** कही जाती है। **अभिधा** के द्वारा ज्ञात अर्थ **कोशगत अर्थ** होता है। जैसे–हमें फल खाने चाहिए। यहां फल का सामान्य अर्थ ग्रहण किया गया है अतः अभिधा शब्द शक्ति है।

2. **लक्षणा शब्द शक्ति–** मुख्यार्थ में बाधा उपस्थित होने पर मुख्यार्थ से ही सम्बन्धित जो अन्य अर्थ रूढ़ि अथवा प्रयोजन के आधार पर ग्रहण किया जाता है उसे **लक्ष्यार्थ** कहते हैं। लक्ष्यार्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति **लक्षणा शक्ति** कहलाती है। यथा–मोहन गधा है।

   इस वाक्य में **'गधा'** शब्द का लक्ष्यार्थ है **'मूर्ख'** यह अर्थ इसलिए ग्रहण किया गया है, क्योंकि 'गधे' का मुख्यार्थ (एक जानवर) यहां बाधित हो रहा है। यह अर्थ एक विशेष प्रयोजन के आधार पर ग्रहण किया गया है, अतः यहां लक्षणा शब्द शक्ति है।

3. **व्यंजना शब्द शक्ति–** अभिधा और लक्षणा के विराम ले लेने पर जो एक विशेष अर्थ ध्वनित होता है, उसे **'व्यंग्यार्थ'** कहते हैं। व्यंग्यार्थ का बोध कराने वाली शब्द शक्ति को व्यंजना कहते हैं। जैसे–उसका घर गंगा में है।

यहां घर गंगा में नहीं हो सकता, अतः अर्थ ग्रहण किया गया कि घर गंगा के निकट (तटवर्ती) है तथा इससे यह भी ध्वनित हो रहा है कि घर में गंगा जैसी पवित्रता, निर्मलता एवं शुद्धता है। यह ध्वनित होने वाला अर्थ ही व्यंग्यार्थ है तथा व्यंग्यार्थ ग्रहण करने से यहां व्यंजना शब्द शक्ति है।

शब्द शक्ति का महत्व है

(1) शब्द शक्ति से ही अर्थ का बोध होता है।

(2) बिना अर्थ का उचित बोघ किए काव्यार्थ की प्रतीति नहीं हो सकती है।

(3) लक्षणा एवं व्यंजना से युक्त उच्चकोटि का माना जाता है।

(4) जब सामान्य भाषा में कोई व्यक्ति अपनी बात नहीं कर पाता तो लक्षणा एवं व्यंजना का सहारा लेता है।

(5) लक्षणा से भाषा की अभिव्यक्ति क्षमता में वृद्धि होती है। भाषा के लक्षक एवं व्यंजक बल की सीमा अपरिमित है।

(6) व्यंजना का व्यापार बहुत विस्तृत एवं व्यापक है। व्यंजना शक्ति के बल पर हम किसी भी शब्द से कोई भी काम ले सकते हैं।

लक्षणा शब्द शक्ति के भेद :–

(अ) लक्ष्यार्थ के आधार पर– इस आधार को लेकर लक्षणा के दो भेद हैं– (1) रूढ़ा लक्षणा (2) प्रयोजनवती लक्षणा।

(1) **रूढ़ा लक्षणा–** जहां मुख्यार्थ में बाधा होने पर रूढ़ि के आधार पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया जाता है, वहां रूड़ा लक्षणा होती है। जैसे–**पंजाब वीर है**– इस वाक्य में पंजाब का लक्ष्यार्थ है–**पंजाब के निवासी**। यह अर्थ रूढ़ि के आधार पर ग्रहण किया गया है अतः रूढ़ा लक्षणा है।

(2) **प्रयोजनवती लक्षणा–** मुख्यार्थ में बाधा होने पर किसी विशेष प्रयोजन के लिए जब लक्ष्यार्थ का बोध किया जाता है, वहां प्रयोजनवती लक्षणा होती है। जैसे– **मोहन गधा है**– इस वाक्य में **'गधा'** का लक्ष्यार्थ **'मूर्ख'** लिया गया है और यह मोहन की मूर्खता को व्यक्त करने के प्रयोजन से लिया गया है अतः यहां प्रयोजनवती लक्षणा है।

(ब) **मुख्यार्थ एवं लक्ष्यार्थ के सम्बन्ध के आधार पर–** इस आधार पर लक्षणा के दो भेद हैं–

(1) गौणी लक्षणा, (2) शुद्धा लक्षणा।

(1) **गौणी लक्षणा–** जहां गुण सादृश्य के आधार पर लक्ष्यार्थ का बोध होता है। वहां गौणी लक्षणा होती है। जैसे–**मोहन शेर है**। इस वाक्य में मोहन को वीर दिखाने के लिए उसको शेर कहा गया है, अर्थात मोहन में और शेर में सादृश्य है, अतः यहां गौणी लक्षणा है।

(2) **शुद्ध लक्षणा–** जहां गुण सादृश्य को छोड़कर अन्य किसी आधार यथा– समीपता, साहचर्य, आधार–आधेय सम्बन्ध, के आधार पर लक्ष्यार्थ ग्रहण किया गया हो, वहां शुद्ध लक्षणा होती है। यथा–**लाल पगड़ी आ रही है**। यहां **लाल पगडी** का अर्थ है **सिपाही**। इन दोनों में साहचर्य सम्बन्ध है अतः शुद्ध लक्षणा है।

(स) **मुख्यार्थ है या नहीं के आधार पर लक्षणा के भेद–** लक्ष्यार्थ के कारण मुख्यार्थ पूरी तरह समाप्त हो गया है या बना हुआ, इस आधार पर लक्षणा के दो भेद किए गए हैं–(1) उपादान लक्षणा, (2) लक्षण लक्षणा।

(1) **उपादान लक्षणा–** जहां मुख्यार्थ बना रहता है तथा लक्ष्यार्थ का बोध मुख्यार्थ के साथ ही होता है वहां उपादान लक्षणा होती है। जैसे–लाल **पगड़ी आ रही है और** (लाल पगड़ी पहने हुए) **सिपाही भी आ रहा है**। यहां मुख्यार्थ (लाल पगड़ी) के साथ–साथ लक्ष्यार्थ (सिपाही) का बोध हो रहा है अतः उपादान लक्षणा है।

(2) **लक्षण लक्षणा–** इसमे मुख्यार्थ पूरी तरह समाप्त हो जाता है, तभी लक्ष्यार्थ का बोध होता है। जैसे–मोहन गधा है लक्षण लक्षणा का उदाहरण है।

(द) **सारोपा एवं साध्यवसाना लक्षणा–** (1) सारोपा लक्षणा–जहां उपमेय और उपमान में अभेद आरोप करते हुए लक्ष्यार्थ की प्रतीति हो वहां सारोपा लक्षणा होती है। इनमें उपमेय भी होता है और उपगान भी। जैसे–

उदित उदयगिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग।

यहां उदयगिरि रूपी मंच पर राम रूपी प्रभातकालीन सूर्य का उदय दिखाकर उपमेय पर उपमान का अभेद आरोप किया गया है अतः सारोपा लक्षणा है।

(1) **साध्यवसाना लक्षणा–** इसमें केवल उपमान का कथन होता है, लक्ष्यार्थ की प्रतीति हेतु उपमेय पूरी तरह छिप जाता है। जैसे–**जब शेर आया तो युद्ध क्षेत्र में गीदड़ भाग गए**। यहां शेर का तात्पर्य वीर पुरुष से और गीदड का तात्पर्य कायरों से है। उपमेय को पूरी तरह छिपा देने के कारण यहां साध्यवसाना लक्षणा है।

<u>व्यंजना शब्द शक्ति के भेद</u>

1. **शाब्दी व्यंजना–** जहां शब्द विशेष के कारण व्यंग्यार्थ का बोध होता है और वह शब्द हटा देने पर व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाता है वहां शाब्दी व्यंजना होती है।

जैसे– **"चिरजीवौ जोरी जुरै क्यों न सनेह गम्भीर।**

को घटि ए वृषभानुजा वे हलधर के वीर।।

यहां वृषभानुजा, हलधर के वीर शब्दों के कारण व्यंजना सौन्दर्य है। इनके दो–दो अर्थ है–1. राधा, 2. गाय तथा 1. श्रीकृष्ण, 2. बैल। यदि वृषभानुजा, हलघर के वीर शब्द हटा दिए जाए और इनके स्थान पर इनके अन्य पर्यायवाची शब्द रख दिए जाएं, तो व्यंजना समाप्त हो जाएगी।

शाब्दी व्यंजना को पुनः दो वर्णों मे बांटा गया है– अभिधामूला शाब्दी व्यंजना, लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना।

(1) **अभिधामूला शाब्दी व्यंजना–** जहां पर एक ही शब्द के नाना अर्थ होते है, वहां किस अर्थ विशेष को ग्रहण किया जाए, इसका निर्णय अभिधामूला शाब्दी व्यंजना करती है। यह ध्यान देने योग्य बात है कि अमिधामूला शाब्दी व्यंजना में शब्द का पर्याय रख देने से व्यंजना का लोप हो जाता है तथा व्यंग्यार्थ का बोध मुख्यार्थ के गाध्यम से होता है जैसे–

सोहत नाग न मद बिना, तान बिना नहीं राग। यहां पर नाग और राग दोनों शब्द अनेकार्थी हैं, परन्तु 'वियोग' कारण से इनका अर्थ नियन्त्रित कर दिया गया है। इसलिए यहा पर **'नाग'** का अर्थ **हाथी** और **'राग'** का अर्थ **रागिनी** है। अब यदि यहां **'नाग'** का पर्यायवाची **'भुजंग'** रख दिया जाए तो व्यंग्यार्थ समाप्त हो जाएगा।

(2) **लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना–** जहां किसी शब्द के लाक्षणिक अर्थ से उसके व्यंग्यार्थ पर पहुंचा जाए और शब्द का पर्याय रख देने से व्यंजना का लोप हो जाए, वहां लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना होती है। यथा– **"आप तो निरे वैशाखनन्दन हैं।"** यहां वैशाखनन्दन व्यंग्यार्थ पर लक्ष्यार्थ के द्वारा पहुंचना होता है। लक्ष्यार्थ है–मूर्खता। अब यदि यहां वैशाखनन्दन शब्द बदल दिया जाए तो व्यंजना का लोप हो जायेगा और लक्षणामूला शाब्दी व्यंजना नहीं रहेगी।

2. **आर्थी व्यंजना–**

जब व्यंजना किसी शब्द विशेष पर आधारित न होकर अर्थ पर आधारित होती है, तब वहां आर्थी व्यंजना मानी जाती है। यथा–

अबला जीवन हाय तुम्हारी यह कहानी।

आंचल में है दूध और आंखों में पानी।।

यहां नीचे वाली पंक्ति से नारी के दो गुणों की व्यंजना होती है– उसका ममत्व भाव एवं कष्ट सहने की क्षमता। यह व्यंग्यार्थ किसी शब्द के कारण न होकर अर्थ के कारण है अतः आर्थी व्यंजना है।

यह व्यंजना तीन प्रकार की हो सकती है–अभिधामूला, लक्षणामूला एवं व्यंजनामूला आर्थी व्यंजना। एक अन्य आधार पर व्यंजना के तीन भेद किए गए हैं–1. वस्तु व्यंजना, 2. अलंकार व्यंजना, 3. रस व्यंजना।

1. **वस्तु व्यंजना–** जहां व्यंग्यार्थ द्वारा किसी तथ्य की व्यंजना हो वहां वस्तु व्यंजना होती है। जैसे–

उषा सुनहले तीर बरसती जय लक्ष्मी सी उदित हुई।

उधर पराजित काल रात्रि भी जल में अन्तर्निहित हुई।।

यहां रात्रि बीत जाने और हृदय में आशा के उदय आदि की सूचना व्यंजित की गई है अतः वस्तु व्यंजना है।

2. **अलंकार व्यंजना–** जहां व्यंग्यार्थ किसी अलंकार का बोध कराये वहां अलंकारः व्यंजना होती है। जैसे–

उठे स्वस्थ मनु ज्यों उठता है क्षितिज बीच अरुणोदय कान्त।

लगे देखने लुब्ध नयन से प्रकृति विभूति मनोहर शान्त।।

यहां उत्प्रेक्षा अलंकार के कारण व्यंजना सौन्दर्य है अतः इसे अलंकार व्यंजना कहेंगे।

3. **रस व्यंजना–** जहां व्यंग्यार्थ से रस व्यंजित हो रहा हो, वहां रस–व्यंजना होती है। यथा

जब जब पनघट जाऊं सखी री वा जमुना के तीर।

भरि–भरि जमुना उमड़ि चलति हैं इन नैननि के नीर।।

यहां 'स्मरण' संचारी भाव की व्यंजना होने से वियोग रस व्यंजित है, अतः रस व्यंजना है।

13.4 लोकोक्तियां

किसी विशेष स्थान पर प्रसिद्ध हो जाने वाले कथन को 'लोकोक्ति' कहते हैं अर्थात् जब कोई पूरा कथन किसी प्रसंग विशेष में उद्धत किया जाता है तो लोकोक्ति कहलाता है। इसी को कहावत भी कहते हैं। 'लोकोक्ति' के शब्दार्थ पर विचार करें तो 'लोकोक्ति' शब्द लोक + उक्ति शब्दों से मिलकर बना है जिसका अर्थ है– लोक में प्रचलित उक्ति या कथन। प्रायः लोग मुहावरे और लोकोक्ति में कोई अंतर नहीं समझते जबकि दोनों में स्पष्ट अंतर है। जिसे निम्न बातों से समझा जा सकता है–

क) लोकोक्ति लोक में प्रचलित उक्ति होती है जो भूतकाल का लोक–अनुभव लिए हुए होती है, जबकि मुहावरा अपने रूढ़ अर्थ के लिए प्रसिद्ध होता है।

ख) लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है, जबकि मुहावरा वाक्य का एक अंश होता है।

ग) पूर्ण वाक्य होने के कारण लोकोक्ति का प्रयोग स्वतंत्र एवं अपने आप में पूर्ण इकाई के रूप में होता है, जबकि मुहावरा किसी वाक्य का अंश बनकर आता है।

घ) पूर्ण इकाई होने के कारण लोकोक्ति में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं होता, जबकि मुहावरे में वाक्य के अनुसार परिवर्तन होता है।

ङ) लोकोक्ति और मुहावरे में उपयोगिता की दृष्टि से भी पर्याप्त अंतर है। लोकोक्ति किसी बात के समर्थन, विरोध अथवा खंडन के लिए प्रयोग में लाई जाती है, जबकि मुहावरे वाक्य में चमत्कार उत्पन्न कर उसे प्रभावशाली बनाते हैं।

हिंदी में प्रयुक्त कुछ महत्वपूर्ण लोकोक्तियाँ, उनके अर्थ और वाक्य में उनका प्रयोग निम्नलिखित है–

1. **अधजल गगरी छलकत जाय** (निकम्मे लोग बड़ी–बड़ी डींगे डांकते हैं)– ऋषिकपूर है तो मिडिल फेल, बोलता अंग्रेजी है। सच है अधजल गगरी छलकत जाय।
2. **ऊँट के मुँह में जीरा** (किसी की बहुत बड़ी जरूरत हो, लेकिन उसे बहुत थोड़ी चीज़ मिलें)– चौबेजी, जो पचास लड्डू खा सकते हैं, उन्हें केवल एक लड्डू खिलाना, ऊँट के मुँह में जीरे के बराबर है।
3. **ऊँची दुकान फीका पकवान** (नाम बड़ा होने पर भी चीज अच्छी न होना)–मौर्या होटल का नाम तो बहुत है लेकिन उसमें खाना खाया तो बेस्वाद लगा। यह तो यूँ ही हुआ, ऊँची दुकान, फीका पकवान।

4. **लातों के भूत बातों से नहीं मानते** (दुष्ट लोगों पर उपदेश का कोई असर नहीं होता)– माँ–बाप के बहुत समझाने पर भी मोहन चोरी की आदत नहीं छोड़ता। लातों के भूत बातों से नहीं मानते मोहन को बहुत पीटना पड़ेगा तभी वह चोरी करना छोड़ेगा।
5. **अंधी पीसे कुत्ता खाय** (कमाए कोई खाये कोई)– कोयले की खान से मजदूर कोयला निकालते हैं और सारे लाभ का हकदार मालिक होता है इसी को कहते हैं अंधी पीसे कुत्ता खाय।
6. **नाच न जाने आंगन टेढ़ा** (अनाड़ी अपनी कमी के लिए दूसरों को दोषी ठहराता है)– जब श्यामबिहारी नहीं गा सका तो उसने हारमोनियम खराब होने का बहाना बना दिया। गाना सुनने वालों ने श्यामबिहारी से कहा, नाच न जाने आंगन टेढ़ा।
7. **एक और एक ग्यारह** (एकता में ही शक्ति है)– हमें अपने देश की उन्नति के लिये सब को मिलकर काम करना चाहिए; एक और एक ग्यारह होते हैं।
8. **घर का भेदी लंका डावै** (घर की फूट हानि करती है)– सेठजी ने मुनीम को नौकरी से निकाल दिया तो उसने सेठजी के पास काला–धन होने की शिकायत आयकर विभाग में कर दी। ठीक है, घर का भेदी लंका ढहाता है।
9. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** (ताकतवर की ही जीत होती है)– बेटे ने अपने पिता के मकान पर गुंडों की मद्द से कब्जा कर लिया। इससे सिद्ध है कि जिसकी लाठी उसकी भैंस।
10. **अन्त भला सो सब भला (**यदि अंत में सफलता मिल जाये तो आदमी अपने कष्ट भूल जाता है)– पाँच साल तक हजारों रुपये खर्च करने के बाद जब रामचन्द मुकदमा जीत गया तो सभी ने कहा अन्त भला तो सब भला।
11. **दोनों हाथों में लड्डू (**चारों ओर से लाभ ही लाभ होना)– सन्तराम के तो दोनों हाथों में लड्डू हैं। यदि वह टाटा कंपनी में काम करता है तो विदेश जाने का मौका है और यदि वह श्रीराम फरटीलाजर्स कं॰ में ही काम करता रहता है तो पदोन्नति हो जायेगी।
12. **ओस के चाटने से प्यास नहीं बुझती** (कंजूसी से काम नहीं चलता)– यदि अपना अगला जन्म सुधारना है तो सौ–पचास रुपये का दान करने से काम नहीं चलेगा, गरीबों की सहायता करनी चाहिए; ओस के चाटने से प्यास नहीं बुझती।
13. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** (बहुत मेहनत का थोड़ा फल)–खेत में पाँच महीने मेहनत करने के बाद, केवल दो हजारा रुपये का गेहूँ पैदा हुआ, वही बात है खोदा पहाड़ निकली चुहिया।
14. **खरबूजे को देखकर खबूजा रंग बदलता है** (दूसरों की बुरी आदतों की नकल)– मोहन का दोस्त जेब काटता था, उसे देखकर मोहन भी जेब काटने लगा, सच ही है, खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।
15. **तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर** (जितनी आमदनी हो उतने से अधिक व्यय नही करना चाहिएं)– फिलिप्स के पिता ने उससे कहा, ''तुम क्लर्क हो और कार खरीद रहे हो यह ठीक नहीं, तेते पाँव पसारिये जेती लाँबी सौर।
16. **सहज पके सो मीठा होय** (धीरे–धीरे काम करना अंततः लाभदायक होता है)– भाई तुम्हारी फैक्टरी में तीन वर्ष में काफी उत्पादन होने लगा है, अगर तुम इसे तेजी से बहुत बढ़ाओगे तो उसका प्रबंध नहीं कर पाओगे, सहज पके सो मीठा होय।
17. **न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी** (किसी कार्य के आधार को ही नष्ट कर देना)– जिस गुड़िया के लिये बहन भाई में लड़ाई होती थी, माँ ने उसे छिपाकर रख दिया, न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी।
18. **अंधों में काना राजा** (बिना पढ़े लिखे लोगों में एक थोड़ा पढ़ा व्यक्ति)–गाँव के लोग रघुबरदयाल को बहुत योग्य समझते हैं, क्योंकि वह गांव वालों की चिटि्ठयाँ लिख–पढ़ देता है। रघुबर दयाल अंधों में काना राजा कहलाता है।
19. **मुँह में राम बगल में छुरी** (मन में छल कपट रखकर मीठी बातें करना)– वैसे तो सठे जी दिन में दो बार मंदिर जाते हैं लेकिन चीज़ों में खूब मिलावट करते हैं, मुँह में राम बगल में छुरी।
20. **थोथा चना, बाजे घना** (जिस व्यक्ति में कम ज्ञान होता है वह दिखावा अधिक करता है)– एक साल विदेश में पढ़ने पर, कुलदीप हर विषय में अपने को विशेषज्ञ समझता है। सच ही है थोथा चना बाजे घना।
21. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** (अकेला आदमी बड़े काम नहीं कर सकता)– अकेले हिम्मतसिंह ने गुंडों का विरोध किया, परंतु उसका किसी ने साथ नहीं दिया। परिणामस्वरूप गुंडों का कुछ नहीं बिगड़ा। सच ही तो कहा है–अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।
22. **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गईं खेत** (अक्सर चूकने के बाद पछताने का कोई लाभ नहीं)– जब बीमारी शुरू हुई थी, तब तो तुम जागे नहीं। अब जब रोगी मौत के करीब आ पहुँचा है तो डॉक्टर को बुलाने चले हो। रहने दो–अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गईं खेत।

23. **आम के आम गुठली के दाम** (दोहरा लाभ)– अंग्रेजी का हिंदुस्तान टाइम्स बहुत सस्ता अखबार है। पढ़ने में बढ़िया और रद्दी की कीमत भी सबसे ज्यादा। आम के आम गुठली के दाम।
24. **एक अनार सौ बीमार** (एक वस्तु के ग्राहक अनेक)– जब से स्कूल में अध्यापक–पद के लिए नौकरी का विज्ञापन दिया है, सैकड़ों फोन आ चुके हैं। एक अनार सौ बीमार।
25. **एक तो करेला कड़ुआ, दूसरे नीम चढ़ा** (स्वाभाविक दोषों का किसी अन्य कारण से और अधिक बढ़ जाना)– एक तो यह पहले ही जुआरी था, ऊपर से शराब की लत लग गई। इसे कहते है– एक तो करेला कड़ुआ, दूसरे नीम चढ़ा।
26. **कंगाली में आटा गीला** (दुखी पर और अधिक दुख आना)– इधर मेरा धंधा चौपट हुआ, उधर पत्नी की नौकरी छूट गई। इसे कहते हैं–कंगाली में आटा गीला।
27. **कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली** (दो असमान व्यक्तियों की तुलना)– तुम अमेरिका के राष्ट्रपति बुश और अपने गाँव के सरपंच की तुलना कर रहे हो। इनका क्या मुकाबला। कहाँ राजा भोज, कहाँ गंगू तेली।
28. **कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा** (असंगत वस्तुओं का मेल बैठाना)– संयुक्त मोर्चा सरकार भी क्या सरकार है! न किसी घटक का मन मिलता है, न विचार। यह तो ऐसा हो गया– कहीं की ईंट, कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा।
29. **का बरखा जब कृषि सुखाने** (काम बिगड़ने पर सहायता व्यर्थ होती है)– अरे, जब कीड़े फसल खा चुके, तब दवाई छिड़कने का क्या लाभ। का बरखा जब कृषि सुखाने।
30. **खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे** (अपनी शर्म छिपाने के लिए व्यर्थ का क्रोध करना, अपनी खीझ निकालना)– शर्मा जी अपने बॉस से तो कुछ कह नहीं पाए। अब घर आकर पत्नी पर गुस्सा निकाल रहे हैं। खिसियानी, बिल्ली खंभा नोचे।
31. **चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए** (बहुत कंजूस होना)– भला यह सेठ मंदिर के निर्माण के लिए क्या दान देगा? इसका तो यह हाल है– चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।
32. **जल में रकर मगर से बैर** (समाज में रहकर शक्तिशाली लोगों से बैर करना हानिकारक होता है)– विदेशी कपंनियाँ भारत में रहकर कभी केंद्रीय सरकार से झगड़ा मोल नहीं लेतीं। जल में रहकर मगर से बैर नहीं करतीं।
33. **धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का** (अस्थिरता के कारण कहीं का न बन पाना)– माँ से बात करता हूँ तो पत्नी ताने देती है। पत्नी के साथ सुखी रहता हूँ तो माँ जल–भुन जाती है। अपना तो वह हालत है– धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।
34. **पर उपदेश कुशल बहुतेरे** (दूसरों को उपदेश देने वाले किंतु स्वयं उस पर आचरण न करने वाले बहुत होते हैं)– नेताजी, पहले अपने भ्रष्टाचार पर रोक लगाओ, फिर भ्रष्टाचार पर भाषण दो। पर उपदेश कुशल बहुतेरे।
35. **मन चंगा तो कठौती में गंगा** (मन शुद्ध है तो सब ठीक है) – संत रविदास न मंदिर जाते थे, न तीर्थ। उनका दृढ़ विश्वास था कि मन चंगा तो कठौती में गंगा।
36. **हाथ कंगन को आरसी क्या** (प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं) – इस दवाई का असर देखना है तो इसका प्रयोग करके देख लीजिए। हाथ कंगन को आरसी क्या।
37. **हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और** (कहना कुछ और करना कुछ)– वह व्यक्ति बातों से जितना सीधा, सरल और आदर्शवादी लगता है, उतना वास्तव में नहीं है। बस यही समझो– हाथी के दाँत खाने के और, दिखाने के और।
38. **होनहार बिरवान के चिकने–चिकने पात** (होनहार व्यक्तियों की प्रतिभा बचपन में ही दिखाई दे जाती है)– जयशंकर प्रसाद ने पहली कविता केवल आठ वर्ष की आयु में लिख डाली थी। सच है– होनहार बिरवान के चिकने–चिकने पात।

3.5 निष्कर्ष

इस पाठ का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थियों को शब्द शक्ति से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है जो उन्हें हिन्दी व्याकरण को समझने में सहायक रहेगी, साथ ही लोकोक्तियां और मुहावरों के अन्तर को जानते हुए लोकोक्ति के महत्व को भी समझा गया है।

13.6 कठिन शब्द

1. अर्थबोध
2. वाक्यांश

3. मुख्यार्थ

4. ध्वनित

5. अपरिमित

6. गौण

7. रूढ़

8. लोकानुभव

13.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) शब्द शक्तियों का सामान्य परिचय दीजिए।

____

____

____

____

प्र2) अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना शब्द शक्ति का परिचय दीजिए।

____

____

____

____

प्र3) 'अधजल गगरी छलकत जाए' लोकोक्ति का अर्थ बताते हुए वाक्य में इसका प्रयोग कीजिए।

____

____

____

____

प्र4) निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखकर वाक्य में उनका प्रयोग कीजिए।

1) नाच न जाने आंगन टेढा।

2) आम के आम गुठलियों के दाम।

3) लातों के भूत बातों से नहीं मानते।

4) जिसकी लाठी उसकी भैंस।

____

____

____

____

डॉ. अंजू थाप्पा

आचार्य, हिन्दी विभाग, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,

जम्मू विश्वविद्यालय।

B.A. HINDI	**UNIT-V**	**Lesson No. 14**
COURSE CODE: HI-401		**B.A. Sem-IV**

छन्द– चौपाई, दोहा, सोरठा तथा रोला

14.0 रूपरेखा

141 उद्देश्य

14.2 प्रस्तावना

14.3 छन्द

14.3.1 चौपाई

14.3.2 दोहा

14.3.3 सोरठा

14.3.4 रोला

14.4 निष्कर्ष

14.5 कठिन शब्द

14.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

14.1 उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन उपरान्त आप–

– छन्द के अर्थ को समझ सकेंगे।

– छन्दों के वर्गीकरण का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

– प्रमुख चार छन्दों–चौपाई, दोहा, सरोठा और रोला को पूर्ण रूप से समझ पाएंगे।

14.2 प्रस्तावना

जिस रचना में मात्राओं एवं वर्णों की सीमा का ध्यान रखा जाता है, उसे छन्द कहते हैं। सामान्यतः ऐसी रचना जिसमें यति, गति, चरण या पाद, दल, मात्रा, गण इत्यादि के नियमों का पालन किया जाता है, उसे छंद कहते हैं। लौकिक, साहित्य के अन्तर्गत आचार्य 'पिंगल' छन्द शास्त्र के प्रवर्तक आचार्य माने जाते हैं तथा इनके द्वारा रचित 'छन्द : सूत्र' रचना छन्द शास्त्र की सर्वप्रथम रचना मानी जाती है।

14.3 छन्द– चौपाई, दोहा, सोरठा, रोला

जिस रचना में अक्षरों की निश्चित मात्रा का ध्यान रखा जाता है, उसे छंद कहते हैं। छन्द शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख हमारे आदिग्रंथ ऋग्वेद के दशम (10वें) मण्डल के 90वें सूक्त (पुरुष सूक्त) के नवें मंत्र में प्राप्त होता है।

<u>छन्दों का वर्गीकरण :–</u>

छन्दों को मुख्यतः दो श्रेणियों मे विभाजित किया जाता है।

1. वैदिक छंद 2. लौकिक छंद

2. वैदिक छंद – वेद ग्रंथों के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाले छंद वैदिक छंद कहलाते हैं। ये सात प्रकार के माने जाते है। यथा–

क्र.सं.	छन्द का नाम	कुल चरण	प्रत्येक चरण में वर्णो की सं.	सम्पूर्ण छंद में वर्णो की सं.
1.	गायत्री	तीन/चार	छह/आठ	6 x 4 = 24/8 x 3 = 24
2.	उष्णिक्	चार	सात	7 x 4 = 28
3.	अनुष्टुप्	चार	आठ	8 x 4 = 32
4.	बृहती	चार	नौ	9 x 4 = 36

5.	पंक्ति	चार	दस	10 x 4 = 40
6.	त्रिष्टुप्	चार	ग्यारह	11 x 4 = 44
7.	जगती	चार	बारह	12 x 4 = 48

2. **लौकिक छंद –** लौकिक साहित्य के अन्तर्गत प्रयुक्त होने वाले छंद लौकिक छंद कहलाते हैं । लौकिक छंद भी दो प्रकार के माने जाते है।

1. मात्रिक या जाति छंद 2. वर्णिक या वृत्त छंद

लौकिक छंदो के सम्पूर्ण वर्गीकरण को निम्नानुसार समझा जा सकता है।

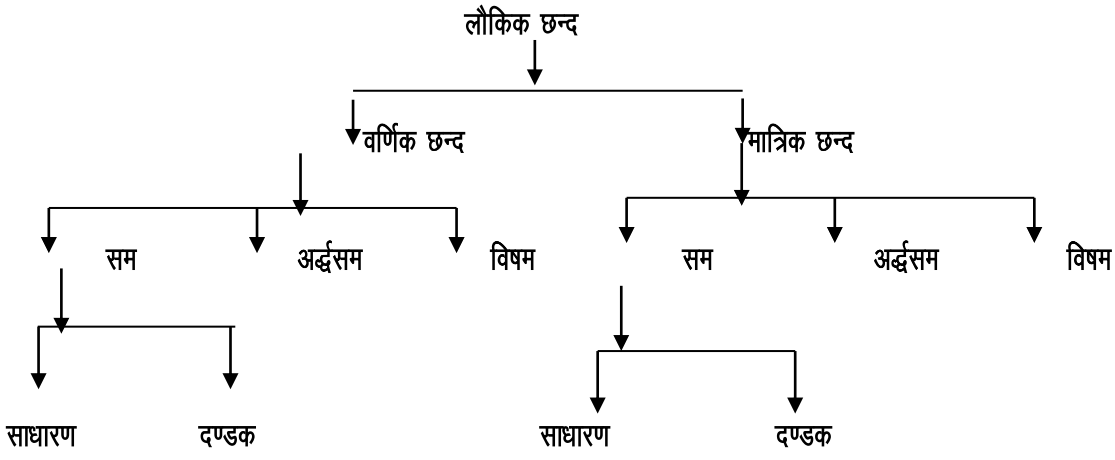

.

(1) **मात्रिक या जाति छंद –** जिस छंद की गणना मात्राओं के आधार पर की जाती है, उसे मात्रिक या जाति छंद कहते हैं, जैसे – आर्या, दोहा, सोरठा,

(2) **वर्णिक या वृत्त छंद** – जिस छंद की गणना वर्णों के आधार पर होती है, उसे वर्णिक या वृत्त छंद कहते है, जैसे शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, इन्द्रवंजा, शार्दूल विक्रीडितम् द्रुतविलम्बित, सवैया इत्यादि। .

(3) **सम छंद –** जिंस छंद के चारों चरणों में समान लक्षण प्राप्त होते है, वह सम छंद कहलाता है, जैसे शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, द्रुतविलम्बित, सवैया, हरिगीतिका इत्यादि।

(4) **अद्र्धसम छंद –** जिस छंद के आधे–आधे चरणों में (प्रायः विषम व सम चरणों में) समान लक्षण प्राप्त होते हैं, वह अद्र्धसम छंद कहलाता है, जैसे– पुष्पिताग्रा, वियोगिनी, दोहा, सोरठा इत्यादि।

(5) **विषम छंद –** जिस छंद के न तो सभी चरण समान होते हैं तथा न ही आधे–आधे चरण समान होते हैं अपितु अलग–अल संख्या में समानता प्राप्त होती है तो वह विषम छंद कहलाता है। जैसे उपजाति, छप्पय, कुण्डलिया इत्यादि।

(6) **साधारण छंद –** वर्णिक छन्दों के अन्तर्गत प्रत्येक चरण में 1 से 26 तक वर्ण संख्या वाले छंद तथा मात्रिक छन्दों के अन्तर्गत प्रत्येक चरण में 1 से 32 तक मात्रा संख्या वाले छंद साधारण छंद कहलाते हैं।

(7) **दण्डक छंद–** वर्णिक छन्दों के अन्तर्गत प्रत्येक चरण में 26 से अधिक वर्णसंख्या वाले छंद एवं मात्रिक छन्दों के अन्तर्गत प्रत्येक चरण में 32 से अधिक मात्रा संख्या वाले छंद दण्डक छंद कहलाते हैं।

छन्दशास्त्र से सम्बन्धित शब्दावली– यह शब्दावली हमें छन्दों की पहचान करवाने में सहायक होती है–

1) **यति– "यतिर्विच्छेद संज्ञिता"**

अर्थात् किसी भी छंद का वाचन करते समय जहाँ विश्राम (विराम) लिया जाता है, उसे यति कहते हैं। छंद में यति को तृतीया विभक्ति के द्वारा व्यक्त किया जाता है।

2) **गति–** किसी भी छंद का वाचन करते समय स्वर में आने वाले आरोह–अवरोह को गति कहते हैं।

3) **पाद या चरण– "ज्ञेयः पादः चतुर्थोऽशः"**

अर्थात् प्रत्येक छंद का चतुर्थ भाग पाद या चरण कहलाता है। इस आधार पर एक छंद में प्रायः चार चरण होते हैं।

4) **दल–** किसी छंद को लिखते समय जब एक ही पंक्ति में एक से अधिक चरण लिख दिये जाते हैं तो उस पूरी पंक्ति को दल कहा जाता है। यथा–

"काव्यशास्त्र विनोदेन कालो गच्छति धीमताम्

व्यसनेन का मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा"

इस श्लोक में कुल चार–चरण एवं दो दल प्रयुक्त हुए हैं।

5) **मात्रा**– किसी भी स्वर के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहते हैं। छंद शास्त्र में दो तरह की मात्राएँ प्रयुक्त होती हैं–

1. लघु मात्रा – प्रतीक– खड़ी पाई (।), संख्या – एक
2. गुरु मात्रा – प्रतीक– वक्र रेखा (ऽ), संख्या – दो

मात्रा निर्धारण के नियम –

1. मात्रा सदैव स्वर वर्णों पर ही प्रयुक्त होती है। व्यंजन वर्ण पर कभी भी मात्रा का प्रयोग नहीं किया जाता है।
2. ह्रस्व स्वरों (अ, इ, उ, ऋ, लृ) के साथ सदैव लघु मात्रा एवं दीर्घ स्वरों (आ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ) के साथ सदैव गुरु मात्रा प्रयुक्त होती है।
3. यदि किसी ह्रस्व स्वर के तुरन्त बाद कोई संयुक्ताक्षर/आधा अक्षर/हलन्त वर्ण/विसर्ग लिखा हुआ हो तो ह्रस्व होने पर भी उसके साथ गुरु मात्रा प्रयुक्त होती है।
4. यदि ह्रस्त स्वर के साथ अनुस्वार का प्रयोग हो रहा हो उसे गुरु मात्रिक माना जाता है एवं ह्रस्व स्वर के साथ अनुनासिक स्वर (चन्द्र बिन्दु) का प्रयोग हो रहा हो तो उसे लघु मात्रिक ही माना जाता है।
5. दीघ्र स्वरों के साथ अनुस्वार/अनुनासिक दोनों ही स्थितियों में गुरु मात्रा प्रयुक्त होती है।
6. प्रत्येक चरण के अन्तिम वर्ण को छंद की आवश्यकतानुसार विकल्प से लघु/गुरु माना जा सकता है। संस्कृत साहित्य में चरण के अन्तिम वर्ण को प्रायः गुरु ही माना जाता है, परन्तु हिन्दी में ऐसा नहीं होता है। जैसे–

   त्वमेव माता च पिता त्वमेव।

   ।ऽ। ऽ ऽ । । ऽ ।ऽऽ

   स्वागतम्, सामान्यतः, शिक्षकः, हंसी

   ऽ। ऽ ऽ ऽ ।ऽ ऽ। ऽ ऽ ऽ

   अन्यमनस्कः, एकता, प्रकृतिः, दारिद्र्यम्

   ऽ ।। ऽ ऽ ऽ। ऽ ।। ऽ ऽ ऽ ऽ

7. गण – तीन वर्णों के व्यवस्थित समूह को गण कहा जाता है। छन्दशास्त्र में कुल आठ गण माने जाते हैं। गण निर्धारण के लिए निम्न सूत्र प्रयुक्त होता है।

   संस्कृत – **"यमाताराजभानसलगम्"**

   ।ऽ ऽ ऽ । ऽ। ।। ऽ

हिन्दी– **"यमाताराजभानसलगा"**

। ऽऽ ऽ । ऽ।। । ऽ

यथा–

क्र.स.	**गण का नाम**	**स्वरूप**	**अन्य नाम**	**उदाहरण**	**शुभ/अशुभ**
1.	यगण(यमाता)	। ऽ ऽ	आदिलघु	यशोदा	शुभ
2.	मगण(मातारा)	ऽ ऽ ऽ	सर्वगुरु	माताश्री	शुभ
3.	तगण(ताराज)	ऽ ऽ ।	अन्तलघु	तालाब	अशुभ
4.	रगण(राजभा)	ऽ। ऽ	मध्य लघु	रागिनी	अशुभ
5.	जगण(जभान)	। ऽ ।	मध्य गुरु	जहाज	अशुभ
6.	भगण(भानस)	ऽ । ।	आदि गुरु	भारत	शुभ
7.	नगण(नसल)	। । ।	सर्प लघु	नगर	शुभ
8.	सगण(सलगा)	। । ऽ	अन्तगुरु	सरिता	अशुभ

नोटः– गण की रचना चरण के आरम्भ से शुरू करते हैं। अन्त में तीन का समूह नहीं बनने की स्थिति में शेष वर्णों को स्थिति अनुसाद 'लघु' या 'गुरु' मान लिया जाता है। जैसे–

कृषक् देवता, यादव, अशिक्षा, मंदिरम्

।। । ऽ। ऽ ऽ। । । ऽ ऽ ऽ । ऽ

न. र. भ. य. र.

प्रमुख छन्द

14.3.1 चौपाई छन्द

लक्षण

1. यह मात्रिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती है।
3. प्रत्येक चरण के अन्त में जगण या तगण आना वर्जित माना जाता है।
4. यदि प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।
5. तुक सदैव पहले चरण की दूसरे चरण के साथ व तीसरे की चौथे चरण के साथ मिलती है।

उदाहरण :–

1. **धीरज धरम मित्र अरु नारी।**

ऽ ।। ।।। ऽ। ।। ऽऽ – 16 मात्राएँ

आपद काल परखिए चारी।।

ऽ।। ऽ। ।।। ऽ ऽ ऽ – 16 मात्राएँ

2. **जय हनुमान ज्ञान गुन सागर**

।। ।।ऽ। ऽ। ।। ऽ।। – 16 मात्राएँ

जय कपीश तिहुँ लोक उजागर।

|| |S| || S| |S || – 16 मात्राएँ

राम दूत अतुलित बल धामा,

S| S| |||| || SS – 16 मात्राएँ

अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।।

S| | S| ||||| SS – 16 मात्राएँ

14.3.2 दोहा छंद

लक्षण :–

1. यह अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
2. इसमें विषम (पहले व तीसरे) चरणों में 13–13 मात्राएँ तथा सम (दूसरे व चौथे) चरणों में 11–11 मात्राएँ होती हैं।
3. इसके विषम चरणों के आदि में जगण आना वर्जित माना जाता है, जबकि सम चरणों के अंत में एक लघु वर्ण आना आवश्यक है।
4. यति प्रत्येक चरण के अन्त में होती है।
5. तुक प्रायः सम चरणों में मिलती है।

उदाहरण :–

1. **रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।**

   <u>|||| S S S| S</u> <u>|| S S ||S|</u>

   13 11

   टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।।

   <u>SS S || S | S</u> <u>| S S| || S|</u>

   13 11

2. **हंसा बगुला एक से, रहत सरोवर माँहि।**

   <u>S S || S || S</u> <u>||| |S|| S|</u>

   13 11

   बगुला ढूँढै माछरी, हंसा मोती खाँहि।।

   <u>|| S SS S| S</u> <u>S S S S S|</u>

   13 11

14.3.3 सोरठा छंद

लक्षण–

1. यह अर्द्धसम मात्रिक छंद होता है।
2. यह दोहा छंद के विपरीत लक्षणों वाला छंद माना जाता है।
3. इसके विषय चरणों में 11–11 मात्राएँ तथा सम चरणों में 13–13 मात्राएँ होती है।

4. इसके सम चरणों के आदि में जगण आना वर्जित माना जाता है जबकि विषय चरणों के अंत में एक लघु वर्ण आना आवश्यक है।
5. यति प्रत्येक चरण के अंत में होती है।
6. तुक प्रायः सम चरणों में मिलती है।

उदाहरण–

1. **जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाहि कहि।**

   SI SI IISI II II III I SI II

   11 13

   मंजुल मंगल मूल, वाम अंग फरकन लगे।।

   SII SII SI SI SI IIII IS

   11 13

2. **कपि करि हृदय विचार, दीन्हि मुद्रिका डारि तब।**

   II II III ISI SI SIS SI II

   11 13

   जनु असोक अंगार, लीन्हि हरषि उठिकर गहउ।।

   II ISI SSI SI III IIII III

   11 13

3. **सुनि कैवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।**

   II SII S SI SI ISS IIS

   11 13

   विहँसे करुणा ऐन, लखन जानकी सहित प्रभु।।

   IIS IIS SI III SIS III II

   11 13

14.3.4 रोला छन्द

लक्षण :–

1. यह मात्रिक सम छंद होता है।
2. इसके प्रत्येक चरण में 24 मात्राएँ होती हैं।
3. इसमें यति क्रमशः 11 व 13 मात्राओं पर होती है।
4. इसमें तुक प्रायः दो–दो चरणों में मिलती है।

उदाहरण :–

हे देवी। यह नियम, सृष्टि में सदा अटल है,

S SS II III SI S IS III S

11 13

रह सकता है वही, सुरक्षित जिसमें बल है।

<u>|| ||S S |S</u> <u>|S|| ||S || S</u>

11 13

निर्बल का है नहीं, जगत में कहीं ठिकाना,

<u>S|| S S | S</u> <u>||| S | S | S S</u>

11 13

रक्षा साधन उसे, प्राप्त हों चाहे नाना।।

<u>S S S|| | S</u> <u>S| S SS S S</u>

4.4 निष्कर्ष

उपर्युक्त छन्दों का अध्ययन करने के उपरान्त विद्यार्थी पदों एवं वाक्यों में प्रयुक्त छन्द विधान का सहजता से बोध कर पाएँगे।

4.5 कठिन शब्द

1. यति
2. गति
3. चरण
4. पाद
5. दल
6. मात्रा
7. गण
8. लौकिक
9. ऋग्वेद
10. सूक्त

14.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र1) चौपाई छन्द को सोदाहरण स्पष्ट करें।

____

____

____

____

प्र2) रोला छन्द किसे कहते हैं और इसके क्या लक्षण हैं?

____

____

____

____

प्र3) दोहा छन्द को स्पष्ट करते हुए कोई दो उदहारण दीजिए।

____

____

____

____

प्र4) सोरठा छन्द को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

____

____

____

____

डॉ. अंजू थाप्पा

आचार्य, हिन्दी विभाग, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,

जम्मू विश्वविद्यालय।